वर्ष : 18 अंक: 166 ग्वालियर

गुरुवार 17 जुलाई 2025

पृष्ठः 8 मूल्यः 2 रु.

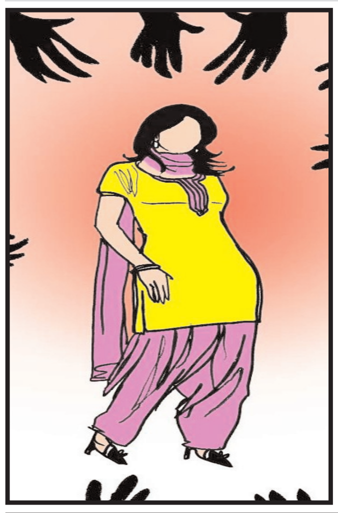

दैनिक

मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, राजस्थान, छतीसगढ़ से प्रकाशित

चम्बल सुर्खी

द्रष्टत्कृष्ट एवं सफल प्रकाशन के 37 वर्ष

निष्पक्ष एवं निर्भीक विचारों का प्रवक्ता

आज का तापमान
अधिकतम 39 डिग्री
न्यूनतम 27 डिग्री

प्राचीन सभ्यताओं के संवाहक हैं भारत और स्पेन, अब औद्योगिक विकास में करेंगे साझेदारी : मुख्यमंत्री

स्पेन के निवेशकों को देंगे वर्ल्ड क्लास सुविधाएं

बेहिचक म.प्र. से जुड़िए और हमारी 18 हाईटेक औद्योगिक नीतियों का लाभ लें

निवेश के लिए बढ़ाया गया हर कदम व्यापार-व्यवसाय में होगा मील का पत्थर साबित

म.प्र. में हर सेक्टर में हैं बड़ी संभावनाएं

मध्यप्रदेश निवेशकों को केपिटल रिटर्न देने में पीछे नहीं रहेगा

मुख्यमंत्री डॉ. यादव का मैड्रिड में इन्वेस्ट इन एमपी बिजनेस फोरम मीट में संबोधन

भोपाल (ए.)।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि भारत और स्पेन दो प्राचीन सभ्यताओं के संवाहक हैं। दोनों देशों ने नैतिक मूल्यों के आधार पर अपनी पुरा संस्कृति को आगे बढ़ाया है। दोनों देश जुड़वा भाईयों की तरह हैं। अब विकास के मामले में भी हम मिलकर आगे बढ़ेंगे। संस्कृति के साथ-साथ तकनीक में भी स्पेन की एक अलग ही पहचान है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव बुधवार को स्पेन की राजधानी मैड्रिड में इन्वेस्ट इन एमपी बिजनेस फोरम मीट को संबो?धित कर रहे थे।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश भारत का सबसे तेजी से विकासशील प्रदेश है। यहां निवेश करना निःसंदेह फायदे का सौदा है। उन्होंने निवेशकों को मध्यप्रदेश की बेजोड़ खूबियां बताते हुए कहा कि यदि आप भारत में निवेश करने की सोच रहे हैं, तो एक बार मध्यप्रदेश अवश्य आइये, मध्यप्रदेश को भूल नहीं पाएंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश में खनिज, पर्यटन, बड़े उद्योग, फार्मास्युटिकल इंडस्ट्री, तकनीकी विकास से जुड़े उद्योग स्थापित करने की अपार संभावनाएं हैं। भारत में एमपी टूरिज्म सबसे तेजी बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश में भरपूर भू-संपदा उपलब्ध है, जिसमें नई तकनीक का इस्तेमाल करने से विकास की अपार संभावनाएं हैं। मध्यप्रदेश, भारत के मध्य क्षेत्र में स्थित है, इसलिए हम लॉजिस्टिक सेक्टर में अग्रणी बनने के लिए तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। अगर आप भारत के किसी और राज्य में भी उद्योग स्थापित करते हैं, तब भी आपको मध्यप्रदेश की आवश्यकता जरूर पड़ेगी। मध्यप्रदेश आंतरिक सड़कों, नेशनल हाईवेज, रेल और हवाई मार्ग से देश-विदेश से जुड़ा है। मध्यप्रदेश सभी सेक्टर्स में तेजी से आगे बढ़ने वाला भारत का राज्य बना है। हम अपने देश की अर्थव्यवस्था को गति देने में भी अपनी भूमिका बखूबी निभा रहे हैं। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश में फूड प्रोसेसिंग, सोलर एनर्जी, विंड एनर्जी, एग्री बेस्ड इंडस्ट्री और टेक्सटाईल सेक्टर में बड़ी संभावनाएं हैं। हम सभी सेक्टर्स में यहां आने वाले निवेशकों को वर्ल्ड क्लास सुविधाएं देने की क्षमता रखते हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने निवेशकों से आग्रह किया कि सुरक्षित निवेश के लिए आप बेहिचक मध्यप्रदेश से जुड़िए। हमारी 18 प्रकार की हाईटेक औद्योगिक नीतियों का लाभ लें। मध्यप्रदेश निवेशकों को केपिटल रिटर्न देने में पीछे नहीं रहेगा। उन्होंने बताया कि मध्यप्रदेश की विकासशीलता ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को भी प्रभावित किया है। मध्यप्रदेश में निवेश करने पर भारत सरकार की ओर से भी देशी-विदेशी निवेशकों को कई तरह की रियायतें दी जा रही हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश में मेडिकल कॉलेजेस की संख्या भी तेजी से बढ़ाई जा रही है और नई मेडिकल डिवाईसेस के लिए देशी और विदेशी कंपनियां यहां निवेश कर रही हैं। अब मध्यप्रदेश में मेडिकल टूरिज्म को भी बढ़ावा मिल रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि स्पेन की शांतिप्रियता, सामुदायिक विकास, तकनीक के इस्तेमाल और फुटबॉल प्रेम ने भी यहां की अर्थव्यवस्था को बेहद मजबूत किया है। उन्होंने कहा कि स्पेन आर्थिक व्यापार के मामले में भारत का छठा सबसे बड़ा साझेदार है। वर्तमान में स्पेन के साथ 9.32 बिलियन डॉलर का व्यापार हो रहा है। उन्होंने कहा कि स्पेन के निवेशकों द्वारा मध्यप्रदेश में निवेश के लिए बढ़ाया गया हर एक कदम व्यापार-व्यवसाय के विकास में मील का पत्थर साबित होगा।

कल के हथियारों से आज की जंग नहीं जीत सकतेः CDS बोले- विदेशी टेक्नोलॉजी पर निर्भरता हमें कमजोर बना रही

स्वदेशी एडवांस टेक्नोलॉजी जरूरी

नई दिल्ली (ए.)।

चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (CDS) जनरल अनिल चौहान ने बुधवार को कहा कि हम कल के हथियारों से आज की लड़ाई नहीं जीत सकते। उन्होंने कहा विदेश से इम्पोर्ट की गई टेक्नोलॉजी पर निर्भरता हमारी युद्ध तैयारियां कमजोर करती है। CDS ने कहा कि यह हमें कमजोर बना रही है। ऑपरेशन सिंदूर ने हमें दिखाया कि हमारे लिए स्वदेशी C-UAS (काउंटर-अनमैंड एरियल सिस्टम) यानी एंटी ड्रोन सिस्टम क्यों जरूरी है। हमें अपनी सुरक्षा के लिए इन्वेस्टमेंट करना होगा।

ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान ने अनआर्म्ड ड्रोन्स का इस्तेमाल किया। अधिकतर ड्रोन्स मार गिराए गए। ये हमारे किसी भी मिलिट्री या सिविल इन्फ्रास्ट्रक्चर को कोई नुकसान नहीं पहुंचा सके। CDS ने ये बातें दिल्ली के मानेकशॉ सेंटर में UAV (अनमैंड एरियल व्हीकल) और C-UAS (काउंटर-अनमैंड एरियल सिस्टम) की प्रदर्शनी में कहीं।

CDS बोले- सेना ने ड्रोन्स का क्रांतिकारी इस्तेमाल किया युद्ध में ड्रोन के इस्तेमाल पर जनरल चौहान ने कहा- मुझे लगता है कि ड्रोन्स इवॉल्यूशनरी (विकासवादी) हैं और युद्ध में उनका इस्तेमाल बहुत क्रांतिकारी रहा है। जैसे-जैसे उनकी तैनाती और दायरा बढ़ा, सेना ने क्रांतिकारी तरीके से ड्रोन का इस्तेमाल किया। हमारे लड़े गए कई युद्धों में आपने यह देखा है। उन्होंने कहा- हम इम्पोर्टेड टेक्नोलॉजी पर निर्भर नहीं रह सकते, क्योंकि यह हमारे युद्ध और डिफेंस ऑपरेशन के लिए महत्वपूर्ण हैं।

लद्दाख में मिनी बस खाई में गिरी, 2 की मौतः 8 गंभीर रूप से घायल

नई दिल्ली लद्दाख के कारगिल जिले के गुमरी में बुधवार सुबह मिनी बस खाई में गिर गई। हादसे में 2 यात्रियों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि 8 लोग गंभीर रूप से घायल हुए हैं। अन्य 6 को हल्की चोटें आई हैं। वाहन चालक हादसे में सुरक्षित बच गया है। मिनी बस में 17 यात्री सवार थे और द्रास की ओर जा रही थी, जब अचानक रास्ते में वाहन अनियंत्रित होकर दुर्घटनाग्रस्त हो गया। हादसे की सूचना मिलते ही स्थानीय प्रशासन और राहत टीमें तुरंत मौके पर पहुंचीं और घायलों को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया। अधिकारियों ने बताया कि मामले की जांच शुरू कर दी गई है और हादसे के कारणों का पता लगाने की कोशिश की जा रही है।

बंगालियों से भेदभाव पर ममता का पैदल मार्चः कहा-BJP बंगाली बोलने वालों को परेशान कर रही

सुवेंदु बोले- ये अवैध घुसपैठियों को बचाने की कोशिश

कोलकाता (ए.)।

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बुधवार को भाजपा शासित राज्यों में बंगाली बोलने वाले लोगों के साथ हो रहे कथित उत्पीड़न के खिलाफ विरोध मार्च निकाला। ममता ने कहा कि बंगालियों के प्रति भाजपा के रवैये से मैं शर्मिंदा और निराश हूं। अब से मैंने तय किया है कि मैं बांग्ला में ज्यादा बोलूंगी। अगर आप मुझे डिटेंशन कैंप में रखना चाहते हैं तो रखें। यह रैली कोलकाता के कॉलेज स्क्वायर से धर्मतला के दोरीना क्रॉसिंग तक निकाली गई। इसमें अभिषेक बनर्जी समेत पार्टी के कई बड़े नेता इस रैली में शामिल हुए। कोलकाता के अलावा पार्टी ने राज्य के सभी जिला मुख्यालयों में भी इसी मुद्दे पर विरोध प्रदर्शन किया। यह ऐसे समय पर हो रहा है, जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी राज्य के दौरे पर आने वाले हैं।

ममता बोलीं- अब से ज्यादा से ज्यादा बांग्ला बोलूंगी

CM ममता ने कहा, मैं आपको (बीजेपी) चैलेंज करती हूं कि साबित कीजिए कि बांग्ला बोलने वाले प्रवासी लोग रोहिंग्या मुसलमान हैं। बंगाल के 22 लाख प्रवासी श्रमिक देश के अन्य हिस्सों में काम कर रहे हैं, उनके पास वैध पहचान दस्तावेज हैं। मैं बंगालियों पर अत्याचार बर्दाश्त नहीं करूंगी। भाजपा शासित राज्यों में बांग्ला भाषी लोगों को बांग्लादेशी और विदेशी कहकर प्रताड़ित और जेल और डिटेंशन कैंप में भेजा जा रहा है। क्या

अदालतों में टॉयलेट की कमी पर सुप्रीम कोर्ट नाराजः 20 हाईकोर्ट से 8 हफ्ते में रिपोर्ट मांगी

पुरुष-महिला, दिव्यांग, ट्रांसजेंडर्स के लिए अलग टॉयलेट्स के निर्देश

नई दिल्ली (ए.)।

देश की अदालतों में टॉयलेट जैसी बुनियादी सुविधा की हालत पर सुप्रीम कोर्ट ने सख्त रुख अपनाया है। बुधवार को कोर्ट ने नाराजगी जताई कि देश के 25 में से 20 हाईकोर्ट ने अब तक ये नहीं बताया कि उन्होंने टॉयलेट की सुविधा सुधारने के लिए क्या कदम उठाए हैं? सुप्रीम कोर्ट ने 15 जनवरी 2025 को सभी हाईकोर्ट, राज्य सरकारों और केंद्र शासित प्रदेशों को निर्देश दिया

था कि हर अदालत में पुरुष, महिला, दिव्यांग और ट्रांसजेंडर्स के लिए अलग-अलग टॉयलेट होने चाहिए। उचित स्वच्छता पाना संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत एक मौलिक अधिकार है। जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस आर महादेवन ने आज सुनवाई के दौरान सभी हाईकोर्ट को रिपोर्ट पेश करने के लिए 8 हफ्ते का समय दिया। सुप्रीम कोर्ट ने चेतावनी दी है कि अगर इस बार रिपोर्ट नहीं आई तो हाईकोर्ट के रजिस्ट्रार जनरल को खुद सुप्रीम कोर्ट में हाजिर होना पड़ेगा। यह मामला वकील राजीब कलिता की एक जनहित याचिका से शुरू हुआ, जिसमें उन्होंने अदालतों में टॉयलेट की खराब स्थिति का मुद्दा उठाया है।

राहुल बोले- जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा मिलेः पीएम मोदी को लेटर लिखा

कहा- मानसून सत्र में बिल लाया जाए

नई दिल्ली (ए.)।

लोकसभा में विपक्ष के नेता और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा देने की मांग की है। राहुल ने PM मोदी को लेटर लिखकर कहा कि, संसद के आगामी मानसून सत्र में जम्मू-कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा देने के लिए बिल लाया जाए। राहुल ने अपने लेटर में प्रधानमंत्री मोदी के पुराने दो बयानों का भी जिक्र किया। जब पीएम ने 19 मई 2024 को भुवनेश्वर में और 19 सितंबर 2024 को श्रीनगर की रैली में

जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा दिलाने की बात कही थी। इसके अलावा राहुल ने सरकार से लद्दाख को संविधान की छठी अनुसूची में शामिल करने के लिए कानून लाने का भी अनुरोध किया।

दिल्ली के 5 स्कूलों में बम की धमकीः 3 दिन में 10 स्कूलों और एक कॉलेज को आया धमकी भरा मेल

नई दिल्ली (ए.)।

दिल्ली में बुधवार को लगातार तीसरे दिन ईमेल के जरिए स्कूलों को बम की धमकी दी गई है। धमकी मिलते ही सभी स्कूलों को एहतियातन खाली करा लिया गया। पुलिस ने पूरे इलाके को घेर लिया और बम स्क्वॉड, डॉग स्क्वॉड और फायर ब्रिगेड की मदद से सर्च ऑपरेशन चलाया गया।

फिलहाल अब तक किसी भी स्थान से कोई विस्फोटक या संदिग्ध वस्तु नहीं मिली है, हालांकि, जांच अभी जारी है। जिन स्कूलों को ईमेल मिला उनमें सेंट थॉमस स्कूल (द्वारका), वसंत वैली स्कूल (वसंत कुंज), मदर्स इंटरनेशनल स्कूल (हौज खास), रिचमंड ग्लोबल स्कूल (पश्चिम विहार) और सरदार पटेल विद्यालय (लोदी एस्टेट) शामिल हैं। इसके अलावा दिल्ली यूनिवर्सिटी के सेंट स्टीफन्स कॉलेज को भी धमकी भरा मेल भेजा गया।

महाराष्ट्र विधानसभा में लुंगी-बनियान पहनकर पहुंचे विपक्ष के विधायक

गायकवाड़ ने केंटीन कर्मचारी को थप्पड़ मारा था

शिवसेना MLA के खिलाफ किया प्रदर्शन

मुंबई (ए.)।

महाराष्ट्र विधानसभा के बाहर बुधवार को एक अनोखा विरोध प्रदर्शन देखने को मिला। महाविकास आघाड़ी (MVA) के विधायकों ने 'लुंगी-बनियान' पहनकर प्रदर्शन किया। यह प्रदर्शन शिवसेना (शिंदे गुट) के विधायक संजय गायकवाड़ द्वारा विधायक हॉस्टल की कैंटीन के कर्मचारी से मारपीट के खिलाफ किया गया। शिवसेना (उद्धव गुट) के विधान

परिषद में नेता अंबादास दानवे, एनसीपी (शरद पवार गुट) के विधायक जीतेन्द्र आव्हाड समेत कई विपक्षी नेता इस प्रदर्शन में शामिल हुए। सभी ने अपने पारंपरिक कपड़ों के ऊपर बनियान और तौलिया (लुंगी की तरह) पहनकर 'गुंडा राज' के खिलाफ नारेबाजी की। अंबादास दानवे ने कहा कि जब विधायक कैंटीन में ही मारपीट कर रहे हैं, तो इससे साफ है कि सरकार ऐसे तत्वों को संरक्षण दे रही है। इससे पहले सीएम देवेंद्र फडणवीस और डिप्टी सीएम एकनाथ शिंदे भी विधायक की आलोचना कर चुके हैं। शिवसेना (शिंदे गुट) विधायक संजय गायकवाड़ ने 8 जुलाई को खाने की क्वालिटी सही नहीं मिलने पर मुंबई के आकाशवाणी विधायक गेस्ट हाउस के केंटीन स्टाफ के साथ मारपीट की थी। इसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया था। मामले को लेकर विधायक संजय गायकवाड़ ने कहा- वहां खाने की क्वालिटी अच्छी नहीं थी। मुझे अपने किए पर कोई पछतावा नहीं है।

CM फडणवीस बोले- विधायकों की प्रतिष्ठा धूमिल हुई

महाराष्ट्र विधान परिषद में शिवसेना (UBT) विधायक अनिल परब ने संजय गायकवाड़ के वीडियो का मुद्दा उठाया। उन्होंने सरकार पर राजनीतिक मनमानी का आरोप लगाया। इस पर CM फडणवीस ने 9 जुलाई को सदन में कहा, इस तरह का आचरण सही संदेश नहीं देता। ऐसा व्यवहार अस्वीकार्य है और किसी के लिए भी सम्मानजनक नहीं है।

महाराष्ट्र में महिला ने पुलिस अधिकारियों को हनीट्रैप में फंसायाः रेप के आरोपों की धमकी देकर 40-40 लाख लूटे

बड़े सरकारी अफसर निशाने पर थे

मुंबई (ए.)।

महाराष्ट्र के ठाणे में एक महिला पर हनीट्रैप में फंसाकर करोड़ों रुपए ऐंठने का आरोप लगा है। उसने कई पुलिसवालों दूसरे सरकारी कर्मचारियों को अपना शिकार बनाया है। इंडिया टुडे की रिपोर्ट के मुताबिक, ठाणे के दो बड़े पुलिस अफसर (ष्टक्क) ने इस महिला के खिलाफ शिकायत

दर्ज कराई है। उन्होंने बताया कि महिला ने उन पर झूठे बलात्कार के आरोप लगाने की धमकी देकर उनसे 40-40 लाख रुपए मांगे थे। जब इस मामले की जांच शुरू हुई, तो पता चला कि यह सिर्फ दो अफसरों का मामला नहीं है, कई और सरकारी अधिकारियों को निशाना बनाया गया है। यह महिला पहले भी 2016 में उगाही के एक मामले में पकड़ी गई थी। जांच में सामने आया कि आरोपी महिला खुद को एक जरूरतमंद महिला पुलिसकर्मी या होमगार्ड बताती थी। फिर वह इसी बहाने कई ढ्डक्क अफसरों, एक्साइज के अधिकारियों सहित बड़े सरकारी कर्मचारियों को निशाना बनाती थी। अधिकारियों का कहना है कि अभी कई और मामलों की जांच चल रही है और हो सकता है कि और भी पीड़ित सामने आएं।

पेलेटस बनाने में पराली का होगा उपयोग

शुरूआत में 5-5 हजार टन पराली खरीदेंगे स्थानीय इंडस्ट्रियलिस्ट
कलेक्टर बोले, पराली को जलने से रोकने सभी प्रकार के संसाधन जुटायेंगे

श्योपुर ब्यूरो। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा ने पराली फ्री डिस्ट्रिक्ट बनाने की मुहिम को ओर अधिक गति प्रदान करते हुए आज पराली से पेलेटस बनाने वाले इंडस्ट्रियलिस्ट के साथ बैठक कर इस सीजन-नो पराली के संबंध में विस्तृत कार्य योजना तैयार की गई, इस दौरान सीईओ जिला पंचायत श्री अतेन्द्र सिंह गुर्जर, उप संचालक कृषि श्री जीके पचौरिया, डीपीएम एनआरएलएम श्री सोहनकृष्ण मुदगल, सहायक संचालक उद्योग श्री शुभम अग्निहोत्री सहित स्थानीय उद्यमी एवं अन्य अधिकारी उपस्थित थे। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा ने जिले में संचालित पराली आधारित उद्योगों के संचालको से चर्चा करते हुए कहा कि अपने-अपने स्तर पर पंजाब से बेलर मशीन उपलब्ध कराने के प्रयास सुनिश्चित किये जायें। उन्होने कहा कि शुरूआत में 5-5 हजार टन पराली स्थानीय इंडस्ट्रियलिस्ट खरीदेंगे, जिसका दो रूपये किलो के हिसाब से भुगतान भी देय होगा। उन्होने कहा कि पेलेटस बनाने में पराली का उपयोग करने वाले उद्योगों के लिए यह एक अच्छा अवसर है, जिले में धान के रकबे को दृष्टिगत रखते हुए प्रचुर मात्रा में पराली की उपलब्धता है। इस वेस्ट मटेरियल को प्रोसेसिंग के माध्यम से उपयोगी बनाया जा सकता है और पावर प्लांट को सप्लाई किया जा सकता है। उन्होने कहा कि इस संबंध में पंजाब के बेलर संचालको से ही पूर्व में ही चर्चा कर ली जाये तथा धान कटने के समय ही कम से कम 100 बेलर की जिले में उपलब्धता सुनिश्चित कर ली जायें। इसके साथ ही उन्होने एनआरएलएम के अधिकारियों को निर्देश दिये कि कम से कम 100 स्वसहायता समूहों को शासन की 80 प्रतिशत अनुदान योजना के तहत बेलर उपलब्ध कराने की प्रक्रिया की जायें। इस अवसर पर उन्होने कृषि विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिये कि ग्रामवार कृषकों की लिस्ट पूर्व से ही तैयार कर रखी जाये तथा समय आने पर पराली काटने का कार्य 15 दिन की समय सीमा में किया जायें। इस अवसर पर पराली आधारित उद्योग से जुडे संचालको ने बताया कि जिले में आधा दर्जन के लगभग इंडस्ट्रिज संचालित है, जो पेलेटस और ब्रेकेट बनाने का कार्य कर रहे है। उन्होने जानकारी दी कि धान की पराली से पेलेटस बनाये जायेंगे, जिनकी डिमांड पावर प्लांट के लिए होती है। उन्होने यह भी सहमति व्यक्त की कि वे शुरूआत में सभी कम से कम 5-5 हजार टन पराली का क्रय करेंगे, इसके उपरांत और पराली खरीदेंगे।

मतदान अधिकारियों का प्रशिक्षण आयोजित

श्योपुर ब्यूरो। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अर्पित वर्मा के मार्गदर्शन में एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी तथा नोडल अधिकारी प्रशिक्षण श्री अतेन्द्र सिंह गुर्जर के निर्देशन में पंचायतों के उप निर्वाचन अंतर्गत नियुक्त किये गये पीठासीन एवं मतदान अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस अवसर पर सीईओ जनपद श्री एसएस भटनागर, प्रशिक्षण प्रभारी श्री राजकुमार पाराशर एवं मास्टर ट्रेनर्स उपस्थित थे। शासकीय पीजी कॉलेज श्योपुर में आयोजित प्रशिक्षण के दौरान पीठासीन अधिकारी, मतदान अधिकारी क्रमांक 1, 2 एवं 3 को मास्टर ट्रेनर श्री रमेश भारद्वाज, श्री विपिन विहारी शर्मा, श्रीमती निशा वर्मा, श्री खेमराज आर्य, श्री सुशील दुबे, श्री नंद बिहारी शर्मा द्वारा सरपंच पद अंतर्गत मतदान प्रक्रिया सहित ईव्हीएम मशीन के संचालन तथा निर्वाचन संबंधी प्रपत्रों को भरने आदि का प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

दस्तक अभियान 22 जुलाई से 16 सितंबर तक

स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को दिया जा रहा है प्रशिक्षण

श्योपुर ब्यूरो। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा के मार्गदर्शन में 22 जुलाई से 16 सितंबर तक दस्तक अभियान चलाया जायेगा। प्रथम चरण के इस अभियान में 7 प्रकार की स्वास्थ्य सेवायें प्रदान की जायेंगी। इस संबंध में सामुदायिक स्तर पर अभियान के बेहतर क्रियान्वयन तथा स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के उद्देश्य से स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। जिला टीकाकरण अधिकारी डॉ. मुकेश मीणा, डीसीएम श्री अमित श्रीवास, स्वास्थ्य विभाग के मीडिया अधिकारी श्री आरबी शाक्य द्वारा स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण के दौरान बताया गया कि समस्त स्वास्थ्य केन्द्रों एवं आंगनवाडी केन्द्रों पर ओआरएस -जिंक कॉर्नर बनाया जायें, जहां उपचार संबंधी प्रोटोकॉल चस्पा कर बच्चों में बाल्यकाल में होने वाली बीमारियों की रोकथाम हेतु सेवायें दी जावेगीं तथा केन्द्र पर स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित छूटे हुए बच्चों के घर भेंट कर मॉपअप के रूप में सेवायें प्रदान की जायेगी। जिला टीकाकरण अधिकारी डॉ मुकेश मीणा ने जानकारी दी कि बच्चों में निमोनिया, डायरिया, एनीमिया आदि बीमारियों की रोकथाम एवं पूर्ण प्रबंधन के लिए दस्तक अभियान चलाया जा रहा है। इसके तहत उच्च जोखिमता वाले नवजात एवं शिशुओं का चिन्हिकन करना, 6 माह से 5 वर्ष तक के बच्चों में एनीमिया की जांच करना, 9 माह से 5 वर्ष तक के समस्त बच्चों को आयु अनुरूप विटामिन ए पिलाना, 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों में शैशव एवं बाल्यकालीन निमोनिया व डायरिया की त्वरित पहचान करना, 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों में बाल्यकालीन दस्त रोग नियंत्रण करना एवं समस्त बच्चों को ओआरएस एवं जिंक टेबलेट प्रदाय करना आदि सेवायें प्रदाय कर रोगों की रोकथाम प्रबंधन करना है।

स्कूल वाहन सहित दो मैजिक वाहन जब्त

श्योपुर ब्यूरो। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा के मार्गदर्शन में परिवहन विभाग श्योपुर द्वारा यात्री बसों एवं अन्य वाहनों की चैकिंग के दौरान स्कूल वाहन सहित दो मैजिक वाहनों का जब्त कर परिवहन कार्यालय परिसर में रखवाया गया है। जिला परिवहन अधिकारी श्रीमती रंजना कुशवाह ने बताया कि श्योपुर-बडौदा एवं श्योपुर-खातौली मार्ग पर स्कूल बस एवं अन्य वाहनों की चैकिंग की गई, इस दौरान 15 वाहनों के दस्तावेज चैक किये गये, जिसमें से दस्तावेजो में कमी पाये जाने पर दो मैजिक वाहन एवं एक स्कूल बस को जब्त करने की कार्यवाही की गई है।

0.8 मिली मीटर औसत वर्षा दर्ज

श्योपुर ब्यूरो। श्योपुर जिले में 16 जुलाई को 0.8 मिली मीटर औसत वर्षा दर्ज की गई है। अधीक्षक भू-अभिलेख द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार दिनांक 16 जुलाई को श्योपुर, बडौदा, विजयपुर एवं वीरपुर में बारिश नही हुई, जबकि कराहल में 4 मिली मीटर वर्षा दर्ज की गई है। इस वर्ष दिनांक 01 जून 2025 से अभी तक जिले में कुल 677.66 मिली मीटर औसत वर्षा दर्ज की गई है। गत वर्ष इस अवधि तक 336.2 मिली मीटर औसत वर्षा दर्ज की गई थी। जिले की औसत की वर्षा 822 मिली मीटर है।

सीएम हेल्पलाइन में सख्ती, दो सचिव निलंबित

7 उपयंत्रियों एवं 3 एडीईओ, 13 पंचायतों के सचिव, जीआरएस को नोटिस जारी

श्योपुर ब्यूरो। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा द्वारा सीएम हेल्पलाइन के निराकरण को लेकर प्रतिदिन समीक्षा की जा रही है तथा सभी को निर्देश दिये गये है कि सीएम हेल्पलाइन का निराकरण तत्परतापूर्वक गंभीरता से किया जायें। इसी क्रम में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री अतेन्द्र सिंह गुर्जर द्वारा सीएम हेल्पलाइन शिकायतों के निराकरण में रूचि नही लेने एवं कार्यो में लापरवाही के चलते जहां दो पंचायत सचिवों के विरूद्ध निलंबन की कार्यवाही की गई है, वही जनपद पंचायतों के 7 उपयंत्रियों, 3 एडीईओ सहित 13 पंचायतों के सचिव और ग्राम रोजगार सहायको को कारण बताओं नोटिस जारी किये गये है। जारी आदेश के अनुसार जनपद पंचायत विजयपुर अंतर्गत ग्राम पंचायत गोहर के सचिव श्री सोबरन कुशवाह तथा ग्राम पंचायत जाखेर के पंचायत सचिव श्री राजेश जादौन को शासकीय कार्यो में लापरवाही तथा सीएम हेल्पलाइन में रूचि नही लेने के चलते निलंबित किया गया है। निलंबन अवधि में दोनो सचिवों का मुख्यालय जनपद पंचायत विजयपुर किया गया है। इसी प्रकार सीएम हेल्पलाइन में शिकायतों के निराकरण नही करने पर जनपद पंचायत कराहल के उपयंत्री श्री अजीत गिरी, जनपद पंचायत श्योपुर के श्री दीपक धाकड एवं श्री प्रेमनारायण राठौर, जनपद पंचायत विजयपुर के श्री रामेश्वर गुप्ता, श्री रामनिवास धाकड, श्री शरद उच्चारिया एवं श्रीमती प्रियंका जादौन, सहायक विकास विस्तार अधिकारी जनपद श्योपुर श्री अमन शिवहरे, एडीईओ विजयपुर श्री अभिनंदन भदौरिया एवं श्री देवेन्द्र प्रजापति को कारण बताओ नोटिस दिये गये है। इसी प्रकार जनपद पंचायत विजयपुर के ग्राम पंचायत पार्वती बडौदा, गसवानी, गढी, वीरपुर, रघुनाथपुर, देवरी, लाडपुरा, इकलौद, फरारा, सहसराम, कींजरी, आरोदा एवं मैदावली के पंचायत सचिवों तथा जीआरएस को नोटिस जारी किये गये है।

पंचायत उप निर्वाचन के तहत कार्यपालिक एवं सेक्टर मजिस्ट्रेट नियुक्त

श्योपुर ब्यूरो। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अर्पित वर्मा द्वारा श्योपुर जिले में पंचायत उप निर्वाचन को दृष्टिगत रखते हुए कार्यपालिक एवं सेक्टर मजिस्ट्रेट नियुक्त किये गये है। उप निर्वाचन के तहत जिले की तीन पंचायतों में सरपंच पद पर 22 जुलाई को मतदान की प्रक्रिया संपन्न कराई जायेगी। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अर्पित वर्मा द्वारा उप निर्वाचन के तहत 22 जुलाई को मतदान शांतिपूर्ण और निर्विघ्न संपन्न कराने के उद्देश्य से नायब तहसीलदार श्रीमती रजनी बघेल को दलारना कलां, नायब तहसीलदार श्री नरेन्द्र जैन को मोरावन तथा नायब तहसीलदार श्री दर्शनलाल जाटव को जाखदा पंचायत के लिए कार्यपालिक मजिस्ट्रेट के रूप में नियुक्त किया गया है। प्रभारी तहसीलदार वीरपुर श्री नरेश रायपुरिया रिजर्व में रहेंगे। इसी प्रकार पंचायत उप निर्वाचन के लिए सेक्टर मजिस्ट्रेट भी बनाये गये है, दलारना कला के लिए ईई जल संसाधन श्री चैतन्य चौहान, मोरावन के लिए मत्स्य अधिकारी श्री बीपी झसिया, जाखदा के लिए उप संचालक पशु चिकित्सा डॉ राम कुमार त्यागी को सेक्टर मजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया है। कार्यपालन यंत्री आरईएस श्री रामअवतार अगरैया रिजर्व में रहेंगे।

स्वच्छता पखवाड़ा के अर्न्तगत प्रथम दिन स्वच्छता की शपथ दिलाई

श्योपुर ब्यूरो। कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय भारत सरकार द्वारा प्रायोजित जन शिक्षण संस्थान श्योपुर द्वारा 16 जुलाई से 31 जुलाई तक विभिन्न गतिविधियो के माध्यम से स्वच्छता पखवाड़े का आयोजन किया जा रहा है, इसी क्रम में आज प्रथम दिवस जेएसएस केपस श्योपुर में बच्चों को स्वच्छता की शपथ दिलाई। इस अवसर पर श्री अजय सक्सैना, सुश्री कुसुम जादौन, सुश्री प्रीति भार्गव, श्री गोविन्द शिवहरे, श्री विकास जोशी आदि उपस्थित रहें।

रुद्राक्ष का धार्मिक महत्व के साथ वैज्ञानिक महत्व भी होता हैं : आचार्य पं आशीष

मेहगांव। मेहगांव नगर के खेड़ापति हनुमान दरबार पर आयोजित 21 दिवसीय शिवमहापुराण का पंचम दिवस की कथा में कथा वक्ता आचार्य आशीष शास्त्री जी ने रुद्राक्ष एवं त्रिकुंड तिलक के महत्व के शिव पूजा पद्धति का वर्णन करते हुए बताया सावन माह एक आध्यात्मिक माह हे और इस माह हर नर और नारी को भगवान शिव की पूजा करनी चाहिए भगवान शिव के पूजन के समय मनु मृति ग्रन्थ के अनुसार पुरुष को गले में सुवाफ़ी डाल कर एवं माता को सिर ढक कर पूजा करनी चाहिए इसी के सभी मनुष्यों को रुद्राक्ष गले में धारण करना चाहिए क्योंकि रुद्राक्ष की भगवान शिव के आंसुओं से उत्पति हुई है जो भगवान शिव को अधिक प्रिय हे इसे सावन में धारण करने से भगवान शिव प्रसन्न होते हे रुद्राक्ष का धार्मिक महत्व के साथ वैज्ञानिक महत्व भी है जो मनुष्य रुद्राक्ष को गले में हृदय के पास धारण करता हे उससे हृदय रोग से मुक्ति प्राप्त होती है कथा आयोजक श्री श्री 1008 शांति दास जी महाराज के द्वारा निरन्तर कई वर्षों से श्रावण मास में कथा का आयोजन कराया जा रहा है।

आईटी 2.0 एप्लिकेशन का रोलआउट- डिजिटल इंडिया की ओर डाक विभाग का मजबूत कदम

22 जुलाई से मुरैना, भिंड और श्योपुर जिले में लागू होगी नई प्रणाली

श्योपुर ब्यूरो। डाक सेवाओं को स्मार्ट, कुशल और भविष्य के अनुरूप बनाने के उद्देश्य से डाक विभाग ने आईटी 2.0 एप्लिकेशन की शुरुआत का निर्णय लिया है। यह डिजिटल ट्रांस्फॉर्मेशन की दिशा में एक बड़ा कदम माना जा रहा है। आगामी 22 जुलाई 2025 से मुरैना, भिंड और श्योपुर जिलों के सभी डाकघरों में यह अत्याधुनिक एप्लिकेशन लागू की जाएगी। डाक विभाग ने बताया कि इस परिवर्तनकारी पहल के अंतर्गत उपभोक्ताओं को बेहतर सेवा अनुभव, त्वरित लेनदेन और सरल इंटरफेस उपलब्ध कराया जाएगा। यह एप्लिकेशन आधुनिक तकनीक से युक्त है और उपभोक्ता-केंद्रित सेवाओं के लिए डिज़ाइन की गई है। इस डिजिटल बदलाव को सुचारू रूप से लागू करने के लिए 21 जुलाई 2025 को सिस्टम डाउनटाइम रखा गया है, जिसके दौरान डाकघरों में किसी भी प्रकार का सार्वजनिक लेनदेन नहीं किया जाएगा। यह अस्थायी अवकाश डेटा माइग्रेशन, सिस्टम सत्यापन और आवश्यक तकनीकी कॉन्फ़िगरेशन के लिए आवश्यक है। डाक विभाग ने सभी ग्राहकों से अनुरोध किया है कि वे अपने जरूरी डाक-संबंधी कार्य 21 जुलाई से पहले ही संपन्न कर लें ताकि किसी प्रकार की असुविधा से बचा जा सके। विभाग ने असुविधा के लिए खेद व्यक्त करते हुए यह आश्वासन दिया है कि इस परिवर्तन के बाद सभी नागरिकों को पहले से अधिक सशक्त, डिजिटल और त्वरित सेवाएं प्राप्त होंगी। आईटी 2.0 एप्लिकेशन डाक विभाग की डिजिटल उत्कृष्टता और राष्ट्र निर्माण में सहभागिता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो न केवल विभागीय कार्यप्रणाली को आधुनिक बनाएगा, बल्कि उपभोक्ताओं को भी तकनीक से जोड़ते हुए सेवा अनुभव को नई ऊंचाइयों तक ले जाएगा।

नशा मुक्त श्योपुर बनाने शपथ ग्रहण

श्योपुर ब्यूरो। मध्यप्रदेश पुलिस द्वारा नशे के खिलाफ प्रदेशभर में 15 से 30 जुलाई तक विशेष जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है, इसी क्रम में आज नगरपालिका परिषद श्योपुर में नशामुक्त श्योपुर बनाने के लिए अपने योगदान और सहयोग प्रदान करने के उद्देश्य से शपथ ली गई। इस अवसर पर मुख्य नगर पालिका अधिकारी श्री राधेरमन यादव, श्री आदित्य चौहान, श्री ओम आर्य, श्री सत्यभानु जाटव, श्री सुनील दंडोतिया, श्री अरविंद पाराशर, श्री ओमवीर सिंह, श्रीमती शाहिदा परवीन, श्री जितेंद्र राव सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी मौजूद रहे। नशामुक्त मध्यप्रदेश बनाने के दृष्टिगत समाज में नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूकता फैलाने और युवाओं को नशे से दूर रहने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से अभियान चलाया जा रहा है।

शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान भिण्ड द्वारा आयोजित प्लेसमेंट ड्राइव 17 एवं 30 जुलाई को प्रशिक्षणार्थियों हेतु सुनहरा अवसर

भिण्ड ब्यूरो। प्राचार्य शासकीय आईटीआई भिण्ड ने बताया है कि शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान भिण्ड में प्रशिक्षणरत एवं उत्तीर्ण प्रशिक्षणार्थियों के लिए दो प्रतिष्ठित कंपनियों द्वारा विशेष अप्रेंटिसशिप ड्राइव का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें दिनांक 17 जुलाई 2025 को शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था भिण्ड में महिंद्रा एण्ड महिंद्रा लिमिटेड जयपुर द्वारा आई.टी.आई. उत्तीर्ण (फिटर, मोटर मैकेनिक, डीजल मैकेनिक, टर्नर, मशीनिस्ट इलेक्ट्रीशियन, ट्रैक्टर मैकेनिक) पुरुषध्महिला प्रशिक्षणार्थियों तथा दिनांक 30 जुलाई 2025 को शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था भिण्ड में सैमसंग डिस्प्ले नोएडा प्रा.लि. नोएडा द्वारा आई.टी.आई. उत्तीर्ण (इलेक्ट्रॉनिक्स, इलेक्ट्रिकल, फिटर, कोपा) केवल पुरुष प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया जाएगा। सभी योग्य एवं इच्छुक प्रशिक्षणार्थियों से अनुरोध है कि उपरोक्त तिथियों को संस्था में उपस्थित होकर इस सुनहरे अवसर का लाभ उठाएं। अधिक जानकारी हेतु नंबर 0755-2525258 पर संपर्क करें।

कलेक्टर की अध्यक्षता में जिला टास्क फोर्स समिति की बैठक संपन्न

दस्तक अभियान 22 जुलाई से 16 सितम्बर 2025 तक चलेगा, लगभग दो लाख ग्यारह हजार बच्चों का होगा परीक्षण

भिण्ड ब्यूरो। कलेक्टर श्री संजीव श्रीवास्तव की अध्यक्षता में आगामी दस्तक अभियान एवं नियमित टीकाकरण कार्यक्रम के सफल संचालन हेतु जिला टास्क फोर्स समिति की बैठक का आयोजन कलेक्टर कार्यालय भिण्ड के सभागार में किया गया। बैठक में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री सुनील दुबे, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. जे.एस. यादव, डब्ल्यू.एच.ओ. प्रतिनिधि डॉ. नीरज राजावत, जिला स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. आलोक शर्मा, जिला स्वास्थ्य अधिकारी-2 डॉ. डी.के. शर्मा, जिला क्षय अधिकारी डॉ. देवेश शर्मा, जिला टीकाकरण अधिकारी डॉ. गौरव भटनागर, जिला कार्यक्रम प्रबंधक डॉ. अवधेश सोनी एवं समस्त जिला व ब्लॉक अधिकारी उपस्थित रहे। कलेक्टर श्री संजीव श्रीवास्तव ने निर्देशित किया की समस्त सम्बंधित विभाग व स्वास्थ्य विभाग द्वारा उक्त अभियान की निरंतर मॉनिटरिंग की जाये तथा दस्तक अभियान के दौरान पाये गये गंभीर कुपोषित बच्चों को उपचार के लिए पोषण पुनर्वास केन्द्रों में भर्ती करवाया जाना सुनिश्चित करें। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. जे. एस. यादव ने बताया कि दस्तक अभियान के प्रथम चरण का आयोजन 22 जुलाई से 16 सितम्बर 2025 तक संचालित किया जायेगा। इस अभियान में लगभग दो लाख ग्यारह हजार बच्चों के स्वास्थ्य से जुड़ी विभिन्न सेवाऐं प्रदान की जायेंगी, जिसमें निमोनिया व गंभीर कुपोषित बच्चों की पहचान व रेफरल एवं प्रबंधन, डिजिटल हिमोग्लोबीनोमीटर द्वारा एनीमिया की स्क्रीनिंग एवं प्रबंधन, दस्त रोग की पहचान एवं ओर.आर.एस. एवं जिंक टेबलेट के सम्बंध में जागरूकता, विटामिन ए की खुराक का सेवन जेसी सेवाऐं प्रमुख हैं। टास्क फोर्स बैठक में दस्तक अभियान की जानकारी देते हुए जिला टीकाकरण अधिकारी डॉ. गौरव भटनागर ने बताया कि बाल एवं शिशु मृत्यु दर में कमी लाने, बाल्यकालीन बीमारियों की रोकथाम, 5 वर्ष तक के बच्चों को स्वास्थ्य एवं पोषण की सेवाऐं देने के उद्देश्य से दस्तक अभियान संचालित किया जायेगा। अभियान के दौरान ए.एन.एम., आशा एवं आंगनवाड़ी कार्यकर्ता द्वारा 5 साल तक के बच्चों के स्वास्थ्य की जांच की जाएगी।

जिसमें स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं द्वारा गृह भ्रमण के दौरान जिंक और ओ.आर.एस. उपलब्ध करवाया जायेगा।

अपर कलेक्टर ने बीएलओ प्रशिक्षण का लिया जायजा

निर्वाचन नामावली त्रुटि रहित बनाने के लिए बीएलओ को दिया गया प्रशिक्षण

भिण्ड ब्यूरो। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी मध्य प्रदेश भोपाल के द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुक्रम में निर्वाचन नामावली त्रुटि रहित बनाने के लिए विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 09-अटेर के बूथ लेबल अधिकारी (बीएलओ) का प्रशिक्षण कार्यक्रम शास. आई.टी.आई. भिण्ड में प्रशिक्षित मास्टर ट्रेनर द्वारा संपादित किया गया। अपर कलेक्टर श्री एल.के. पाण्डेय ने बीएलओ प्रशिक्षण का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने प्रशिक्षण में उपस्थित बीएलओ से निर्वाचक नामावली की अद्यतनीकरण प्रक्रिया की जानकारी लेते हुए विभिन्न तकनीकी पहलुओं से संबंधित शंकाओं का समाधान किया। उक्त प्रशिक्षण में बीएलओ को विधिक प्रावधानों के अनुसार निर्वाचन नामावली तैयार करने संबंधी प्रक्रिया घर-घर जाकर सत्यापन करना, मृत मतदाता, स्थानांतरित मतदाता दोहरी प्रविष्टि जैसी जानकारी एवं विशेष गहन पुनरीक्षण के बारे में सतत अवगत कराया गया तथा राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि बीएलए से समन्वय स्थापित कर फॉर्म 06, 07 एवं 08 को बीएलओ एप आदि के माध्यम से बारीकियां से भलीभांति अवगत कराया गया।

कलेक्टर ने तीन लोक सेवा केन्द्र संचालकों पर 1.5 लाख रूपये का लगाया जुर्माना

लोक सेवा केन्द्रों के संचालन में सुधार नहीं पाये जाने और लगातार शिकायतें प्राप्त होने पर की गई कार्रवाई, लोक सेवा केंद्र का संचालन आरएफपी में वर्णित प्रावधान अनुसार करने दी सख्त चेतावनी

भिण्ड ब्यूरो। कलेक्टर भिण्ड श्री संजीव श्रीवास्तव ने लोक सेवा केन्द्रों के संचालन में सुधार नहीं पाये जाने एवं लोक सेवा केन्द्रों की लगातार प्राप्त हो रही शिकायतों में आरएफपी अनुबंध एवं जारी आदेशध्निर्देशों के क्रम में अनुबंधित ऑपरेटर एवं संचालक लोक सेवा केन्द्र मेहगांव सिद्धगुरु खाद बीज, अनुबंधित ऑपरेटर एवं संचालक लोक सेवा केन्द्र गोहद गुरुकृपा इंटरप्राइजेज, अनुबंधित ऑपरेटर एवं संचालक लोक सेवा केन्द्र आलमपुर नीलेश दुबे पर 50-50 हजार रूपये का अर्थदण्ड लगाया है।

लोक सेवा केन्द्रों की सतत निगरानी एवं आम जन को लोक सेवा गारंटी अधिनियम अनुसार अधिसूचित सेवाओं के लाभ एवं शासन की मंशानुसार सुविधा प्रदान करने हेतु एवं जिला अंतर्गत संचालित लोक सेवा केन्द्रों की निरंतर निगरानी एवं आरएफपी अनुबंध के अनुसार संचलान हेतु राज्य लोक सेवा अभिकरण भोपाल के पत्र दिनांक 20 फरवरी 2025 एवं प्रत्येक टीएल बैठक में समीक्षा हेतु सम्बंधित अनुविभाग में लोक सेवा केंद्र निगरानी समिति के अध्यक्ष सम्बंधित अनुविभागीय अधिकारी राजस्व, तहसीलदार एवं सचिव तथा जिला प्रबंधक लोक सेवा प्रबंधन विभाग को समस्त केन्द्रों के औचक निरीक्षण एवं जांच प्रतिवेदन हेतु कार्यालयीन पत्र दिनांक 14 मई 2025 तथा पत्र दिनांक 11 अप्रैल 2025 द्वारा निर्देशित किया गया था जिस सम्बन्ध में पूर्व में प्राप्त शिकायतों एवं जांच प्रतिवेदन के आधार पर प्रथम चरण में कार्यालयीन आदेश दिनांक 28 मई 2025 द्वारा लोक सेवा केंद्र भिण्ड ग्रामीण, मिहोना एवं अटेर प्रत्येक पर 15 हजार रूपये की शास्ति अधिरोपित की गयी थी एवं द्वितीय चरण में तहसीलदार भिण्ड के जांच प्रतिवेदन पर कार्यालयीन आदेश दिनांक 17 मई 2025 के माध्यम से लोक सेवा केंद्र भिण्ड शहरी पर 40 हजार रूपये की शास्ति अधिरोपित की गयी थी। इसके उपरांत भी लोक सेवा केन्द्रों के संचालन में सुधार नहीं पाया गया एवं औचक निरीक्षण में एवं लोक सेवा केन्द्रों की लगातार प्राप्त हो रही सीएम हेल्पलाइन शिकायतोंध्समक्ष में कार्यालयध्दूरभाष पर प्राप्तध्सोशल मीडिया एवं अन्य स्त्रोत तथा कण्ट्रोल रूम में प्राप्त शिकायतों में आरएफपी अनुबंध एवं जारी आदेशध्निर्देशों के क्रम में तृतीय चरण में अनुबंधित ऑपरेटर एवं संचालक लोक सेवा केन्द्र मेहगांव सिद्धगुरु खाद बीज पर 50 हजार रूपये, अनुबंधित ऑपरेटर एवं संचालक लोक सेवा केन्द्र गोहद गुरुकृपा इंटरप्राइजेज पर 50 हजार रूपये, अनुबंधित ऑपरेटर एवं संचालक लोक सेवा केन्द्र आलमपुर नीलेश दुबे पर 50 हजार रूपये शास्ति अधिरोपित की जाती है।

अनुबंधित ऑपरेटर, लोक सेवा केंद्र संचालकों पर अधिरोपित शास्ति 03 कार्य दिवस में निर्धारित मद में जमा कर चालान की एक प्रति अपर कलेक्टर कार्यालय में प्रस्तुत करना सुनिश्चित करें। उक्त सम्बन्ध में सख्त चेतावनी दी जाति है की लोक सेवा केंद्र का संचालन आरएफपी में वर्णित प्रावधान अनुसार करना सुनिश्चित करें। यह आदेश तत्काल प्रभावशील होगा।

दास्तां खुशियों की, रेखा ने अपने सपने बनाए हकीकत और दूसरों के लिए भी बनीं सुखद भाग्य रेखा

ग्वालियर

रेखा ने केवल अपने सपनों को ही हकीकत नहीं बनाया है, बल्कि वे अपने जैसी अन्य महिलाओं की सुखद भाग्य रेखा बनकर उन सभी के जीवन में खुशहाली के रंग भर रही हैं। रेखा की उम्मीदों को परवान चढ़ाने में प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (पीएमईजीपी) ने महती भूमिका निभाई है। ग्वालियर जिले के घाटीगाँव विकासखंड के दूरस्थ गाँव धुँआ की निवासी श्रीमती रेखा खेमरिया बताती हैं कि मैंने बचपन से ही आत्मनिर्भर बनने की सोच रखी थी। शादी के बाद पति श्री कप्तान सिंह खेमरिया को अपने सपने के बारे में बताया। उनसे मिले प्रोत्साहन की बदौलत मैंने सिलाई मशीन खरीदी और घाटीगाँव क्षेत्र में कपड़े सिलने का काम शुरू किया। मेरे द्वारा सिले गए कपड़ों की क्षेत्र में धीरे-धीरे मांग बढ़ती गई। रेखा कहती हैं इसके बाद हमने अपनी दुकान खोलने की सोची। पर आर्थिक तंगी आड़े आ रही थी। ऐसे विपरीत हालातों में सरकार द्वारा संचालित प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम ने मुझे सहारा दिया। रेखा बताती हैं कि प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के तहत मुझे सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया की घाटीगाँव शाखा से साढ़े 9 लाख रूपए का ऋण-अनुदान मिला। इससे हमने पाँच नई सिलाई मशीन लेकर दुकान खोली। पाँच अन्य महिलाओं को प्रशिक्षण देकर अपनी दुकान पर रख लिया। इससे उनकी भी रोजी-रोटी चलने लगी और मेरे सपने हकीकत बन गए। रेखा एवं उनके पति कप्तान सिंह कारोबार की सफलता से गदगद होकर कहते हैं कि आज हमारी केवल सिलाई की ही दुकान नहीं है, साथ में रेडीमेड गारमेंट व जूतों की दुकान भी जुड़ गई है।

रेखा-कप्तान सिंह दम्पत्ति के दो बेटे हैं। एक बेटा इस साल बारहवीं कक्षा में और दूसरा बेटा कॉलेज में पहुँचा है। कप्तान सिंह कहते हैं कि हम पति-पत्नी ने अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाने की सोच रखी थी, वह अब हम आसानी से पूरा कर पा रहे हैं। उनका कहना है कि हमारे व्यवसाय का वार्षिक टर्नओवर 30 लाख के ऊपर पहुँच गया है। हर माह 17 हजार रूपए की किस्त के रूप में हम नियमित रूप से ऋण अदायगी भी आसानी से कर पा रहे हैं। साथ ही दुकान से हुई कमाई से हमारे परिवार का जीवन स्तर बदल गया है। मौजूदा जुलाई माह के पहले हफ्ते में ग्वालियर में आयोजित हुए समरसता सम्मेलन में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, केन्द्रीय मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया एवं विधानसभा अध्यक्ष श्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने मंच से जब श्रीमती रेखा खेमरिया को सफल उद्यमी के रूप में सम्मानित किया तो कप्तान सिंह भावुक हो गए। वे बोले कि सरकार सही मायने में महिलाओं को स्वावलम्बी बनाकर आर्थिक सशक्तिकरण की नई इबारत लिख रही है।

संभागीय आईटीआई में मनाया गया विश्व कौशल दिवस

ग्वालियर

संभागीय औद्योगिक प्रशिक्षण शाला (आईटीआई) में भी विश्व युवा कौशल दिवस मनाया गया। इस अवसर पर आईटीआई द्वारा तैयार वर्क फोर्स की उपयोगिता और महत्व पर प्रकाश डाला गया। ज्ञात हो मौजूदा साल के लिये मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की पहल पर प्रदेश में एआई (आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस) और डिजिटल कौशल से युवा सशक्तिकरण थीम रखी गई है। यहाँ गोला का मंदिर मुरैना रोड पर स्थित संभागीय आईटीआई में बीते रोज विश्व युवा कौशल दिवस पर आयोजित हुए कार्यक्रम में संस्था के प्राचार्य श्री एम के आर्य ने तकनीकी शिक्षा विभाग के संचालक का संदेश विद्यार्थियों को सुनाया। साथ ही कहा कि आईटीआई में तैयार ट्रेडमेन देश के इन्फ्रास्ट्रक्चर में रीढ़ की हड्डी की तरह काम करते हैं। आईटीआई के सभी ट्रेड महत्वपूर्ण हैं। यहाँ पर तैयार बिना वर्क फोर्स के इन्फ्रास्ट्रक्चर पर कार्य करना असंभव है।

इस अवसर पर प्रशिक्षण प्रभारी श्री एस के कॉल एवं प्रशिक्षण अधीक्षक श्री आर के शर्मा ने भी विचार व्यक्त किए। संचालन प्रशिक्षण अधिकारी श्री विजय ने किया। कार्यक्रम में कौशल उन्नयन पर निबंध एवं गीत प्रतियोगिता भी हुई। साथ ही नशा मुक्ति की प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। इस अवसर पर प्राचार्य श्री आर्य ने दिव्यांग विद्यार्थियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए। इस अवसर पर पौधे भी रोपे गए।

बाल भिक्षावृत्ति में संलग्न मिले तीन बच्चों को पहुँचाया बाल पुनर्वास गृह

जिले में बाल भिक्षावृत्ति उन्मूलन के उद्देश्य से विशेष अभियान जारी

ग्वालियर

बाल भिक्षावृत्ति उन्मूलन के उद्देश्य से ग्वालियर जिले में विशेष अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत बुधवार को कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान के निर्देश पर गई संयुक्त टीम ने शहर के विभिन्न बाजारों व चौराहों पर पहुँचकर भिक्षावृत्ति करने वाले परिवारों को समझाया। साथ ही भिक्षावृत्ति न करने की चेतावनी भी दी। इस दौरान तीन बच्चे बाल भिक्षावृत्ति में संलग्न मिले। इन बच्चों को विधिवत कार्रवाई कर बाल पुनर्वास गृह में आश्रय दिलाया गया। इस अभियान के अंतर्गत होटल तानसेन तिराहा, सिटी सेंटर, गोविंदपुरी चौराहा, मेला ग्राउंड, पिंटो पार्क व चार शहर का नाका क्षेत्र में टीम द्वारा सघन संपर्क कर भिक्षावृत्ति करने वाले परिवारों को समझाइश एवं चेतावनी दी गई।

संयुक्त टीम ने गोविंदपुरी चौराहा पर 9 वर्षीय एक बालक व 10 वर्षीय एक बालिका एवं होटल तानसेन तिराहा गाँधी रोड पर 12 वर्षीय एक बालिका को बाल भिक्षावृत्ति करने से बचाया। इन बच्चों को बाल कल्याण समिति की समक्ष प्रस्तुत किया गया, जहां से उन्हें बालक गृह में पुनर्वास के लिए भर्ती कराया गया है।

इस अभियान में महिला बाल विकास विभाग, श्रम विभाग, विशेष किशोर पुलिस इकाई, नेहरू युवा केंद्र, सेंटर फॉर डेवलपमेंट एनजीओ के सदस्यों ने सक्रियता से भाग लिया। यह अभियान एक अगस्त तक निरंतर जारी रहेगा।

एनएसएटी : नारायण ने लॉन्च किया स्कोलास्टिक एप्टीट्यूड टेस्ट का 20वाँ संस्करण

ग्वालियर।

नारायण शैक्षणिक संस्थान ने एनएसएटी 2025 (नारायण स्कोलास्टिक एप्टीट्यूड टेस्ट) के 20वें संस्करण के शुभारंभ की घोषणा की है। यह परीक्षा देश भर के छात्रों को उनकी शैक्षणिक प्रतिभा के आधार पर पहचान, पोषण और पुरस्कृत करने का एक राष्ट्रीय मंच प्रदान करती है। इस वर्ष की एनएसएटी में 50 करोड़ से अधिक की छात्रवृत्तियाँ और 1 करोड़ से अधिक के नकद पुरस्कार दिए जाएँगे। एनएसएटी 2025 कक्षा 5 से 11वीं तक (विज्ञान स्ट्रीम) के छात्रों के लिए खुला है। यह परीक्षा छात्रों की ज्ञान, तर्कशक्ति और समस्या-समाधान क्षमताओं का मूल्यांकन करती है। यह परीक्षा 300 से अधिक शहरों में आयोजित की जाएगी, जिससे विभिन्न पृष्ठभूमियों के छात्रों को भाग लेने का समान अवसर मिलेगा।

इस परीक्षा को छात्रों की सुविधा के अनुसार ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों प्रारूपों में आयोजित किया जाएगा। परीक्षा की तिथियाँ 5, 12, 19 और 26 अक्टूबर 2025 निर्धारित की गई हैं। पिछले संस्करण में 2.5 लाख से अधिक छात्रों ने भाग लिया था, और इस वर्ष इससे भी अधिक भागीदारी की उम्मीद की जा रही है। नारायण एजुकेशनल इंस्टीट्यूशंस की निदेशक डॉ. पी. सिंधुरा और पी. शरणी ने कहा, एनएसएटी 2025 अब तक का सबसे प्रभावशाली संस्करण होगा। यह परीक्षा न केवल प्रतिभा की पहचान करती है, बल्कि उन्हें 100 प्रतिशत तक की छात्रवृत्ति के माध्यम से सहयोग भी प्रदान करती है। चार दशकों की समृद्ध विरासत के साथ, नारायण संस्थान शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर नए मानक स्थापित कर रहा है। आपके सपने हमारे सपने हैं के मूलमंत्र को साकार करते हुए, संस्थान छात्रों को उनकी शैक्षणिक और व्यक्तिगत सफलता की दिशा में मार्गदर्शन देने के लिए प्रतिबद्ध है।

अमृत हरित महा अभियान के तहत शहर भर में रोपे 11 हजार पौधे

सभापति श्री तोमर ने क्षेत्रीय कार्यालय 21 के अंतर्गत डिवाइडर पर रौपे पौधे

ग्वालियर- शहर हरा भरा रहे इसके लिए अमृत हरित अभियान 2025 के अंतर्गत नगर निगम के सभी 66 वार्डों सहित पार्कों, डिवाइडरों में वृहद स्तर पर 11000 से अधिक पौधों का रोपण किया गया। जिसमें 1000 पौधे आनंद पर्वत पर रोपे गए।

नगर निगम आयुक्त श्री संघ प्रिय के निर्देशानुसार नगर निगम द्वारा अमृत हरित अभियान अंतर्गत पौधारोपण किया जा रहा है। जिसके तहत आज शहर में सामूहिक रूप से पौधरोपण किया गया। सभापति श्री मनोज तोमर द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय 21 के अंतर्गत विभिन्न डिवाइडरों पर पौधारोपण किया। इस अवसर पर क्षेत्राधिकारी श्री सौरभ शाक्य सहित क्षेत्रीय कार्यालय स्टाफ उपस्थित रहा। इसके साथ ही क्षेत्रीय कार्यालय क्रमांक 11 अंतर्गत वार्ड क्रमांक 28 भीम नगर संत रविदास आश्रम परिसर में क्षेत्रीय पार्षद एवं एमआईसी श्रीमती गायत्री सुधीर मंडेलिया, क्षेत्राधिकारी श्री अनिल श्रीवास्तव सहित श्री अशोक सुमन, श्री राजेश तोमर, श्री देवानंद ऐश्वार, श्री असलम खान, श्री विशाल बागरी एवं श्री विजय कुशवाह, श्री कृष्णपाल मेहता एवं समस्त स्टाफ के साथ वृक्षारोपण किया गया। साथ ही क्षेत्रीय कार्यालय 25 वार्ड 66 के अंतर्गत ग्राम बदोरी हाई स्कूल और विभिन्न जगह 490 वृक्षों का पौधा रोपण क्षेत्री पार्षद, सहायक यंत्री श्री राजीव सिंघल, क्षेत्राधिकारी श्री कपिल पटेल, विद्यालय के छात्र आदि उपस्थित रहे। इसके साथ ही पार्क विभाग द्वारा सामाजिक संस्था बजरंग भक्त मंडल के सहयोग से छत्री पार्क, माधवनगर टंकी पार्क एवं वसंत विहार पार्क में 600 पौधों का रोपण किया गया एवं अंकुर ऐप पर फोटो अपलोड करवाए गए। वृक्षारोपण में पार्क विभाग नगर निगम से ग्वालियर पूर्व विधानसभा पर्यवेक्षक श्री सुभाष शाक्य, श्री सुरेंद्र कुशवाह सहित पार्क विभाग के कर्मचारी एवं बजरंग भक्त मंडल से श्री आशीष मंगल, श्री नमन अवस्थी, श्री भरत सासोंडे, श्री पवन गोयल आदि सदस्य उपस्थित थे।

साथ ही सागर ताल चौराहा से बहोड़ापुर चौराहा तक डिवाइडर पर 365 पौधों का आनंदनगर सेवा समिति के सहयोग से पार्क टीम द्वारा पौध रोपण कार्य किया और मानपुर पहाड़ी आवासीय परिसर में 100 पौधों का वृक्षारोपण कार्यक्रम महाकाल सेवा समिति के सहयोग से एवं भगवत सहाय कॉलेज परिसर में विधार्थियो के

अधिकारियों के कार्यों में फेरबदल

ग्वालियर- कार्य सुविधा एवं प्रशासनिक दृष्टि से अधिकारियों के कार्यों में फेरबदल किया गया है। नगर निगम आयुक्त श्री संघ प्रिय द्वारा जारी आदेशानुसार उपयंत्री श्री अभिषेक प्रसाद को अपने वर्तमान कार्यों के साथ साथ क्षेत्राधिकारी सह भवन निरीक्षक क्षेत्र क्रमांक 01 का दायित्व सौंपा गया है। उपयंत्री श्रीमती शिल्पा दिनकर को अपने वर्तमान कार्य से मुक्त करते हुए क्षेत्राधिकारी सह भवन निरीक्षक क्षेत्र क्रमांक 23 का दायित्व सौंपा है। प्रभारी उपयंत्री जल प्रदाय श्री अजय शर्मा को केवल क्षेत्राधिकारी को केवल क्षेत्राधिकारी सह भवन निरीक्षक क्षेत्र क्रमांक 23 के दायित्व से मुक्त करते हुए क्षेत्राधिकारी सह भवन निरीक्षक क्षेत्र क्रमांक 8 (वार्ड 18,19,25) का दायित्व सौंपा गया है। इसके साथ ही श्री राजेश रावत उपयंत्री जनकार्य क्षेत्राधिकारी सह भवन निरीक्षक क्षेत्र क्रमांक 8 (क) वार्ड क्रमांक 19,25 के दायित्व से मुक्त रहेंगे एवं जनकार्य विभाग अंतर्गत अधीक्षण यंत्री जनकार्य के नियंत्रण एवं निर्देशन में कार्य करेगें। साथ ही श्री अंशुमन तोमन विनियमित कर्मी को अपने वर्तमान कार्य से मुक्त करते हुए श्रीमती शिल्पा दिनकर क्षेत्राधिकारी सह भवन निरीक्षक क्षेत्र क्रमांक 23 के सहयोग हेतु पदस्थ किया गया।

जिले में ढूँढ-ढूँढकर कराया जा रहा है फौती नामांतरण प्रकरणों का निराकरण

कलेक्टर श्रीमती चौहान के निर्देश पर ग्राम पंचायतों में हो रहा है बी-1 का वाचन

बी-1 के वाचन के लिये अनुविभाग व पंचायतवार बनाई गई है समय-सारणी

ग्वालियर / जिले के सभी गाँवों में ढूँढ-ढूँढकर फौती नामांतरण प्रकरणों का निराकरण किया जा रहा है। इस सिलसिले में कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान के निर्देश पर जिले की हर ग्राम पंचायत में पटवारियों द्वारा बी-1 का वाचन किया जा रहा है, जिससे गाँववासी बता सकें कि किस-किसके यहाँ फौती नामांतरण होना है। बुधवार को जिले के राजस्व अनुविभाग डबरा, भितरवार व घाटीगाँव के विभिन्न ग्रामों में पटवारियों द्वारा बी-1 का वाचन किया गया। कलेक्टर श्रीमती चौहान ने लंबित शतप्रतिशत फौती नामांतरण प्रकरणों का निराकरण होने तक बी-1 का वाचन जारी रखने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने जिले के सभी अनुविभागीय राजस्व अधिकारियों से ग्राम पंचायतवार बी-1 वाचन के लिये निर्धारित की गई समय-सारणी भी मंगवाई है। साथ ही निर्देश दिए हैं कि सभी अनुविभागीय राजस्व अधिकारी, तहसीलदार व नायब तहसीलदार बी-1 वाचन कार्य का लगातार निरीक्षण करते रहें।

सड़क से भवन निर्माण सामग्री को जप्त कर यातायात को किया सुगम

ग्वालियर- पटेल नगर में भवन निर्माण सामग्री सडक पर डालने से यातायात अवरूद्ध होने पर निर्माण सामग्री जप्त कर यातायात को सुगम बनाया। क्षेत्राधिकारी श्री अनिल श्रीवास्तव ने जानकारी देते हुए बताया कि नगर निगम आयुक्त श्री संघ प्रिय के निर्देशानुसार उपायुक्त मदाखलत श्री सत्यपाल सिंह चौहान के निर्देशन में भवन निर्माण सामग्री सड़क पर डालने वालों पर अभियान चलाकर कार्यवाही की जा रही है। जिसके तहत आज पटेल नगर क्वाटिली रेस्टोरेंट के बगल में निर्माण कार्य का मैटेरियल सड़क पर रख कर यातायात अवरुद्ध किया जा रहा था। उक्त मार्ग पर रखे मैटेरियल को हटाया जाकर सामान जप्त करते हुए मार्ग क्लियर कराया गया।

कायवाही के दौरान मदाखलत निरीक्षक श्री विशाल जाटव एवं मदाखलत अमला मौजूद रहा।

उत्तर मध्य रेलवे

No. JHS/Commercial/e-Auction/25/119 दिनांक : 15.07.2025

ई-नीलामी सूचना

www.ireps.gov.in

North central railways CPRONCR www.ncr.indianrailways.gov.in

उत्तर मध्य रेलवे

ई-टेंडरिंग निविदा सूचना

www.ireps.gov.in

North central railways CPRONCR www.ncr.indianrailways.gov.in

प्रत्येक नागरिक लगाये कम से कम एक-एक पौधा, लें उनके संरक्षण की जिम्मेदारी: कलेक्टर

अमृत हरित महा अभियान अंतर्गत आनंद पर्वत पर रोपे 1000 पौधे

ग्वालियर

अमृत हरित महा अभियान के अंतर्गत आज बुधवार को नगर निगम द्वारा आनंद पर्वत सिरोल पर छायादार एवं फलदार के लगभग 1000 पौधों का रोपण किया गया। इस अवसर पर कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान, नगर निगम आयुक्त श्री संघ प्रिय, अपर आयुक्त श्री विजय राज, दाना पानी टीम के सदस्य श्री राज चड्ढा एवं उनकी टीम, एनसीसी के छात्र-छात्राएं व म्यूज एवं डिवाइन संस्था एवं अन्य समाजसेवी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन सहायक खेल अधिकारी सुश्री विजेता सिंह चौहान द्वारा किया गया। इस अवसर पर सभी को पर्यावरण संरक्षण की शपथ भी दिलाई गई।

पौधारोपण के अवसर पर कलेक्टर श्रीमती रूचिका चौहान ने कहा कि शहर को हरा भरा बनाने के साथ ही शहर की वायु गुणवत्ता के सुधार हेतु हमें अधिक से अधिक पौधारोपण करना है। उन्होंने शहरवासियों से अपील करते हुए कहा कि आपकों जहां भी जगह मिले पौधारोपण करें, शहर का प्रत्येक नागरिक कम से कम एक पौधा अवश्य लगाये तथा उसके संरक्षण की जिम्मेदारी भी ले। आज आनंद पर्वत पर समाजसेवियों के सहयोग से पौधरोपण किया जा रहा है। इसी प्रकार अन्य पर्वतों को भी हरा भरा बनाने के लिए पौधरोपण किया जाएगा।

संपादकीय

निरंकुश नहीं आजादी

कथित सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर एंटी सोशल अभिव्यक्ति के चलते उपजी विभाजनकारी प्रवृत्तियों पर अंकुश की जरूरत बताते हुए देश की शीर्ष अदालत ने आत्म-नियमन की जरूरत बतायी है। दरअसल, जस्टिस बीवी नागरत्ना और जस्टिस के.वी. विश्वनाथन की पीठ, एक व्यक्ति द्वारा दायर याचिका पर विचार कर रही थी, जिस पर धर्म विशेष के देवी-देवताओं के खिलाफ आपत्तिजनक पोस्ट के चलते कई राज्यों में प्राथमिकी दर्ज की गई थी। अदालत का कहना था कि नागरिकों को अभिव्यक्ति की आजादी के अधिकार का मूल्य समझना चाहिए। साथ ही इस अधिकार का इस्तेमाल करते हुए आत्म-संयम बरतना चाहिए। कोर्ट ने चेताया है कि यदि सोशल मीडिया पर विभाजनकारी प्रवृत्तियों पर अंकुश नहीं लगता तो सरकार को हस्तक्षेप करने का मौका मिलता है। जो एक अच्छी स्थिति नहीं होगी। निस्संदेह, समाज में विद्वेष व नफरत फैलाने वाले संदेश समरसता के भारतीय परिवेश के लिये गंभीर चुनौती बने हुए हैं। यही वजह है कि कोर्ट को कहना पड़ा कि वह नियमन के लिये दिशा-निर्देश जारी करने पर विचार कर रही है। दरअसल, अदालत का मानना था कि संविधान के अनुच्छेद 19(2) के तहत मिली आजादी असीमित कदापि नहीं है। यदि उससे सामाजिक समरसता में खलल पड़ता है तो सरकार को दखल देने का मौका मिलता है। जो कि एक लोकतांत्रिक देश के लिये अच्छा संकेत नहीं है। कोई नहीं चाहता कि उसकी अभिव्यक्ति की आजादी को सरकार नियंत्रित करे। सही मायनों में लोगों को समझना चाहिए कि देश की एकता व अखंडता बनाये रखना मौलिक कर्तव्य ही है। अदालत ने इस बाबत सवाल भी किया कि नागरिक स्वयं को संयमित क्यों नहीं कर सकते? कोर्ट का मानना था कि लोग तभी अभिव्यक्ति की आजादी का आनन्द ले सकते हैं जब यह संयमित ढंग से व्यक्त की जाए। शीर्ष अदालत की पीठ का मानना था कि नागरिकों के बीच भाईचारा होना चाहिए, तभी समाज में नफरत से मुकाबला किया जा सकता है। तभी हम गंगा-जमुनी संस्कृति के समाज का निर्माण कर सकते हैं।

वैसे कई राज्यों में स्वतंत्र अभिव्यक्ति के नियमन को लेकर सरकारी कार्रवाई को लेकर भी सवाल उठते रहे हैं। कई जगह विचारों की अभिव्यक्ति व कार्टून आदि बनाने को राजनीतिक दुराग्रह बताते हुए लोगों को गिरफ्तार तक किया गया है। जिसे सत्ताधीशों द्वारा बदले की भावना से की कार्रवाई बताया जाता रहा है। आरोप लगाया जाता रहा है कि सत्तारूढ़ दल की विचारधारा के अनुरूप अमर्यादित अभिव्यक्ति पर कोई एक्शन नहीं लिया जाता। लेकिन दूसरे राज्य में अन्य राजनीतिक दल की सरकार में यही अभिव्यक्ति अपराध बन जाती है। कहा जाता रहा है कि अभिव्यक्ति की आजादी द्वारा किसी मर्यादा को भंग करना घटिया या आपत्तिजनक तो हो सकता है लेकिन इसे अपराध की श्रेणी में नहीं रखा जाना चाहिए। इसे कानून के आलोक में देखा जाना चाहिए। यह निर्विवाद सत्य है कि विभिन्न राजनीतिक दलों व संगठनों द्वारा सोशल मीडिया मंच का जमकर दुरुपयोग किया जाता रहा है। वहीं लोगों का कसूर यह है कि दल विशेष के एजेंडे वाली सामग्री को वे बिना पढ़े, दूसरे लोगों व समूहों में शेयर कर देते हैं। दरअसल,आम नागरिकों को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए कि सोशल मीडिया पर उनका संयमित व्यवहार कैसा होना चाहिए। बहुत से लोगों को यह पता नहीं होता है कि सोशल मीडिया पर शेयर की जा रही सामग्री की कितनी संवेदनशीलता है। कई लोग जाने-अनजाने में ऐसी सामग्री दूसरे व्यक्तियों व समूहों में शेयर कर देते हैं जो समाज विरोधी हो सकती है। दरअसल, वे उसकी मूल सामग्री को बनाने वाले के छिपे एजेंडे को नहीं भांप पाते। कभी-कभी भावावेश में लोग ऐसे कदम उठा देते हैं। निस्संदेह, कोई भी व्यक्ति भावनात्मक दुर्बलताओं से मुक्त नहीं होता, लेकिन फिर भी उसे शेयर की जा रही सामग्री की तार्किकता पर मंथन जरूर करना चाहिए। दरअसल, सोशल मीडिया आज एक ऐसा अस्त्र बन गया है जो जरा सी चूक से घातक साबित हो सकता है। वास्तव में हर नागरिक को इतना सचेत व जागरूक होना जरूरी है कि वह विभिन्न स्त्रोतों से आने वाली सामग्री से जुड़ी मंशा को समझ सके। निस्संदेह, संयमित, तार्किक व सतर्क प्रतिक्रिया से हम अभिव्यक्ति के मौलिक अधिकार का आनन्द ले सकते हैं।

हम भी तो दोषी हैं राधिका की मौत के

जिस दिन राधिका की मां का जन्मदिन था, वह घर की साज-सज्जा कर रही थी। रसोई में खाना पका रही थी, उसी वक्त उसे तीन गोलियां मार दी गईं। एक पिता जिसने अपनी बेटी को टेनिस खेलना सिखाया था, उसे महंगे से महंगे रैकेट लाकर दिए थे, जब उसके कंधे में चोट लग गई, तो राधिका ने टैनिस एकेडमी खोल ली। वह खूब चलने लगी। पता चला कि इससे पिता जब बाहर निकलता, तो आसपास के लोग कहते कि तुम्हारी बेटी तो तुमसे ज्यादा पैसे कमाती है। तुम उसकी कमाई खाते हो।

क्षमा शर्मा

राधिका यादव, सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर बनना चाहती थी। उसने एक म्यूजिक वीडियो भी बनाया था। उसमें इनामुल हक नाम के लड़के ने काम भी किया था। इनामुल हक ने कहा कि मेरी न उससे कोई दोस्ती थी, न ही वीडियो बनाने के दौरान हमारी कोई बातचीत हुई। सवाल यह है कि इन दिनों सोशल मीडिया के जरिए जब तमाम युवा ग्लोबल हो गए हैं। तब कौन किससे बात कर रहा है, इसे कैसे रोका जा सकता है। वह कोई भी हो सकता है-हिंदू, मुसलमान, ईसाई। कैसा समाज बना रहे हैं हम। कहा जा रहा है कि पिता वीडियो बनाने से नाराज था। उसने राधिका से वीडियो डिलीट करने के लिए कहा था, लेकिन उसने मना कर दिया। एक लड़की अगर कुछ करना चाहती है, तो उसकी राह में इतने रोड़े क्यों हैं। खबरों में आ रहा है कि पिता पंद्रह दिनों से सोया नहीं था।

जिस दिन राधिका की मां का जन्मदिन था, वह घर की साज-सज्जा कर रही थी। रसोई में खाना पका रही थी, उसी वक्त उसे तीन गोलियां मार दी गईं। एक पिता जिसने अपनी बेटी को टेनिस खेलना सिखाया था, उसे महंगे से महंगे रैकेट लाकर दिए थे, जब उसके कंधे में चोट लग गई, तो राधिका ने टैनिस एकेडमी खोल ली। वह खूब चलने लगी। पता चला कि इससे पिता जब बाहर निकलता, तो आसपास के लोग कहते कि तुम्हारी बेटी तो तुमसे ज्यादा पैसे कमाती है। तुम उसकी कमाई खाते हो।

यह घटना गुड़गांव के उस पॉश इलाके में हुई, जिसे उत्तर भारत का साइबर सिटी कहा जाता है। चमचमाती इमारतों और बड़े बहुराष्ट्रीय निगमों के दफ्तरों से ये शहर भरा पड़ा है। लेकिन इन सबसे क्या होता है, जब मन में कुछ और चल रहा हो। बेटी की कमाई पिता के लिए इतनी अपमानजनक बने कि उसकी हत्या करनी पड़े। बजाय इसके कि उसकी कमाई और कुछ करने के जज्बे की तारीफ की जाती, गर्व किया जाता, उसे मौत दे दी गई। क्यों भला। जो लड़की राष्ट्रीय स्तर की खिलाड़ी हो, उसे इतनी भी आजादी नहीं कि वह कोई वीडियो बना सके। एकेडमी खोल सके। आखिर जो बातें उसकी तारीफ का कारण बनतीं, वे जान लेने का कारण कैसे बन गईं।

प्रॉपर्टी डीलर का व्यवसाय करने वाले पिता का कहना है कि वह पड़ोसियों के तानों से तंग आ चुका था। उसने राधिका से कहा था कि घर में पैसे की कोई कमी नहीं है, वह एकेडमी बंद कर दे, मगर वह नहीं मानी।

आखिर वह क्यों मानती। इन दिनों कोई भी एकेडमी चलाना आसान बात नहीं है। मात्र तीन महीने की अवधि में ही यदि यह एकेडमी चल निकली और अच्छी आय होने लगी, तो इसमें उस लड़की के कितने प्रयत्न और मेहनत लगी होगी। अफसोस कि जिस पिता ने उसे सपने दिखाना सिखाया था, उन्हें पूरा करने में मदद की थी, उसी ने अपनी बेटी की जान ले ली। उन ताने मारने वालों का तो कुछ नहीं गया। कायदे से तो पुलिस को उन्हें पकड़ना चाहिए। पिता के साथ-साथ राधिका की हत्या में ऐसे लोगों की भी समान भागीदारी है, जिनसे एक पचीस साल की लड़की की सफलता नहीं देखी गई। ईर्ष्या के भाव ने, दूसरों की लड़की पर बिना कारण उंगली उठाए जाने वाली सोच ने एक पूरे परिवार को बर्बाद कर दिया। राधिका की मां पर क्या गुजर रही होगी, जिसने ऐन अपने जन्मदिन पर बेटी को खो दिया। और उसकी जान लेने वाला कोई और नहीं उसका पिता निकला।

इस लेखिका की मां जो आज एक सौ सात वर्ष की होती, उसकी एक बात हमेशा याद रही। वह कहती थी कि तुम कुछ भी करो, दुनिया उसमें खोट निकालेगी। इसलिए दुनिया की परवाह न करके वह करो, जो तुम्हें ठीक लगता है। दरअसल, लड़कियों को यह महामंत्र सीखना चाहिए। यदि स्त्रियों ने दुनिया की परवाह की होती, तो आज वे हर क्षेत्र में सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित न कर रही होतीं। रघुवीर सहाय के शब्दों में-पढ़िए गीता, बनिए सीता, फिर इस सब में लगा पलीता निज घर-बार बसाइए। महान लेखिका महादेवी वर्मा ने भी ऐसा ही बहुत कुछ लिखा है, लेकिन निज घर, बार में भी चैन कहां। कभी ससुराल में मौत, तो कभी अपने ही माता-पिता द्वारा दी गई मौत। हरियाणा के सोनीपत से ही बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ का नारा दिया गया था। इससे बहुत कुछ बदला, लेकिन राधिका की हत्या ने जैसे हिलाकर रख दिया। राधिका का जीवन गया, पिता जेल में सड़ेगा, ऐसे में बाकी परिवार का क्या होगा, मां क्या करेगी, कौन जाने।

लड़कियों को जिन कठिनाइयों का सामना विवाह के बाद करना पड़ता है, वे तो हैं ही। लेकिन अपने परिवार में भी तो उन्हें कोई कम कठिनाइयां नहीं झेलनी पड़तीं। धर्म और विज्ञान का कैसा घालमेल है कि जिस अमीनोसेंटेसिस टैस्ट और अल्ट्रासाउंड को मनुष्य के अंदरूनी रोगों को देखने के लिए बनाया गया था, उसकी मदद लेकर लड़कियों को मारा जाने लगा। अमीनोसेंटेसिस तो फिर भी महंगा टैस्ट था, अल्ट्रासाउंड ने तो इसे और आसान बना दिया। पश्चिमी देशों में इसीलिए भारतीय माता-पिताओं पर शक किया जाता है।

उन्हें यह नहीं बताया जाता कि गर्भ में लड़का है या लड़की। क्योंकि वहां डाक्टर मानते हैं कि भारतीय माता-पिता लड़की होने वाली है, यह पता चलते ही, उससे निजात पाने की कोशिश करते हैं। कई दम्पतियों का कहना है कि यह सुनकर उन्हें बहुत शर्मिंदगी महसूस होती है। क्योंकि अन्य देशों के लोगों को बच्चों का लिंग बता दिया जाता है। फिर लड़की पैदा होते ही मातम मनाना, उसकी शिक्षा में भी भेदभाव, इलाज में भी, जन्मते ही यह उपदेश कि उसे तो पराये घर जाना है, आदि बातें लड़कियों का कैसा मानस बनाती हैं कि वे हर तरह के शोषण को अपना भाग्य मान लेती हैं।

ढीठ पुलों के दौर में अफसरी की फजीहत

अतुल कनक

ष्ठङ्कश्वत्रञ्जद्धस्श्वस्थ्हञ्ज

बरसात के दिन आ गये हैं। बहुत सारी जगह बादल खुलकर बरसे हैं। भारी बारिश को देखकर सड़कों वाले विभाग के साहब के चेहरे पर भी खुशियां नाचने लगी हैं। साहब तो शुरू से मानते हैं कि बरखा आती है तो अपने साथ कई संभावनाएं लेकर आती है। यह उन दिनों की बात है, जब साहब कॉलेज जाने लगे थे। बरखा नाम की एक लड़की से उन दिनों उनकी आंखें लड़ गई थीं। हालत यह हो गई थी कि वो-'मैं कहीं बादल न बन जाऊं, तेरे प्यार में ए बरखा' टाइप की शायरी भी करने लगे थे। लेकिन बाद में उन्हें समझ में आया कि बादल बनने से अच्छा है, अफसर बनना। बरखा के भाई ने घुड़की पिलाई तो साहब ने कविताई छोड़ दी। अच्छा ही हुआ। साहब अब सोचते हैं। कविताई में ऊपर की कमाई की कोई संभावना ही नहीं होती। कविताई से किसी ने क्या पा लिया?

अब साहब का मन तो यह खबर सुनकर खिला हुआ था कि उनके इलाके में भारी बारिश हुई है और आगे भी भारी बारिश होने की संभावना है। अब लोकतंत्र इतना पारदर्शी तो नहीं हुआ है कि लगातार बारिश हो और इलाके का कोई पुल ही नहीं गिरे। बस्तियों की सड़कों में खड्डे ही नहीं हों। साहब को पता था कि कौन-कौन से पुल गिरने वाले हैं और कौन-कौन सी सड़कें धंस सकती हैं। साहब ने तो अपने लोगों को यह तक निर्देश दे दिये थे कि पुल गिरने की स्थिति में उसकी तुरंत मरम्मत की योजना की फाइल बना लें और संबंधित ठेकेदारों से सब तय कर लें।

जब पुल बने थे, तब भी साहब की जेबों में हरियाली गई थी। अब, जब पुल गिर जाएंगे तो भी साहब की जेबें हरियाएंगी। यह रिश्वत नहीं है। लोकतंत्र के विकास में साहब के योगदान को देखते हुए ठेकेदारों द्वारा दिया गया थोड़ा-सा सम्मान है। बारिश ने साहब को बहुत उदार बना दिया था। उन्होंने अपने मुंह लगे बाबू से कह दिया था कि यदि दो के बजाय चार पुल गिरें तो वो उसे सैकंड हैण्ड कार खरीदने के पैसे दे देंगे। उन्होंने अपनी पत्नी से भी पूछ लिया था कि बरसात के बाद वो स्विट्ज़रलैंड घूमना चाहेगी या अमेरिका?

कल रात को सोने से पहले साहब ने सुना था कि उनके इलाके का एक पुल थरथराने लगा है। वो खुश हुए। उन्होंने अपने भी अफसर को बताया कि 'यह पुल चोर था साहब। आप तक का हिस्सा दिये बिना खड़ा हो गया। अब आप तो जानते हैं कि चोरों के पांव कच्चे होते हैं। ज़रा-सा सच सामने आते ही कांपने लगते हैं। बरसात का पानी किसी सच से कम नहीं होता। पुल कांप रहा है तो अपनी मौत खुद मरेगा सर, हम उसे कब तक बचा सकते हैं?' लेकिन साहब के दुर्भाग्य से पुल बच गया। वो नहीं गिरा। साहब ने पुल के गिरने की खबर पढ़ने के लिये अपने मोबाइल के संदेश टटोले, अखबार को बार-बार पलटा, टीवी पर चैनल बदले लेकिन कहीं उन्हें वह सब नहीं मिला, जो वो जानना चाहते थे। उन्हें मातहत ने बताया कि कुछ देर तक तो लोगों की जान सांसत में पड़ी रही लेकिन उसके बाद पुल को पता नहीं क्या हुआ कि उसने कांपना बंद कर दिया।

लोकतंत्र के प्रहरी की भूमिका निभाने का वक्त

मनोज झा

प्रिय मुख्य चुनाव आयुक्त! मैं समय के गलियारे के छोर से आपको यह चिट्ठी लिख रहा हूं। एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जिसे हमारे गणतंत्र के एकदम प्रारंभिक वर्षों में यह सुनिश्चित करने का पावन काम सौंपा गया था कि प्रत्येक भारतीय, चाहे वह किसी भी जाति, पंथ, वर्ग या क्षेत्र का हो, मुक्त और बेखौफ होकर अपना वोट डाल सके। यह संवैधानिक कर्तव्य और ऐतिहासिक चिंतन की वह गहरी भावना है, जिसके आधार पर मैं आपको बताना चाहूंगा कि कैसे हमने लोकतांत्रिक स्व-शासन के एक महान प्रयोग की नींव रखी। एक ऐसा गणतंत्र, जहां प्रत्येक वयस्क, चाहे उसकी सामाजिक या आर्थिक हैसियत कुछ भी हो, समान मताधिकार रखता है।

जब मैंने 1951-52 में पहला लोकसभा चुनाव करवाया था, तब गणतंत्र शैशव काल में था, विभाजन के जख्म ताजा थे, निरक्षरता से बोझिल और सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के विचार से अनभिज्ञ। फिर भी, भारतीय जनता ने चुनावी प्रक्रिया में अटूट विश्वास जताया, क्योंकि उन्हें यकीन था कि इसे संचालित करने वाली संस्था निष्पक्षता, दृढ़ता और कार्यपालिका से पूर्ण आजादी के साथ काम कर रही है।

आज, जरूरी है कि यह विश्वास डगमगाए नहीं, क्योंकि बिहार में जारी मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण के बारे में आई हालिया रिपोर्टें बेहद परेशान करने वाली हैं। आरोप हैं कि यह प्रक्रिया गरीबों, भूमिहीनों और सामाजिक रूप से हाशिए के लोगों को असमान रूप से प्रभावित कर रही है, जिनके लिए मतदान का अधिकार अक्सर सशक्तीकरण का एकमात्र वास्तविक साधन रहा है।

वहां चल रहा पुनरीक्षण कार्य लोगों का नाम काटने और शक्तिहीन करने वाला प्रतीत हो रहा है। दूरगामी परिणामों वाले इतने विशाल काम को, इतने कम समय में करने का प्रयास तक आपदा का नुस्खा बन सकता है। आप यह काम एक ऐसे राज्य में कर रहे हैं जहां से दूसरे राज्यों में प्रवासी कामगार बनने वालों की संख्या बहुत अधिक है। जिसका भूगोल कुछ महीने बाढ़ से अस्त-व्यस्त रहता है। आप पर सूचना प्रकटीकरण में कंजूसी, चर्चाओं और संवाद में अड़ियल रवैया अपनाने और सबसे दुखद यह कि सार्वजनिक संवाद में आपके द्वारा लड़ाकू रुख रखने के आरोप लगते हैं। इन दिनों आलोचकों को चुप कराने के लिए नियम-पुस्तिका का वास्ता देना एक प्रकार से नैतिकतावादी हथकंडा बन गया है। नियम-पुस्तिका न्यूनतम और बुनियादी मानकों को सुनिश्चित करने के लिए होती है।

करोड़ों लोगों पर उनका नाम कटने की चिंता तारी है। इस प्रक्रिया के शुरू होने के दो हफ्ते बाद भी, कई लोगों को मतदाता आवेदन फ़ॉर्म तक नहीं मिले हैं। अपनी पात्रता सिद्ध करने को मतदाताओं के एक बड़े हिस्से के पास आपके आयोग द्वारा तय किए गए 11 दस्तावेज़ों में एक भी नहीं है। आमतौर पर जारी

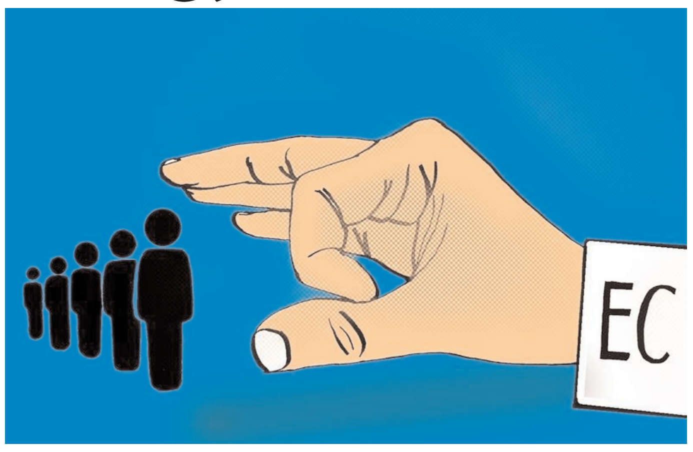

किए जाने वाले पहचानपत्र, जिनमें वोटर कार्ड भी शामिल है, को सत्यापन हेतु बेवजह अवांछित बना दिया है। इस मामले में जारी अस्पष्ट निर्देश आम लोगों के रोज़मर्रा के जीवन में और अधिक ऊहापोह मचा रहे हैं, जो उन्हें नौकरशाही के अंधे फैसलों के दौर से गुज़रने के लिए मजबूर कर रहा है।

जिस देश में सरकार ने नागरिकता संबंधी कोई दस्तावेज़ ही जारी नहीं किया हो, वहां आप उनसे इस संदर्भ में, अत्यंत सटीक एवं संकीर्ण विकल्पों से अपनी नागरिकता सिद्ध करने के लिए कह रहे हैं। उनका वजूद है, यह वह पहले ही साबित कर चुके हैं (आधार कार्ड, राशन कार्ड, मनरेगा प्रमाणीकरण इत्यादि से), ये दस्तावेज जाने-माने हैं (ऐसी कई उपभोक्ता शिनाख्त प्रक्रियाएं हैं जिनके बिना आप इन दिनों फ़ोन नम्बर तक नहीं ले सकते या एक रुपया भी इधर-उधर नहीं भेज सकते), और फिर ये वही मतदाता हैं, जिन्होंने एक साल पहले ही अपनी पसंद की सरकार को वोट दिया था। बेशक, स्वच्छ चुनावों के लिए मतदाता सूची को अपडेट करना ज़रूरी है, लेकिन बिहार में वर्तमान विशेष गहन पुनरीक्षण बेहद दोषपूर्ण और संभवतः अलोकतांत्रिक प्रतीत होता है।

जब मैंने पहले आम चुनावों की अध्यक्षता की थी, तो हमें साजो-सामान पहुंचाने और बुनियादी ढांचा संबंधी भारी बाधाओं का सामना करना पड़ा था। फिर भी हमने यह सुनिश्चित किया कि देश के सबसे दूरदराज इलाकों में रहने वाले गरीब से गरीब नागरिकों का न केवल पंजीकरण हो, बल्कि उन्हें मतदान में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित भी किया जाए। यह एक नैतिक और संवैधानिक प्रतिबद्धता थी। कृपया यह याद रखना कि यदि मतदाता सूची से नाम काटने का औजार बन जाए, तो यह करके चुनाव आयोग न केवल जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, बल्कि हमारे संविधान के अनुच्छेद 326 की मूल आत्मा का भी उल्लंघन करने का दोषी होगा।

दुखद है कि चुनाव आयोग संस्था, जिसे हमने कार्यपालिका के अतिक्रमण के खिलाफ एक सुरक्षा कवच के रूप में गढ़ा था, की राजनीतिक तटस्थता पर अब प्रश्न लगे हैं। लेकिन एक सार्वजनिक संस्था के जीवन में, धारणा और विश्वसनीयता उतनी ही महत्वपूर्ण हैं जितनी कि कार्रवाई। यहां चुनाव आयोग लोकतंत्र का प्रहरी है। इसे भय या पक्षपातमुक्त स्वर में बोलना चाहिए। सबसे बढ़कर, इसे अंतिम मतदाता का विश्वास जीतना चाहिए। सुनिश्चित हो कि आपका प्रत्येक कार्य, कथन और निर्णय आयोग की निष्पक्षता को पुष्ट करने वाला रहे। यदि वर्तमान सरकार सीमा पार करती है, तो यह आपकी ज़िम्मेदारी है कि आप उसे संकोच सहित नहीं, बल्कि संवैधानिक साहस के साथ खींचकर वापस लाएं। इतिहास उन चुनाव आयुक्तों को याद करेगा, जिन्होंने शक्तिहीन मतदाता की रक्षा की।

भारत के पास जिस तरह की प्रतिभा है, उसे लॉर्ड्स में तीसरा टेस्ट जीतना चाहिए था-सौरव गांगुली

लंदन

पूर्व भारतीय कप्तान सौरव गांगुली ने लॉर्ड्स में खेले गए तीसरे टेस्ट मैच में भारत की हार पर निराशा व्यक्त करते हुए कहा है कि इस टीम में असाधारण प्रतिभा होने के बावजूद उसे गलत नतीजे का सामना करना पड़ा। गांगुली का मानना है कि शीर्ष क्रम के बल्लेबाजों का बेहतर प्रदर्शन भारत को इंग्लैंड के खिलाफ पांच मैचों की सीरीज में बढ़त दिला देता।

भारतीय टीम तीसरे टेस्ट में जीत के लिए 193 रन का पीछा करते हुए लक्ष्य से 22 रन दूर रह गई। इस हार के साथ ही टीम पांच मैचों की सीरीज में 1-2 से पिछड़ गई। शीर्ष क्रम के बल्लेबाजों के लचर प्रदर्शन के बाद रविंद्र जडेजा (नाबाद 61) की अगुवाई में निचले क्रम के बल्लेबाजों से जिस तरह का संघर्ष दिखाया वह काबिले तारीफ था।

गांगुली ने इंडियन रेसिंग लीग और एफ 4 इंडिया चैम्पियनशिप कार्यक्रम के इतर कहा, %इस सीरीज में भारत के बल्लेबाजी के तरीके से थोड़ी निराशा हुई, उन्हें यह 193 रन बनाने चाहिए थे। जब आप जडेजा को इस तरह से संघर्ष करते हुए देखते है तो मुझे लगता है कि इस टीम में जो प्रतिभा है उससे खिलाड़ी मुझसे ज्यादा निराश होंगे। यह इंग्लैंड के खिलाफ सीरीज में 2-1 की बढ़त लेने का मौका था। मुझे यकीन है कि वे 190 तक नहीं पहुंच पाने से निराश होंगे, खासकर उनके ड्रेसिंग रूम में बल्लेबाजी की गुणवत्ता को देखते हुए।

गांगुली ने कहा कि अगर शीर्ष क्रम के बल्लेबाज थोड़ा बेहतर खेलते, तो परिणाम अलग होता। यशस्वी जायसवाल अपना खाता नहीं खोल पाए, जबकि शुभमन गिल (छह) और ऋषभ पंत (नौ) दोहरे अंक तक नहीं पहुंच पाए। केएल राहुल ने पारी का आगाज करते हुए 39 रनों की पारी खेली, लेकिन आखिर में जडेजा (61 रन नाबाद) अकेले पड़ गए। गांगुली ने कहा, अगर शीर्ष क्रम ने थोड़ा भी संघर्ष किया होता तो यह मैच भारत की झोली में होता।

बीसीसीआई के पूर्व प्रमुख ने जडेजा की असाधारण बल्लेबाजी की प्रशंसा करते हुए कहा, %जडेजा असाधारण रहे हैं, वह भारत के लिए तब तक खेलना जारी रखेंगे जब तक वह इस तरह बल्लेबाजी और प्रदर्शन करते रहेंगे। वह लंबे समय से टीम में हैं। उन्होंने लगभग 80 टेस्ट मैच और 200 से अधिक वनडे मैच खेले हैं। आप बल्लेबाजी, गेंदबाजी और फील्डिंग करते हुए उनके अनुभव को महसूस कर सकते हैं। वह एक विशेष खिलाड़ी हैं और पिछले कुछ वर्षों में उनकी बल्लेबाजी में वास्तव में सुधार हुआ है। वह इस टीम का बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

सिराज के विकेट से याद आए श्रीनाथ, 1999 में पाकिस्तान के खिलाफ उसी तरह हुए थे आउट, भारत 12 रन से हारा था

नई दिल्ली

भारत और इंग्लैंड के बीच लॉर्ड्स टेस्ट ने रोमांच की सारी हदें पार कर दीं। पांचवें दिन आखिरी सत्र तक यह मैच चला। हालांकि, बेन स्टोक्स की इंग्लैंड टीम ने शुभमन गिल की टीम इंडिया को 22 रन से हराकर सीरीज में 2-1 की बढ़त बना ली। भारत ने 82 रन पर सात विकेट गंवा दिए थे। इसके बाद आखिरी के तीन बल्लेबाज, नीतीश रेड्डी, जसप्रीत बुमराह और मोहम्मद सिराज ने रवींद्र जडेजा के साथ मिलकर बेहतरीन बल्लेबाजी की। हालांकि, किस्मत को कुछ और ही मंजूर था।170 के स्कोर पर शोएब बशीर की गेंद पर सिराज के शानदार डिफेंस के बावजूद गेंद जमीन पर गिरकर रिवर्स स्पिन होकर विकेट से जा टकराई। ये किसी जादू जैसा था, क्योंकि फैंस ने कहा कि सिराज ने जिस तरह से डिफेंस किया, उससे बेहतर डिफेंस कोई क्या कर सकता है! हालांकि, सिराज के विकेट ने 1999 में चेन्नई में खेले गए भारत-पाकिस्तान टेस्ट की याद दिला दी। तब सकलैन मुश्ताक की गेंद पर जवागल श्रीनाथ भी कुछ इसी तरह आउट हुए थे। भारत वह मैच 12 रन से हार गया था। सोशल मीडिया पर इसका वीडियो जमकर वायरल हो रहा है।भारत के महान स्पिनर और चेन्नई में पाकिस्तान की टीम से हारने वाली टीम का हिस्सा रहे अनिल कुंबले को भी लॉर्ड्स टेस्ट ने चेन्नई में पाकिस्तान के खिलाफ टेस्ट की याद दिला दी जिसमें सचिन तेंदुलकर ने पीठ दर्द के बावजूद 136 रन की पारी खेली थी, लेकिन भारतीय टीम को 12 रन से हार का सामना करना पड़ा था।

मामूली बढ़त के बाद हरे निशान पर बंद हुआ बाजार; सेंसेक्स 63 अंक चढ़ा, निफ्टी 25200 के पार

नई दिल्ली

वैश्विक बाजार के कमजोर रुख और टैरिफ संबंधी अनिश्चितता के बीच बुधवार को शेयर बाजार मामूली बढ़त के साथ बंद हुए। 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 63.57 अंक या 0.08 प्रतिशत उछलकर 82,634.48 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान इसने 82,784.75 के उच्चतम और 82,342.94 के निम्नतम स्तर को छुआ। वहीं 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 16.25 अंक या 0.06 प्रतिशत की बढ़त के साथ 25,212.05 पर आ गया। क्या रहा सेंसेक्स कंपनियों का हाल? सेंसेक्स की कंपनियों में महिंद्रा एंड महिंद्रा, टेक महिंद्रा, भारतीय स्टेट बैंक, इंफोसिस, अदानी पोर्ट्स और आईटीसी प्रमुख लाभ में रहीं। वहीं इटर्नल, सन फार्मा, टाटा स्टील, टाटा मोटर्स, बजाज फाइनेंस और भारत इलेक्ट्रॉनिक्स प्रमुख पिछड़ने वाले शेयरों में शामिल रहे।

महिंद्रा और इंफोसिस के शेयरों में तेजी

टेक महिंद्रा के शेयर बाजार बंद होने के बाद घोषित वित्तीय नतीजों से पहले 1.94 फीसदी की बढ़त दर्ज की गई। कंपनी ने वित्त वर्ष 2026 की जून तिमाही में कर-पश्चात समेकित लाभ में 30 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की। यह 1,128.8 करोड़ रुपये रहा। इंफोसिस में 1.5 प्रतिशत की तेजी आई, जिससे प्रमुख सूचकांक हरे निशान में बंद हुए।

बीएसई क्षेत्रीय सूचकांक की स्थिति

बीएसई स्मॉलकैप सूचकांक 0.28 प्रतिशत और मिडकैप सूचकांक 0.10 प्रतिशत चढ़ गया। बीएसई क्षेत्रीय सूचकांकों में बीएसई फोकस्ड आईटी 0.67 प्रतिशत चढ़ा, इसके बाद आईटी (0.66 प्रतिशत), सेवाएं (0.55 प्रतिशत), रियल्टी (0.50 प्रतिशत) और टेक (0.49 प्रतिशत) का स्थान रहा।

कमोडिटीज, पूंजीगत सामान,

विश्व कप से पहले इंग्लैंड-न्यूजीलैंड से अभ्यास मैच खेलेगा भारत, पाकिस्तान टीम नहीं करेगी यात्रा

नई दिल्ली

भारत इस साल सितंबर-अक्तूबर में अपनी और श्रीलंका की संयुक्त मेजबानी में होने वाले महिला वनडे विश्व कप से पहले बंगलूरू में इंग्लैंड और न्यूजीलैंड के खिलाफ अभ्यास मैच खेलेगा। पाकिस्तान अपने अभ्यास मैच और विश्व कप मैच दोनों श्रीलंका में खेलेगा। यह भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) और पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने आपसी सहमति से तय किया है।भारतीय टीम पहला अभ्यास मैच बीसीसीआई के उत्कृष्टता केंद्र के मैदान पर 25 सितंबर को इंग्लैंड के साथ खेलेगी। दूसरा अभ्यास मैच विश्वकप शुरू होने से तीन दिन पहले 27 सितंबर को न्यूजीलैंड के खिलाफ चिन्नास्वामी स्टेडियम में न्यूजीलैंड के साथ खेलेगी। पाकिस्तान केअभ्यास मैच 25 और 28 सितंबर को कोलंबो में श्रीलंका और श्रीलंका की ए टीमों के साथ होंगे। पचास ओवरों का विश्वकप 12 साल बाद भारतीय उपमहाद्वीप में हो रहा है। यह 30 सितंबर से दो नवंबर तक पांच शहरों बंगलूरू, गुवाहाटी, इंदौर, विशाखापत्तनम और श्रीलंका के कोलंबो में खेला जाएगा।

सोना 500 रुपये फिसलकर 98870 रुपये पर पहुंचा, चांदी 1000 रुपये टूटी

नई दिल्ली

स्टॉकिस्टों की बिकवाली के कारण बुधवार को राष्ट्रीय राजधानी में सोने की कीमत लगातार दूसरे कारोबारी सत्र में गिरावट के साथ 500 रुपये घटकर 98,870 रुपये प्रति 10 ग्राम रह गई।अखिल भारतीय सर्राफा संघ ने इसकी पुष्टि की है। मंगलवार को 99.9 प्रतिशत शुद्धता वाली यह बहुमूल्य धातु 200 रुपए की गिरावट के साथ 99,370 रुपए प्रति 10 ग्राम पर बंद हुई थी। इस बीच, 99.5 प्रतिशत शुद्धता वाला सोना 400 रुपये गिरकर 98,400 रुपये प्रति 10 ग्राम (सभी करों सहित) पर आ गया। पिछले बाजार सत्र में यह 98,800 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ था।बुधवार को चांदी की कीमत 1,000 रुपये घटकर 1,11,000 रुपये प्रति किलोग्राम (सभी करों सहित) रह गई। मंगलवार को चांदी की कीमत 1,12,000 रुपये प्रति किलोग्राम पर बंद हुई थी। इसके विपरीत, वैश्विक बाजारों में सोना हाजिर 16.41 डॉलर या 0.49 प्रतिशत बढ़कर 3,341.37 डॉलर प्रति औंस हो गया।

राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की टैरिफ संबंधी नई धमकियों के कारण सोना बढ़कर 3,346 डॉलर प्रति औंस पर पहुंच गया। ट्रंप ने संकेत दिया है कि महीने के अंत तक फार्मा उद्योग पर शुल्क लगाया जा सकता है। इसके साथ ही अमेरिका सेमीकंडक्टर पर भी अतिरिक्त शुल्क लगाने पर विचार कर रहा है।

कोटक सिक्योरिटीज की कमोडिटी रिसर्च की एवीपी कायनात चैनवाला ने कहा, कनाडा, मैक्सिको और यूरोपीय संघ सहित 25 देशों पर नए टैरिफ लागू होने के कारण जोखिम उठाने की क्षमता कम बनी हुई है। वैश्विक मोर्चे पर, हाजिर चांदी करीब 1 प्रतिशत बढ़कर 38.05 डॉलर प्रति औंस पर पहुंच गई।

चीनी विदेश मंत्री वांग ने पांच सूत्री सुझाव दिए, अच्छे पड़ोसी बनने पर जोर

तियानजिन

शंघाई सहयोग संगठन (स्ष्ह) के विदेश मंत्रियों की बैठक चीन के तियानजिन में हो रही है। एससीओ के सदस्य देशों के विदेश मंत्रियों में भारत से डॉ जयशंकर, रूस से लावारोव समेत कई दिग्गज पहुंचे हैं। चीनी विदेश मंत्रालय ने बताया कि बैठक के दौरान देश के विदेश मंत्री वांग यी ने सभी सदस्य देशों के समक्ष पांच अहम सुझाव पेश किए। इसका मकसद भविष्य की यात्रा को लेकर रूपरेखा तैयार कहना है। वांग ने सदस्य देशों से %शंघाई भावना% को आगे बढ़ाना चाहिए।

उन्होंने संगठन के बीच सामंजस्य, एससीओ की कार्रवाई और अपील को बढ़ावा देने का आह्वान भी किया।

चीनी विदेश मंत्री वांग यी ने कहा, हम सभी को अच्छा काम कर सफलता हासिल करने के प्रयास करने चाहिए। उन्होंने कहा कि एससीओ को आपसी सम्मान, निष्पक्षता, न्याय का ध्यान रखना चाहिए। इसके अलावा उन्होंने मॉडल के तहत सहयोग का मॉडल बनाने की बात भी कही। वांग ने कहा कि हमें सुरक्षा की जिम्मेदारी साझा कर एक ठोस आधार भी रखना चाहिए।

वांग यी ने अपने तीसरे सुझाव को रेखांकित कर कहा, पारस्परिक लाभ और जीत के परिणाम विकास इंजन को चलाते हैं।

शेख हसीना युग के बाद भारत से दोस्ताना संबंध चाहती है बीएनपी, पार्टी के वरिष्ठ नेता का बयान

ढाका

बांग्लादेश की शीर्ष राजनीतिक पार्टी बीएनपी के एक बड़े नेता ने कहा है कि वे भारत के साथ अच्छे संबंध रखना चाहते हैं। बीएनपी नेता और पार्टी के कानूनी मामलों के सचिव केसर कमाल ने कहा कि %बीएनपी एक ऐसी पार्टी है, जो सभी के साथ दोस्ती करने और किसी से दुश्मनी न करने में यकीन रखती है। यही हमारी विचारधारा है, जिसे पूर्व राष्ट्रपति शहीद जियाउर रहमान ने पेश किया था। भारत हमारा बड़ा पड़ोसी है, इसलिए बीएनपी, गरिमा, दोस्ती और एकता को बनाए रखते हुए सभी के साथ मिलकर काम करना चाहेगी।% न्यूज एजेंसी एएनआई के साथ बातचीत में केसर कमाल ने कहा कि बेशक बांग्लादेश में अभी राजनीतिक पार्टियों के बीच आपसी मतभेद हैं, लेकिन उन्हें उम्मीद जताई कि मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार देश में मुक्त, निष्पक्ष और समावेशी चुनाव कराने में सफल रहेगी। केसर कमाल ने कहा %5 अगस्त को शेख हसीना के देश छोड़कर जाने के बाद मोहम्मद यूनुस सभी राजनीतिक पार्टियों के सहयोग से सरकार चला रहे हैं। सभी पार्टियों ने एकराय होकर मोहम्मद यूनुस से अंतरिम सरकार का नेतृत्व करने की अपील की थी। बीएनपी को विश्वास है कि अंतरिम सरकार निष्पक्ष और मुक्त चुनाव कराने में सफल होगी।

बीएनपी नेता ने ये भी कहा कि उनकी पार्टी बहु-राजनीतिक पार्टी व्यवस्था में यकीन करती है। उन्होंने कहा कि अभी अवामी लीग स्थगित चल रही है और ये कार्यकारी सरकार का फैसला है, लेकिन एक राजनीतिक पार्टी होने के नाते बीएनपी हमेशा से बहु-राजनीतिक पार्टी व्यवस्था और लोकतंत्र में यकीन रखती है।

पूर्व पीएम और बीएनपी नेता खालिदा जिया के स्वास्थ्य को लेकर केसर कमाल ने कहा कि %बेगम खालिदा जिया के नेतृत्व में बीएनपी न सिर्फ देश में बल्कि पूरे महाद्वीप में सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टियों में से एक बनी। हालांकि उनकी सेहत पर डॉक्टर ही बेहतर बता सकेंगे।%

%अवामी लीग की सरकार में अल्पसंख्यकों पर हुआ ज्यादा अत्याचार%

बीएनपी ने ये भी कहा कि पूर्व पीएम शेख हसीना को बांग्लादेश आकर न्याय का सामना करना चाहिए। उन पर विरोध प्रदर्शन के दौरान दो हजार मासूमों को मरवाने का आरोप है। उन्होंने ये भी कहा कि बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों पर अत्याचार का मुद्दा उठाया जा रहा है, लेकिन हिंदुओं पर अवामी लीग की सरकार में ज्यादा अत्याचार हुए। हिंदुओं पर हमले की घटनाओं पर उन्होंने कहा कि अवामी लीग के नेता या समर्थक होने के नाते उन पर हमले हुए और इसमें हिंदू मुस्लिम का कोण नहीं है।

कार्यालय कार्यपालन यंत्री लोक निर्माण विभाग संभाग मुरैना

सूबात रोड, मुरैना (म.प्र.)

क्रमांक ..../ निविदा/नि.सू.क्र. 12/2025-26 मुरैना दिनांक ....

निविदा विज्ञप्ति

मध्यप्रदेश लोक निर्माण विभाग में केन्द्रीकृत पंजीयन प्रणाली के अन्तर्गत पंजीकृत ठेकेदारों से मध्यप्रदेश के राज्यपाल की ओर से निम्नलिखित कार्यों हेतु सड़क एवं पुल कार्यों की दर अनुसूची प्रभावशील दिनांक 11.04.2025 पर निविदा आमंत्रण सूचना जारी होने के दिनांक तक समस्त संशोधनों सहित ई-टेण्डरिंग पद्धिति द्वारा ऑनलाइन निविदाएँ अपेन्डिक्स 2.10 में निहित शर्तों के अनुरूप आमंत्रित की जाती हैं, जिसकी विस्तृत निविदा सूचना एवं कार्यों का विवरण वेब-साइट http://mptenders.gov.in पर देखी जा सकती है। वेब-साइट पर होने वाली तकनीकी समस्याओं हेतु विभाग जिम्मेदार नहीं होगा।

टेण्डर आई.डी. क्र.	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (रूपयों में)	अर्नेस्ट मनी डिपोजिट (रूपयों में)	निविदा प्रपत्र का मूल्य (रू.)	कार्य पूर्ण करने की अवधि
1	2	3	4	5	6
2025_PWDRB_436667	निर्माण कार्य टेकरी सुमावली रोड (पटिया वाले बाबा रोड) से मारवाड़ी का पुरा व्हाया स्कूल मार्ग लम्बाई 1.60 कि.मी.	13633000.00 (एक करोड़ छत्तीस लाख तेतीस हजार)	136330/-	12500.00 + Portal Charges	12 माह वर्षाकाल सहित
	योग-01 कार्य	13633000.00 (एक करोड़ छत्तीस लाख तेतीस हजार)			

1. ऑन लाइन टेण्डर पब्लिश दिनांक - 14.07.2025 समय 17:30 बजे
2. निविदा प्रपत्र डाउनलोड/विक्रय प्रारंभ दिनांक - 14.07.2025 समय 17:30 बजे से
3. निविदा प्रपत्र डाउनलोड/विक्रय अंतिम दिनांक - 28.07.2025 समय 17:30 बजे तक
4. ऑन लाईन बिड सबमिशन का प्रारंभ दिनांक - 14.07.2025 समय 17:30 बजे तक
5. ऑन लाईन बिड सबमिशन का अंतिम दिनांक - 28.07.2025 समय 17:30 बजे तक
6. बिड ओपनिंग दिनांक - 29.07.2025 समय 17:30 बजे

a. अनुबंध के पूर्व एवं अनुबंध अवधि में लेवर पंजीयन करना अनिवार्य होगा, निविदा की वैधता अवधि 120 दिवस होगी।
b. निविदा संबंधी संशोधन उसी टेण्डर में ऑन लाईन देखे जा सकेंगे, अतिरिक्त प्रेस नोट नहीं निकाला जावेगा।
c. सक्षम अधिकारी को निविदा को बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार सुरक्षित होगा।
d. संबंधित मद में आवंटन उपलब्ध होने पर ही भुगतान हो सकेगा।
e. निविदाऐं ऑन-लाईन ही प्रस्तुत की जावें, भौतिक रूप से कोई भी दस्तावेज स्वीकार नहीं किया जावेगा।
f. शासन द्वारा समय-समय पर जारी समस्त नियम एवं संशोधन प्रभावशील होंगे।
g. निविदा के साथ संलग्न शिड्यूल में दर्शाये गये आयटमों के अतिरिक्त प्रचलित एस.ओ.आर. के समस्त आयटम के कार्य सम्मिलित माने जावेंगे।

उपरोक्त वेब-साइट ऑन लाइन भुगतान करने के उपरान्त निविदा प्रपत्र (टेंडर डॉक्यूमेंट) वेब-साइट के माध्यम से प्राप्त हो सकेंगे। विस्तृत एन.आई.टी. एवं अन्य जानकारी उपरोक्त वेब-साइट में देखी जा सकती है।

10/07/25
(अन्वेश प्रताप सिंह)
कार्यपालन यंत्री
लोक निर्माण विभाग संभाग मुरैना
फोन नं. 07532-226361

G-15745/25

कार्यालय कार्यपालन यंत्री लोक निर्माण विभाग संभाग मुरैना

सूबात रोड, मुरैना (म.प्र.)

क्रमांक ..../ निविदा/नि.सू.क्र. 13/2025-26 मुरैना दिनांक ....

निविदा विज्ञप्ति

मध्यप्रदेश लोक निर्माण विभाग में केन्द्रीकृत पंजीयन प्रणाली के अन्तर्गत पंजीकृत ठेकेदारों से मध्यप्रदेश के राज्यपाल की ओर से निम्नलिखित कार्यों हेतु भवन कार्यों की दर अनुसूची प्रभावशील दिनांक 01.01.2024 पर निविदा आमंत्रण सूचना जारी होने के दिनांक तक समस्त संशोधनों सहित ई-टेण्डरिंग पद्धिति द्वारा ऑनलाइन निविदाऐं अपेन्डिक्स 2.10 में निहित शर्तों के अनुरूप आमंत्रित की जाती हैं, जिसकी विस्तृत निविदा सूचना एवं कार्यों का विवरण वेब-साइट http://mptenders.gov.in पर देखी जा सकती है। वेब-साइट पर होने वाली तकनीकी समस्याओं हेतु विभाग जिम्मेदार नहीं होगा।

टेण्डर आई.डी. क्र.	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (रूपयों में)	अर्नेस्ट मनी डिपोजिट (रूपयों में)	निविदा प्रपत्र का मूल्य (रू.)	कार्य पूर्ण करने की अवधि
1	2	3	4	5	6
2025_PWDRB_437009	विशेष मरम्मत के अन्तर्गत शासकीय आवास क्र. डी-1 माननीय सांसद बंगला मुरैना का मरम्मत कार्य	423434.00 (चार लाख तेईस हजार चार सौ चौंतीस)	8500/-	2000.00 + Portal Charges	01 माह
2025_PWDRB_437010	विशेष मरम्मत के अन्तर्गत शासकीय आवास क्र. डी-2 माननीय विधानसभा अध्यक्ष बंगला मुरैना का मरम्मत कार्य	423434.00 (चार लाख तेईस हजार चार सौ चौंतीस)	8500/-	2000.00 + Portal Charges	01 माह
	योग-02 कार्य	846868.00 (आठ लाख छियालीस हजार आठ सौ अरसठ)			

1. ऑन लाइन टेण्डर पब्लिश दिनांक - 15.07.2025 समय 17:30 बजे
2. निविदा प्रपत्र डाउनलोड/विक्रय प्रारंभ दिनांक - 15.07.2025 समय 17:30 बजे से
3. निविदा प्रपत्र डाउनलोड/विक्रय अंतिम दिनांक - 28.07.2025 समय 17:30 बजे तक
4. ऑन लाईन बिड सबमिशन का प्रारंभ दिनांक - 15.07.2025 समय 17:30 बजे तक
5. ऑन लाईन बिड सबमिशन का अंतिम दिनांक - 28.07.2025 समय 17:30 बजे तक
6. बिड ओपनिंग दिनांक - 29.07.2025 समय 17:30 बजे

a. अनुबंध के पूर्व एवं अनुबंध अवधि में लेवर पंजीयन करना अनिवार्य होगा, निविदा की वैधता अवधि 120 दिवस होगी।
b. निविदा संबंधी संशोधन उसी टेण्डर में ऑन लाईन देखे जा सकेंगे, अतिरिक्त प्रेस नोट नहीं निकाला जावेगा।
c. सक्षम अधिकारी को निविदा को बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार सुरक्षित होगा।
d. संबंधित मद में आवंटन उपलब्ध होने पर ही भुगतान हो सकेगा।
e. निविदाऐं ऑन-लाईन ही प्रस्तुत की जावे, भौतिक रूप से कोई भी दस्तावेज स्वीकार नहीं किया जावेगा।
f. शासन द्वारा समय-समय पर जारी समस्त नियम एवं संशोधन प्रभावशील होंगे।
g. निविदा के साथ संलग्न शिड्यूल में दर्शाये गये आयटमों के अतिरिक्त प्रचलित एस.ओ.आर. के समस्त आयटम के कार्य सम्मिलित माने जावेंगे।

उपरोक्त वेब-साइट ऑन लाइन भुगतान करने के उपरान्त निविदा प्रपत्र (टेंडर डॉक्यूमेंट) वेब-साइट के माध्यम से प्राप्त हो सकेंगे। विस्तृत एन.आई.टी. एवं अन्य जानकारी उपरोक्त वेब-साइट में देखी जा सकती है।

(अन्वेश प्रताप सिंह)
कार्यपालन यंत्री
लोक निर्माण विभाग संभाग मुरैना
फोन नं. 07532-226361

G-15746/25

अटलपुर में पटवारी जितेंद्र इक्लोदिया को दी गई भावभीनी विदाई

नेक और उत्कृष्ट कार्यशैली का नाम है पटवारी जितेंद्र: सरपंच

शिवपुरी ब्यूरो। बदरवास तहसील से स्थानांतरित होकर रन्नौद तहसील गए पटवारी जितेंद्र के सम्मान में ग्राम अटलपुर में बिदाई एवं समारोह कार्यक्रम आयोजित किया गया कार्यक्रम में सरपंच जगदीश धाकड़ ने शॉल श्रीफल व स्मृति चिन्ह भैंटकर उनकी उत्कृष्ट कार्य शैली की सराहना की और उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दी जनपद सदस्य हीरालाल पटेलिया ने कहा कि पहली बार किसी पटवारी के प्रति किसानों और ग्रामीणों में ऐसा इसमें और लगाव देखा गया है।इस अवसर पर सरपंच बृजेश सिंह धाकड़,सर्वेयर गोपाल जाटव, संजीव जाटव, सुबहसिंह जाटव, भागीरथ धाकड़, रघुवीर धाकड़, एडवोकेट रवि केवट, राजीव यादव, शीशपाल सिंह यादव, नरेश धाकड़ बालकिशन जाटव मनोहर धाकड़ सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण जन मौजूद रहे कार्यक्रम उपरांत सभी ने पटवारी को भावभीनी विदाई दी बृजेश धाकड़ अटलपुर ने कहा कि अटलपुर के किसान भाइयों के वर्षों से लंबित भूमि संबंधी कार्यों को पटवारी की सहज व सरल कार्य शैली के चलते समय पर पूर्णता मिली रवि केवट एडवोकेट ने कहा कि इक्लोदिया जैसे समर्पित कर्मचारियों के साथ काम करना गौरव की बात रही यह एक सुखद अनुभव भी था उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूं। जितेंद्र इक्लोदिया पटवारी बदरवास तहसील के कई हल्का नंबरों पर पोस्टेड रहे हैं इन्होंने जहां भी काम किया है बड़े ही लगन सील तरीके से कार्य किए हैं जहां से भी इनका ट्रांसफर होता है वहां के लोग इनको बड़े ही याद करते हैं इससे पहले भी इन्होंने रन्नौद तहसील के अंतर्गत आने वाले कई हल्का नंबरों पर नौकरी की है वहां भी उनके कार्य की सराहना की जाती है। आज यही बदरवास की अटलपुर ग्राम पंचायत में देखने को मिला ग्रामीणों ने बताया कि ऐसे कर्मचारी बहुत कम देखने को मिलते हैं की इन्हें सिर्फ किसानों के काम की फिक्र खुद के कामों से ज्यादा रहती है हम इनके उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं।

नव युवा ने कठिन मानी जाने वाली श्रीखंड महादेव के दर्शन कर धर्म की प्रभावना को बढ़ाया

सफल यात्रा होने पर यात्री संतोष कुशवाह का नगर में परिजनों व समाजजनों ने किया स्वागत

शिवपुरी ब्यूरो। शहर के एक नव युवा संतोष कुशवाह निवासी सुभाष कॉलोनी के द्वारा भगवान भोलेनाथ की कठिन यात्रा मानी जाने वाली श्रीखंड महादेव की सफल यात्रा कर अंचल शिवपुरी में धर्म की प्रभावना को बढ़ाया है और यात्रा पूर्ण होने के बाद जब संतोष गत दिवस शिवपुरी आए तो यहां उनके परिजनों एवं समाजजनों के द्वारा माल्यार्पण कर स्वागत किया गया। इस यात्रा के दौरान संतोष ने अपने अनुभव भी साझा किए और बताया कि श्रीखंड महादेव, जिसे पंच कैलाश में से एक माना जाता है, वह भगवान शिव का निवास स्थान माना जाता है और यह हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले में स्थित है, यह यात्रा बहुत कठिन मानी जाती है और 18,570 फीट की ऊंचाई पर स्थित 75 फीट ऊंचे शिवलिंग के दर्शन के लिए की जाती है। श्रीखंड महादेव से जुड़ी एक प्रसिद्ध कथा है जिसमें भस्मासुर नामक राक्षस से जुड़ा प्रसंग है। श्रीखंड महादेव यात्रा, भगवान शिव के भक्तों के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थयात्रा है।

यह है श्रीखंड महादेव से जुड़ी पौराणिक कथा

संतोष कुशवाह ने बताया कि श्रीखंड महादेव दर्शन से जुड़ी पौराणिक कथा के अनुसार, भस्मासुर नामक एक राक्षस ने भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए कठोर तपस्या की और उनसे वरदान मांगा कि वह जिसके सिर पर हाथ रखेगा, वह भस्म हो जाएगा। वरदान मिलने के बाद, भस्मासुर ने शिवजी को ही भस्म करने का प्रयास किया। भगवान शिव, भस्मासुर से बचने के लिए, श्रीखंड महादेव की गुफाओं में छिप गए। भगवान विष्णु ने मोहिनी रूप धारण करके भस्मासुर को छल से उसी के वरदान का शिकार बनाया, जिससे भस्मासुर भस्म हो गया। इसके बाद, भगवान शिव श्रीखंड महादेव से बाहर आए और आज भी एक शिला रूप में वहां विराजमान हैं।

यूं होती है श्रीखंड महादेव यात्रा

श्रीखंड महादेव की यात्रा के बारे में अपने अनुभव साझा करते हुए संतोष कुशवाह बताते हैं कि यह एक कठिन यात्रा है जो जुलाई के महीने में शुरू होती है और 32 किलोमीटर की पैदल यात्रा करनी होती है, यात्रा के दौरान, श्रद्धालु कई पड़ावों से गुजरते हैं, जैसे कि जाओ, सिंहगाड़, थाचड़ू, भीमदवारी, और नैन सरोवर से होकर जाना पड़ता है। यात्रा के दौरान यात्रा पर जाने से पहले, श्रद्धालुओं को श्रीखंड महादेव ट्रस्ट में पंजीकरण करवाना होता है, यात्रा के लिए मेडिकल जांच करवाना अनिवार्य है और गर्म कपड़े, जूते, छाता, रेनकोट, और जरूरी दवाएं साथ रखना आवश्यक है, इसके अलावा यात्रा के दौरान, श्रद्धालुओं को प्रशासन द्वारा जारी किए गए दिशा-निर्देशों का पालन करना आवश्यक है।

गुजरात के मुख्यमंत्री के नाम जैन समाज ने सौंपा ज्ञापन

हाईकोर्ट ने भी 2005 में पंचम टोंक पर नए निर्माण पर लगाई थी रोक

शिवपुरी ब्यूरो। जैन मिलन परिवार और सकल जैन समाज ने बुधवार को गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल के नाम पोहरी एसडीएम मोतिलाल अहिरवार को ज्ञापन सौंपा। यह ज्ञापन गुजरात के जूनागढ़ स्थित गिरनार पर्वत की पंचम टोंक पर जैन श्रद्धालुओं को पूजा से रोके जाने और उनके साथ की गई अभद्रता के विरोध में दिया गया। जैन समाज के अनुसार, 2 जुलाई 2025 को देशभर से आए हजारों जैन श्रद्धालुओं को भगवान नेमिनाथ के निर्वाण स्थल पर पूजा करने, द्रव्य चढ़ाने और जयकारा लगाने से रोका गया। श्रद्धालुओं की पूजा सामग्री जब्त की गई और महिलाओं के साथ भी अभद्र व्यवहार किया गया। समाज ने इसे धार्मिक अधिकारों का हनन और संवैधानिक स्वतंत्रता का उल्लंघन बताया। उनका कहना है कि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग (एएसआई) और गुजरात राज्य गजेटियर दोनों इस स्थल को मूल रूप से जैन तीर्थ मानते हैं। गुजरात हाईकोर्ट ने भी 2005 में पंचम टोंक पर नए निर्माण पर रोक लगाई थी। ज्ञापन में विनोद कुमार जैन एलआईसी, मनोज जैन, जैन मेडिकल, देवेंद्र जैन पत्रकार, हितेश जैन पत्रकार, नीरज जैन, अंकित जैन, मनोज जैन, संतोष जैन एवं समस्त जैन समाज ज्ञापन देने पहुंचा।

स्व.श्रीमती भारती जैन के जन्मदिन पर उनके पति द्वारा रक्तदान एवं वृक्षारोपण के साथ गौ माता की सेवा कर उन्हें याद किया

तेरे जन्मदिन पर तुझसे क्या कहु सिर्फ तेरी यादों के सिवाय मेरे पास कुछ नही

शिवपुरी ब्यूरो। स्व. श्रीमती भारती जैन के जन्मदिन पर उन्हें याद करते हुए उनके पति सुरेन्द्र जैन (बंटी) द्वारा जिला चिकित्सालय में 25 वीं वार रक्तदान किया एवं शासकीय माधवराव सिंधिया विद्यालय में पौधरोपण के साथ अपना घर गौ शाला में गऊ माता की सेवा कर अपने जीवनसाथी को श्रद्धासुमन अर्पित किये एवं शेष बचे जीवन मे रक्तदान के साथ साथ पौधरोपण करने का भी संकल्प लिया। इस सेवा कार्य में उनके साथ समाजसेवी गजेन्द्र सिंह सोलंकी, प्रो दिग्विजय सिंह सिकरवार, भाजपा मंडल अध्यक्ष विपुल जैमिनी, महामंत्री रीतेश जैन, समाजसेवी वीर प्रमोद जैन, अमित खंडेलवाल, नरेन्द्र गुप्ता, श्रीमती रेणु सिंघल, श्रीमती माधवी अग्रवाल, वीरा श्रीमती जूली जैन, प्रवीण गुप्ता, संजय सिंघल, रिंकेश अग्रवाल, अभिषेक गुप्ता, गौरव शर्मा,भुरेंद्र यादव, बबलू गुप्ता, विवेक गुप्ता आदि उपस्थित रहे।

सतनवाड़ा पुलिस ने एक चोर को किया गिरफ्तार, मंदिर का घंटा एवं चोरी की बाइक बरामद

शिवपुरी ब्यूरो। सतनवाड़ा थाना पुलिस ने एक चोर को गिरफ्तार किया है। आरोपी के कब्जे से मंदिर से चोरी किए गए घंटे एवं चोरी की गई मोटरसाइकिल बरामद की है। आरोपी को न्यायालय में पेश किया। सतनवाड़ा थाना प्रभारी सुनील सिंह राजपूत के अनुसार, 14 जुलाई को फरियादी गौरव धाकड़ पुत्र परमाल सिंह धाकड़ उम्र 26 साल निवासी ग्राम कॉकर थाना सतनवाडा की रिपोर्ट पर से अपराध क्रमांक 108/2025 धारा 303 (2) बीएनएस का कायम कर विवेचना में लिया गया। प्रभारी थाना सतनवाड़ा उनि. सुनील सिंह राजपूत द्वारा आरोपी अभिषेक आदिवासी पुत्र जनवेद आदिवासी आयु 20 साल निवासी ग्राम उकायला थाना अमोलपठा जिला शिवपुरी म.प्र. को आज आरोपी के कब्जे से मोटरसाईकिल जप्त कर आरोपी गिरफ्तार कर मेमो लेख किया गया मेमो मे आरोपी ने मंदिर से चोरी किये गये घण्टे के बारे में बताया आरोपी के कब्जे से चोरी गये घण्टे को जप्त कर आरोपी को माननीय न्यायालय शिवपुरी में पेश किया गया। उक्त कार्रवाई में थाना प्रभारी थाना थाना सतनवाडा उनि. सुनील सिंह राजपूत सउनि बृजेन्द्र कुमार पाठक, प्र.आर. निरंजन सिंह गुर्जर, प्र.आर. सोनेराम कुशवाह प्र.आर. सोनू रजक, पवन कुमार, आर. प्रशांत गुर्जर, शिवराज धाकड़, विनोद राठौर की सराहनीय भूमिका रही है।

फिजीकल मंडल की नवीन कार्यकारिणी घोषित

आशीष बिंदल, मदनदेशवारी महामंत्री तो मीडिया प्रभारी बने राजकुमार शर्मा

शिवपुरी ब्यूरो। भारतीय जनता पार्टी फिजीकल मंडल की नवीन कार्यकारिणी आज भाजपा जिलाध्यक्ष जसमंत जाटव की सहमति से एवं मंडल अध्यक्ष कृष्णा कुशवाह ने घोषित की है जिसमें चार उपाध्यक्ष, दो महामंत्री, 6 मंत्री, कोषाध्यक्ष, मीडिया प्रभारी सहित 26 सदस्यों की कार्यकारिणी घोषित की है। उपाध्यक्ष जसराम धाकड़, दीपक कुशवाह, प्रतीक शर्मा, तरुण सेजवार, कामेन्द्र राठौर, श्रीमती शोभा शर्मा, महामंत्री के आशीष बिंदल, मदन देशवारी, मंत्री ओम जाटव, विजयदीप शुक्ला, श्रीमती ममता राठौड़, राजकुमारी कुशवाह, गायत्री राठौर, प्रशांत गुर्जर, कोषाध्यक्ष राजकुमार राठौर, सह कोषाध्यक्ष श्रीमती सीमा शाक्य, कार्यालय मंत्री राहुल खटीक, सह कार्यालय मंत्री प्रांजुल अग्रवाल, मीडिया प्रभारी राजकुमार शर्मा (राजू शर्मा), मीडिया सह-प्रभारी रूपेश जैन, सोशल मीडिया प्रभारी आकाश प्रजापति, सह सोशल मीडिया प्रभारी सतीश खटीक, आईटीसेल सह प्रभारी मनी खान, आईटीसेल सह प्रभारी जितेन्द्र राठौर, प्रचार मंत्री सुधीर रजक, सह प्रचार मंत्री राहुल धूलिया शामिल हैं।

शुद्ध आहार-मिलावट पर वार अभियान

धौलपुर ब्यूरो। आमजन को शुद्ध व गुणवत्तापूर्ण खाद्य सामग्री उपलब्ध करवाने के राज्य सरकार द्वारा प्रदेश भर में शुद्ध आहार-मिलावट पर वार अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में मंगलवार देर रात से बुधवार सुबह 11 बजे तक चले सघन जांच अभियान के दौरान जिला कलक्टर श्रीनिधि बी टी की मौजूदगी में खाद्य सुरक्षा टीम और पुलिस ने संयुक्त कार्यवाही करते हुए मनिया क्षेत्र के रांडोली श्री रामहरि डेयरी पर छापा मार कर चार नमूने भरे तथा मावा, इलायची दाना, स्कीम मिल्क पाउडर तथा घी के लिए गए। इस दौरान करीब 20 किलोग्राम घी एवं 10 किलोग्राम पाउडर को सीज किया गया। इस दौरान करीब 30 किलोग्राम मावा को नष्ट करवाया गया। दूसरी कार्यवाही राजाखेड़ा के श्यामू का घेर स्थित राजाखेड़ा नमन मिल्क फूड प्रोडक्ट्स एवं मां रहना वाली मिल्क फूड प्रोडक्ट्स पर की गई। नमन मिल्क फूड प्रोडक्ट से 500 किलोग्राम दूषित बर्फी नष्ट करवाई। साथ ही रिफाइंड तेल एवं स्किम्ड मिल्क पाउडर का नमूना लिया। रहना वाली मिल्क फूड प्रोडक्ट से वनस्पति एवं स्किम्ड मिल्क पाउडर का नमूना लेकर जांच के लिए भिजवाए गए हैं। खाद्य सुरक्षा अधिकारी पदम सिंह परमार ने बताया कि नमूनों की जांच रिपोर्ट प्राप्त होने पर आगे कार्यवाही की जाएगी। साथ ही मिलावटखोरों के विरुद्ध खाद्य संरक्षा एवं मानक अधिनियम 2006, विनियम 2011 के तहत कार्यवाही, निरीक्षण, नमूनीकरण, सर्विलेंस, जब्ती, नष्टीकरण का कार्य सतत रुप से किया जा रहा है।

पोहरी महाविद्यालय में आयोजित हुआ नशे से दूरी है जरूरी जनजागरूकता कार्यक्रम, एसडीओपी-थाना प्रभारी रहे उपस्थित

शिवपुरी ब्यूरो। कलेक्टर रवीन्द्र कुमार चौधरी के निर्देशन में तथा पुलिस अधीक्षक अमन सिंह राठौड़ के मार्गदर्शन में जिले में नशे से दूरी है जरूरी' जनजागरूकता अभियान का शुभारंभ किया गया हैं। यह अभियान 15 जुलाई से 30 जुलाई 2025 तक जिलेभर में संचालित किया जा रहा है। अभियान के दूसरे दिन बुधवार को पोहरी एलएसजीके महाविद्यालय परिसर में कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमे उपस्थित छात्र-छात्राओं को नशे के दुष्परिणामों से अवगत कराया गया तथा नशामुक्ति का संदेश दिया गया। कार्यक्रम में एसडीओपी संजय चतुर्वेदी, थाना प्रभारी नरेंद्र सिंह कुशवाह एवं शिक्षा विभाग की सहभागिता रही। कार्यक्रम में एलएसजीके महाविद्यालय व संदीपनी विद्यालय के छात्र-छात्राओं सहित शिक्षक-शिक्षिकाएं, पुलिस विभाग एवं प्रशासनिक अधिकारी सम्मिलित हुए। महाविद्यालय परिसर में सभी जनमानस को नशा न करने की शपथ भी दिलाई गई।

वर्ष 2024-25 में हुए फसल खराबे का किसानों को मिलेगा लगभग 1 करोड़ 10 लाख 45 हजार रूपये का मुआवजा

धौलपुर ब्यूरो। वर्ष 2024-25 में खरीफ की फसलों बाजरा तथा तिल एवं रबी की फसलों गेहूँ एवं सरसों में लगातार वर्षा, असमय वर्षा तथा ओलावृष्टि एवं अन्य कारणों से फसल खराबा हुआ था। जिसके आंकलन के लिए जिला कलक्टर श्रीनिधि बी टी के निर्देशानुसार प्रत्येक पटवार मण्डल में फसल कटाई प्रयोजन का संपादन किया गया। फसल कटाई प्रयोगों से प्राप्त आंकड़ो के आधार पर जिले के कई पटवार मण्डलों मे फसल खराबा दर्ज हुआ। जिसकी भरपाई के लिए लगभग 1 करोड़ 10 लाख 45 हजार रूपये का बीमा क्लेम राज्य स्तर से अप्रूव हुआ है। जिन कृषकों की फसलों में खराबा हुआ था, उसकी भरपाई के लिए कृषकों को मुआवजे के रूप में स्वीकृत राशि उनके सीधे ही केसीसी खाते में जमा करवाए जाने की प्रक्रिया बीमा कम्पनी के स्तर से प्रगति पर है।

फसल खराबे की भरपाई के लिए सभी कृषक कराए फसल बीमा

खरीफ सीजन 2025 के लिए प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का पोर्टल खुल गया है। किसान 31 जुलाई तक जिले की अधिसूचित फसल बाजरा पटवार मण्डल एवं तिल के लिए तहसील स्तर बाड़ी, बसेड़ी एवं सरमथुरा का बीमा करवा सकते है। साथ ही जिन किसानों ने बीते साल फसल बीमा लिया और इस बार इच्छुक नहीं है, उन्हें 24 जुलाई तक बैंक जाकर लिखित सूचना देनी होगी। जबकि फसल परिवर्तन के लिए 29 जुलाई तक सूचना देनी होगी। सहायक निदेशक कृषि मुख्यालय पीडी शर्मा ने बताया कि खरीफ की 2 फसलें अधिसूचित की गई है। जिले में एग्रीकल्चर इंश्योरेंस कम्पनी को फसल बीमा करने के लिए अधिकृत किया गया है। खरीफ 2025 के लिये बाजरा और तिल फसलें अधिसूचित है। उन्होंने बताया कि किसान अपनी फसल का बीमा बैंक, ई-मित्र के साथ-साथ घर बैठे भी ऑनलाइन करवा सकेंगे। ऋणी किसानों का प्रीमियम बैंक और सहकारी समितियों के मार्फत ऑटोमैटिक रूप से जमा हो जायेगा। जिले में स्थित किसानों को बाजरा फसल के लिये प्रीमियम राशि प्रति हैक्टेयर 1072.74 रुपये एवं तिल के लिए प्रीमियम राशि प्रति हैक्टेयर 922.96 रुपये देय होगा। जबकि बाजरा फसल के लिये प्रति हैक्टेयर बीमित राशि 53637 रुपये एवं तिल के लिए प्रति हैक्टेयर बीमित राशि 46148 रुपये होगा। इसी प्रकार बाजरा फसल के लिए प्रीमियम राशि एक बीघे का 268.19 रुपये एवं तिल के लिए प्रीमियम राशि एक बीघे का 230.74 रुपये देय होगा तथा बाजरा एक बीघे का बीमित राशि 13409 रुपये एवं तिल के लिए बीमित राशि 11537 रुपये होगी। उन्होंने बताया कि ऐसे किसानों को सिर्फ फसल परिवर्तन की सूचना देने या बीमा पॉलिसी ना लेने के लिए ही बैंक जाना पडेगा। जबकि अग्रणी किसान बैंक में जाकर अपने खेत में बोई गई अधिसूचित फसल का बीमा करवा सकता है। इसके अलावा कॉमन सर्विस सेंटर या ई-मित्र अथवा एनसीआईपी के पोर्टल पर प्रीमियम जमा करवा पॉलिसी जनरेट करवा सकेंगे। फसल बीमा योजना का लाभ ऋणी, गैर ऋणी बटईदार किसान भी ले सकेंगे। जिन किसानों ने 31 जुलाई तक अल्पकालीन फसली ऋण स्वीकृत करवाया है, उनका बीमा संबंधित बैंक से किया जायेगा। जिस पटवार सर्किल में 75 प्रतिशत से अधिक क्षेत्रफल में फसल बुवाई नहीं हुई है, वे किसान अवश्य बीमा करावें, ताकि इस योजना का लाभ उठा सकें।

जिला स्तर पर निगरानी समिति हिट एण्ड रन, विशेष प्री-लिटिगेशन लोक अदालत एवं आगामी राष्ट्रीय लोक अदालत के संबंध में बैठक का हुआ आयोजन

धौलपुर ब्यूरो। राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, उच्चतम न्यायालय नई दिल्ली में विचाराधीन रिट पिटीशन नंबर 295/2012 में पारित आदेश की पालना में जिला स्तर पर गठित निगरानी समिति हिट एण्ड रन, विशेष प्री-लिटिगेशन लोक अदालत 26 जुलाई एवं आगामी राष्ट्रीय लोक अदालत 13 सितम्बर के संबंध में बैठक का आयोजन सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण रेखा यादव की अध्यक्षता में एडीआर परिसर में किया गया। बैठक में सचिव के द्वारा हिट एण्ड रन दुर्घटनाओं में पीड़ितों एवं मृतक के परिजनों को मुआवजा दिलाये जाने हेतु विभिन्न बिन्दुओं पर चर्चा की गई तथा साथ ही विशेष प्री-लिटिगेशन लोक अदालत 26 जुलाई एवं आगामी राष्ट्रीय लोक अदालत 13 सितम्बर के सफल क्रियान्वयन, राजस्व मामलों के अधिक से अधिक प्रकरणों के निस्तारण संबंधी बिन्दुओं पर चर्चा की गई। साथ ही हिट एंड रन के पुलिस थानों में दर्ज मामलों में एवं पुलिस थाने से दावा जांच अधिकारी को प्रेषित प्रार्थना पत्र पर मुआवजा प्रदान करने के संबंध में समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में जिले के पुलिस थानों में गत वर्षों में दर्ज हिट एंड रन के सभी मामलों की, जिनमें पीड़ित को मुआवजा प्रदान करने के लिए प्रार्थना पत्र दावा जांच अधिकारी को प्रेषित किये गये थे और जो अभी पुलिस थाने से प्राप्त किये जाने शेष हैं के बारे में विचार-विमर्श किया गया। कमेटी में यह भी विचार विमर्श किया कि संबंधित पुलिस थानों से दावा जांच अधिकारी को प्रथम दुर्घटना रिपोर्ट, पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट समय पर प्रेषित की जा रही है अथवा नहीं, जिले के सभी पुलिस थानों पर दावा जांच अधिकारी के नाम व सम्पर्क सूत्र नोटिस बोर्ड पर अंकित हैं अथवा नहीं आदि बिंदुओं पर विस्तार से विचार-विमर्श किया गया। बैठक में तहसीलदार धौलपुर अल्का श्रीवास्तव, तहसीलदार मनियां देवेन्द्र तिवारी, तहसीलदार राजाखेड़ा दिप्ती, तहसीलदार सैपऊ नेहा सिंह, तहसीलदार बाड़ी उत्तम बंसल, तहसीलदार बसेडी बृजेश कुमार सिंह व तहसीलदार बसईनबाब मनोज भारद्वाज उपस्थित हुये।

जिला स्तरीय जनसुनवाई 18 जुलाई को

धौलपुर ब्यूरो। जिले में त्रि-स्तरीय जनसुनवाई एवं परिवेदनाओं के निस्तारण के संबंध में जिला स्तरीय जनसुनवाई का आयोजन 18 जुलाई शुक्रवार को जिला कलक्टर श्रीनिधि बी टी की अध्यक्षता में अटल सेवा केन्द्र जिला कलेक्ट्रेट परिसर में प्रातः 11 बजे से किया जायेगा।

उत्तर मध्य रेलवे

आगरा छावनी/चिकित्सा/एल.पी./2024-25 दिनांक 14.07.2025

ई-निविदा सूचना

भारत के राष्ट्रपति की ओर से मुख्य चिकित्सा अधीक्षक/आगरा/उत्तर मध्य रेलवे निविदा संख्या **AGC-MED-LP-2025B** के अंतर्गत ई-निविदाएं आमंत्रित करते हैं। बोलीदाता अपनी मूल/संशोधित बोलियां केवल अंतिम तिथि और समय तक ही प्रस्तुत कर सकेंगे। इस निविदा के लिए मैन्युअल प्रस्ताव की अनुमति नहीं है, और प्राप्त किसी भी ऐसे मैन्युअल प्रस्ताव को अनदेखा कर दिया जाएगा:-

निविदा संख्या : AGC-MED-LP-2025B	**कार्य समाप्त करने की अवधि :** दो वर्ष
कार्य का नाम : दो साल की अवधि के लिए दवाओं, सर्जीकल उपभोग्य सामग्रियों और पैथोलॉजी उपभोग्य सामग्रियों की दैनिक खुदरा स्थानीय खरीद के लिए फर्मों के साथ फिक्स दर पर अनुबन्ध।	
निविदा की अंतिम तिथि व समय : 05/08/2025 10:30 Hrs.	

निविदा प्रक्रिया की विस्तृत जानकारी भारतीय रेलवे ई निविदा प्रणाली की वेबसाइट www.ireps.gov.in पर उपलब्ध है। कृपया नोट करें कि इस निविदा के लिए मैन्युअल प्रस्ताव की अनुमति नहीं है, और प्राप्त किसी भी ऐसे मैन्युअल प्रस्ताव को अनदेखा कर दिया जाएगा। **1241/25 (C)**

@CPRONCR North central railways cproncrly CPRONCR www.ncr.indianrailways.gov.in

उत्तर मध्य रेलवे

निविदा सूचना सं.: AGC/Br/L/2025-26/02 **दिनांक:** 14.07.2025

ई-टेण्डरिंग निविदा सूचना

उप मुख्य इन्जी/ब्रिज/लाइन/उत्तर मध्य रेलवे, आगरा द्वारा भारत के राष्ट्रपति के लिये एंव उनकी ओर से निम्नलिखित निर्धारित कार्य के लिये ई-निविदाएँ निर्धारित प्रपत्र पर **दिनांक 06.08.2025 को 15.00 बजे** तक आमंत्रित की जाती है। कार्य का विवरण निम्न प्रकार है:-

निविदा नं.: Br-AGC-2025-02	**अनुमानित मूल्य (रू.):** ₹ 8077560.19
कार्यों का विवरण: आगरा मंडल के विभिन्न अनुभागों में ट्रैक गर्डर ब्रिज के लिए इन्स्पेक्शन क्रैडल का प्रावधान करना।	
बोली प्रतिभूति (रू.): ₹ 161600.00	**कार्य समापन की अवधि:** 06 माह
निविदा खुलने की तिथि : 06.08.2025	

सिमिलर वर्क के लिये न्यूनतम वांछनीय आधार: कोई भी स्ट्रक्चरल स्टील के फैब्रिकेसन का कार्य।

नोट:- (1) ई-निविदा प्रपत्र सभी निविदादाताओं को निःशुल्क निर्गत किये जायेंगे। (2) उपर्युक्त ई-निविदा का पूर्ण विवरण निविदा प्रपत्र सहित वेबसाइट **www.ireps.gov.in** पर **समय 15:00 बजे** तक निविदा खुलने की निर्धारित तिथि तक उपलब्ध है। (3) उपर्युक्त निविदा में ई-बिड के अलावा किसी अन्य रूप में बिड स्वीकार नहीं की जायेगी। इस प्रयोजन हेतु वेन्डरों को चाहिये कि वे अपने आपको I. T. Act. 2000 के अन्तगर्त C.C.A. द्वारा जारी डिजिटल हस्ताक्षर प्रमाणपत्र के साथ IREPS की वेबसाइट पर पंजीकृत करायें। (4) निविदा की दरें केवल डिजिटल हस्ताक्षरित फाइनेन्सियल रेट पेज पर ही विचारणीय हैं। दरें तथा अन्य वित्तीय प्रभार अन्य किसी भी फार्म/ लेटरहेड पर यदि सलंग्न है, तो उस पर विचार नही किया जायेगा तथा सीधी तौर पर अमान्य कर दिया जायेगा। (5) निविदादाता अपनी निविदा के साथ निर्धारित प्रोफार्मा पर प्रमाण-पत्र, जैसा निविदा प्रपत्र में उल्लिखित है, प्रस्तुत करेंगे, जिसके अभाव में उनकी निविदा अविचारणीय होगी तथा निरस्त कर दी जायेगी। (6) माल एवं/अथवा सेवाओं के सप्लायर/ठेकेदार समय-समय पर निर्धारित जी. एस. टी. एक्ट तथा नियमों के अन्तर्गत होंगे। (7) संलग्न किये जाने वाले सभी प्रपत्र निविदाकर्ता द्वारा हस्ताक्षरित होने चाहिये। (8) निविदा सूचना को उत्तर मध्य रेलवे की वेबसाइट **www.ncr.indianrailways.gov.in** पर भी अपलोड कर दिया गया है। (9) बयाने की राशि केवल नेटबैंकिग अथवा गेटवे भुगतान के रूप में ही स्वीकार की जायेगी। (10) किसी भी प्रकार की तकनीकी समस्या के समाधान के लिये IREPS की वेबसाइट की हेल्प लाइन से सम्पर्क किया जा सकता है। (11) आनलाइन निविदा निविदा खुलने की निर्धारित तिथि को **समय 15.00 बजे** तक प्रस्तुत की जा सकती है। (12) निविदादाता को आई.आर.जी.सी.सी. 2022 (वर्कस मैटर) भाग-I के पैरा 10 से 18 के अनुपालन में उल्लिखित आवश्यक दस्तावेजों को निविदा के साथ अनिवार्य रूप से संलग्न करना है अथवा उनकी निविदा अपूर्ण मानी जायेगी एवं तदनुसार अविचारणीय होगी। **1239/25(A)**

North central railways | @CPRONCR | www.ncr.indianrailways.gov.in

पार्वती बांध के गेट खोलकर की जा रही जल निकासी, जिला प्रशासन ने जारी की चेतावनी

धौलपुर ब्यूरो। पार्वती बांध में लगातार वर्षा के कारण जलस्तर में बढ़ोतरी हो रही है। बांध का अधिकतम जलभराव स्तर 223.41 मीटर है, जबकि बुधवार सुबह का जल स्तर 222.95 मीटर रिकॉर्ड किया गया है। बांध के कैचमेंट क्षेत्र में हो रही बारिश के चलते पानी की आवक तेजी से जारी है। ऐसे में सुरक्षा की दृष्टि से बुधवार को शाम 5 बजे बांध के 2 गेट खोले गए और अनुमानित 2107.06 क्यूसेक पानी की नियंत्रित निकासी की जा रही है। इस संबंध में जिला कलेक्टर श्रीनिधि बी टी ने संबंधित अधिकारियों एवं फील्ड स्टाफ को सतर्क रहने व लोगों को पूर्व सूचना देकर सतर्क करने के निर्देश दिए हैं। जिला प्रशासन ने आमजन, विशेषकर नदी और बांध के आस-पास निवास करने वाले ग्रामीणों से अपील की है कि वे सुरक्षा का ध्यान रखते हुए नदी, नालों या बांध क्षेत्र के समीप न जाएं। पशुपालकों से भी अनुरोध किया गया है कि वे अपने पशुओं को सुरक्षित स्थान पर रखें। प्रशासन ने सतर्क किया है कि स्थिति पर लगातार निगरानी रखी जा रही है और किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए आपदा प्रबंधन टीम अलर्ट मोड पर है।

उत्तर मध्य रेलवे

Letter No:- DRM/C/AGRA/PAY & USE/POLICY/2024 Dated:- 15.07.2025

ई-नीलामी सूचना

भारत के राष्ट्रपति की ओर से वरि0 मण्डल वाणिज्य प्रबंधक-आगरा द्वारा निम्न दी गयी श्रेणियों के अनुसार ई नीलामी आमंत्रित की गयी है, विवरण निम्न प्रकार है:-

श्रेणी : नार्मल पे एण्ड यूज	नीलामी केटलॉग संख्या : PNU-AGRA-25-4
एसेट्स डिटेल्स	
अछनेरा जं0 रेलवे स्टेशन पर (आई.आर.एफ.सी) टॉयलेट का संचालन एवं रख-रखाव।	
छाता रेलवे स्टेशन के सर्कूलेटिंग एरिया में नार्मल पे एण्ड यूज टॉयलेट (आई.आर.एफ.सी.) का संचालन एवं रख-रखाव।	
फतेहपुर सीकरी रेलवे स्टेशन के सर्कूलेटिंग एरिया में नार्मल पे एण्ड यूज टॉयलेट एवं (आई.आर.एफ.सी.) का संचालन एवं रख-रखाव।	
आगरा फोर्ट रेलवे स्टेशन के सर्कूलेटिंग एरिया में (आई.आर.एफ.सी.) एवं नार्मल पे एण्ड यूज टॉयलेट का संचालन एवं रख-रखाव।	
रामगढ़ रेलवे स्टेशन के सर्कूलेटिंग एरिया में (आई.आर.एफ.सी.) टायलेट का संचालन एवं रख-रखाव।	
ई नीलामी प्रारम्भ होने की दिनांक एवं समय : दिनांक :- 29.07.2025 समय-11:00	
ई नीलामी समाप्त होने की दिनांक एवं समय : दिनांक :- 29.07.2025 समय-12:10	

नोट-उक्त ठेकों के आवंटन हेतु नीलामी केवल ऑनलाईन वेबसाइट- **www.ireps.gov.in** के E-Auction Module के माध्यम से की जायेगी। लॉट अनुसार विवरण उपर्युक्त केटलॉग संख्या के अन्तर्गत उपलब्ध है। **1237/25(AS)**

North central railways www.ncr.indianrailways.gov.in @CPRONCR

उत्तर मध्य रेलवे

कार्यालय मण्डल रेल प्रबन्धक (कार्य)
आगरा दिनांक 16.07.2025

प्रथम शुद्धि पत्र

निविदा सूचना संख्या 2025-June-05 दिनांक **30.06.2025** की निविदा की क्रमांक 4 जो दिनांक **22.07.2025** को खोली जानी थी को निरस्त माना जाए। विवरण **"http://www.ncr.indianrailways.gov.in"** तथा/या भारत सरकार के पोर्टल **"http://www.tenders.gov.in"** पर देखे जा सकते है। **993/25 FA**

डेटा-संचालित दृष्टिकोण का उद्देश्य दुर्घटना-प्रवण क्षेत्रों की पहचान करना, दुर्घटना पैटर्न को समझना और लक्षित सुरक्षा

अपर कलेक्टर की उपस्थिति में आईआरएडी, ई-डीएआर का प्रशिक्षण संपन्न

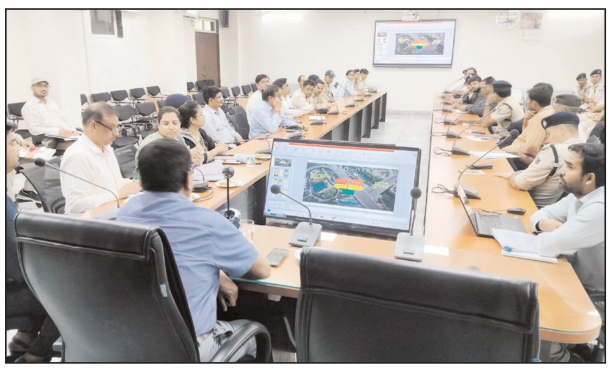

मुरैना,कांस। एकीकृत सड़क दुर्घटना डेटाबेस (आईआरएडी) और ई-विस्तृत दुर्घटना रिपोर्ट (ईडीएआर) परियोजना भारत में सड़क सुरक्षा में सुधार के लिए सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय (एमओआरटीएच) द्वारा एक पहल है। यह सड़क दुर्घटना डेटा एकत्र करने, प्रबंधित करने, विश्लेषण करने और दृश्यीकरण के लिए एक केंद्रीकृत, डिजिटल प्लेटफॉर्म बनाने पर केंद्रित है। इस डेटा-संचालित दृष्टिकोण का उद्देश्य दुर्घटना-प्रवण क्षेत्रों की पहचान करना, दुर्घटना पैटर्न को समझना और लक्षित सुरक्षा हस्तक्षेप विकसित करना है। यह प्रशिक्षण कलेक्टर श्री अंकित अस्थाना के मार्गदर्शन में अपर कलेक्टर श्री सीबी प्रसाद की उपस्थिति में बुधवार को कलेक्ट्रेट सभागार मुरैना में दिया गया। इस अवसर पर एसडीएम मुरैना श्री बीएस कुशवाह, क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी श्रीमती अर्चना परिहार, पीडब्ल्यूडी, नगर निगम मुरैना, स्वास्थ्य, पुलिस विभाग के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित थे। यह प्रशिक्षण आईआरएडी, ई-डीएआर के परियोजना, जिला रोलआउट प्रबंधक श्री स्त्रजल शर्मा द्वारा दिया गया। प्रशिक्षण के तौर पर उन्होंने बताया कि सड़क दुर्घटना की जानकारी का एक राष्ट्रीय डेटाबेस स्थापित करता है, जो खंडित और मैनुअल रिपोर्टिंग प्रणालियों का स्थान लेता है। यह परियोजना पुलिस कर्मियों के लिए एक मोबाइल एप्लीकेशन (आईआरएडी) का उपयोग करती है, जिससे वे दुर्घटना का विवरण, फोटो और वीडियो के साथ-साथ स्थान संबंधी डेटा भी दर्ज कर सकते हैं। ई-डीएआर (इलेक्ट्रॉनिक विस्तृत दुर्घटना रिपोर्ट) घटक सड़क डिजाइन और अन्य प्रासंगिक कारकों सहित विस्तृत दुर्घटना जानकारी के लिए एक संरचित प्रारूप प्रदान करने पर केंद्रित है। एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण डेटा एनालिटिक्स तकनीकों का उपयोग करके किया जाता है, ताकि दुर्घटना के प्रमुख बिंदुओं, योगदान कारकों और संभावित सुरक्षा सुधारों की पहचान की जा सके। विश्लेषण के परिणाम डैशबोर्ड के माध्यम से प्रस्तुत किए जाते हैं, जिससे प्राधिकारियों को प्रभावी सड़क सुरक्षा नीतियां और रणनीतियां तैयार करने में सहायता मिलती है। श्री स्त्रजल शर्मा ने बताया कि इस परियोजना का उद्देश्य साक्ष्य-आधारित निर्णय लेने में सुविधा प्रदान करना है, जिससे लक्षित सड़क सुरक्षा हस्तक्षेप जैसे कि बुनियादी ढांचे में सुधार, यातायात प्रबंधन समायोजन और जन-जागरूकता अभियान को बढ़ावा मिल सके।इस परियोजना में यातायात पुलिस, लोक निर्माण विभाग और आईआईटी-एम जैसे अनुसंधान संस्थानों सहित विभिन्न हितधारकों के बीच सहयोग शामिल है।

आईआरएडी, ई-डीएआर एक व्यापक प्रणाली है, जिसे भारत में सुरक्षित सड़क वातावरण के लिए डेटा का लाभ उठाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। प्रशिक्षण के दौरान उपस्थित प्रशिक्षणार्थियों ने कई प्रश्न किये, जिसके उन्होंने बारी-बारी से जबाव प्रस्तुत किये।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने फूँका पुतला

मुरैना,कांस। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद मुरैना ने फूँका पुतला नगर मंत्री श्रीराम उपाध्याय ने बताया की अभाविप की कार्यकर्ता रही सौम्याश्री ने दिनांक 13 जुलाई को बालेश्वर (ओडिशा) के एफ. एम. कॉलेज के विभागाध्यक्ष द्वारा की गई प्रताड़ना से आहत होकर आत्मदाह कर लिया। उसके चरित्र पर असंवेदनशील टिप्पणियों के कारण छात्रा ने यह गंभीर कदम लिया था।सौम्याश्री को न्याय दिलाने की माँग को लेकर अभाविप मुरैना इकाई ने प्रो. समीर का पुतला फूँका प्रॉपेसर को उचित कार्रवाई कर सजा दी जाए जिससे आंगे किसी भी छात्रा के साथ ऐसा अन्याय न हो,जिसमे मुरैना नगर इकाई के कार्यकर्ता सचिन शर्मा , आशीष नगाइच , आदित्य दंडोतिया, पुष्पेंद्र मावई, मोनू राजौरिया, ॠतिक तोमर , अंकित उपाध्याय , नितिन तोमर , पुसकर दंडोतिया , शुभम दूबे , देवेश , नितिन , प्रशांत पाठक आदि कार्यकर्ता उपस्थित रहे !

व्यक्ति का शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य खराब करता है नशा : वीरेश कुशवाह

दीप हायर सेकेंडरी स्कूल में नशा मुक्ति कार्यक्रम हुआ आयोजन

कैलारस। नशा मुक्ति अभियान को लेकर दीप हायर सेकेंडरी स्कूल में कार्यक्रम का आयोजन किया गया वही बच्चों एवं स्कूल स्टाफ नशा मुक्ति को लेकर को शपथ भी दिलाई गई कार्यक्रम के दौरान थाना प्रभारी वीरेश कुशवाह, उप निरीक्षक संतोष गौतम, भाजपा मंडल अध्यक्ष कुलदीप सिंह, पूजा सिकरवार सहित अन्य लोग मौजूद रहे वहीं थाना प्रभारी वीरेश कुशवाहा ने बताया कि कहा कि नशा न केवल व्यक्ति का शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य खराब करता है बल्कि यह परिवार और समाज पर भी गहरा प्रभाव डालता है। पुलिस विभाग का प्रयास है कि अधिक से अधिक लोग नशे के दुष्परिणामों को समझें और इससे दूर रहें। युवाओं को विशेष रूप से इससे बचाने के लिए हम लगातार जनजागरूकता कार्यक्रम चला रहे हैं। वही विद्यालय में उपस्थित छात्र-छात्राओं एवं स्टाफ से कहा कि आप लोग भी नशा मुक्ति अभियान के हिस्सा बने और जागरूकता अभियान चलाएं कि नशे के खिलाफ एकजुट होकर लड़ाई लड़ें और एक स्वस्थ, जागरूक और सशक्त समाज की ओर कदम बढ़ाएं।नशा मुक्त समाज की दिशा में जनजागरूकता फैलाने के उद्देश्य से पुलिस विभाग द्वारा नशा मुक्ति रैली एवं शपथ कार्यक्रम का आयोजन किये जा रहे है वही उन्होंने कहा कि नशा की जड़ होता है इस और हमें ध्यान देना होगा और अपने कैलारस शहर को नशा मुक्त बनाना होगा वही उप निरीक्षक संतोष गौतम ने कहा कि नशे से आए दिन झगड़ा होते हैं वहीं छोटे-छोटे बच्चों पर इसका गलत प्रभाव पड़ता है नशे के कारण कहीं घटना ही भी घटित हो चुकी है हमें अपने घर एवं आसपास के क्षेत्र में नशा मुक्त बनाना होगा इसी को लेकर दीप हायर सेकेंडरी स्कूल में इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया है वहीं थाना प्रभारी वीरेश कुशवाहा एवं उपनिरीक्षक संतोष गौतम आरक्षक विष्णु जाट शाकिर खान के द्वारा स्कूल स्टाफ रवि गौड़, धर्मेंद्र धाकड़, रवि सिकरवार, सलोनी गोयनर, लक्ष्मी वर्मा, अंजली धाकड़ सहित अन्य स्टाफ एवं छात्र-छात्राओं को आम नागरिक नशामुक्त जीवन जीने और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करने की शपथ दिलाई गई।

शासकीय महाविद्यालय कैलारस में कॉलेज लेवल काउंसलिंग प्रारंभ

मुरैना,कांस। मध्यप्रदेश उच्च शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार शासकीय महाविद्यालय कैलारस में सत्र 2025-26 के लिए कॉलेज लेवल काउंसलिंग (सीएलसी) की प्रक्रिया 16 जुलाई 2025 से औपचारिक रूप से आरंभ की जा रही है। यह प्रक्रिया 31 जुलाई 2025 तक चलेगी। प्राचार्य डॉ. संतोष कुमार मिश्रा ने बताया कि कॉलेज स्तर पर रिक्त सीटों के लिए विद्यार्थियों को मेरिट के आधार पर प्रवेश दिया जाएगा। समस्त अभ्यर्थियों को ऑनलाइन सीएलसी पोर्टल पर पंजीयन कर संबंधित महाविद्यालय का चयन करना आवश्यक होगा। प्रवेश प्रभारी श्री दर्शन गिरी गोस्वामी ने जानकारी दी कि विद्यार्थियों को प्रवेश प्राप्त करने हेतु अपने समस्त मूल दस्तावेजों के साथ महाविद्यालय में उपस्थित होना होगा। ऑनलाइन मेरिट लिस्ट के अनुसार चयनित विद्यार्थियों को प्रवेश की सूचना दी जाएगी, जिसके 24 घंटे के भीतर शुल्क जमा करना अनिवार्य होगा। कॉलेज चलो अभियान प्रभारी डॉ. प्रवीण कुमार लिटोरिया ने बताया कि शासकीय महाविद्यालय कैलारस में बीएससी प्रथम वर्ष में प्रवेश की कॉलेज लेवल काउंसलिंग 16 जुलाई से प्रारंभ हो रही है। महाविद्यालय में गणित, जीव विज्ञान एवं कंप्यूटर साइंस इन तीन संकाय से बी.एस.सी. उच्च शिक्षा के नियमानुसार करवाई जाती है। विद्यार्थी गणित, भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, कंप्यूटर साइंस, वनस्पति शास्त्र, जीव विज्ञान आदि विषय मेजर में चुनकर स्नातक पाठ्यक्रम में प्रवेश ले सकते हैं। महाविद्यालय में शासन द्वारा संचालित विभिन्न छात्रवृति गांव की बेटी, मैधावी, संभल, प्रतिभा किरण, आवागमन भत्ता, पोस्ट मैट्रिक छात्रवृति आदि शासन के नियमानुसार प्रदान की जाती हैं। अंचल के सभी विद्यार्थियों को शासकीय महाविद्यालय कैलारस में स्नातक पाठ्यक्रम में प्रवेश लेकर शासन की विभिन्न योजनाओं का लाभ उठाना चाहिए। प्रवेश प्रक्रिया 16 जुलाई से 31 जुलाई 2025 तक चलेगी। केवल ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से आवेदन मान्य होंगे, समय-सीमा के बाद किसी भी आवेदन पर विचार नहीं किया जाएगा। प्रवेश शुल्क का भुगतान ऑनलाइन माध्यम से ही किया जाएगा। शासकीय महाविद्यालय कैलारस के समस्त इच्छुक विद्यार्थियों से अनुरोध है कि वे समय पर पंजीयन करें और दस्तावेजों के साथ उपस्थित होकर प्रवेश प्रक्रिया को पूर्ण करें।

अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष के उपलक्ष्य में शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में कार्यक्रम का आयोजन संपन्न

सहकारी समितियाँ एक बेहतर दुनियाँ का निर्माण करतीं हैं थीम पर निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई

मुरैना,कांस। अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष के उपलक्ष्य में शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन जिसका उद्देश्य ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में सहकारी संगठनों की भूमिका को सशक्त करना और आत्मनिर्भर भारत की दिशा में उन्हें एक सशक्त माध्यम बनाना है।कार्यक्रम का शुभारंभ संयुक्त आयुक्त सहकारिता सुश्री अनीता उइके द्वारा दीप प्रज्वलन से किया गया।इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता उप आयुक्त सहकारिता श्रीमती अनुभासूद ने की।इस अवसर पर सहकारी प्रशिक्षण संस्थान नौगांव के प्राचार्य श्री शिरीश पुरोहित, प्रशासक जिला सहकारी श्री भास्कर शर्मा, पूर्व प्रबंधक सहकारी श्री एसएन भदौरिया, प्रबंधक सहकारी श्री कमलेश पाठक, मुख्य प्रबंधक श्री बीएस जादौन, ऑडिट विभाग के श्री राकेश चौहान और पीजी कॉलेज के प्राचार्य श्री किशोर अरोड़ा सहित बड़ी संख्या में कॉलेज के छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।कार्यक्रम में सहकारिता मॉडल को ग्रामीण विकास, कृषि विपणन, दुग्ध उत्पादन, महिला सशक्तिकरण एवं रोजगार सृजन जैसे क्षेत्रों में प्रभावी रूप से लागू करने पर चर्चा हुई।नए सहकारी उद्यमों की स्थापना एवं मौजूदा संस्थाओं को डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म से जोड़ने के उपायों पर प्रकाश डाला गया।सहकारिता मंत्रालय की योजनाओं और लाभों की जानकारी साझा की गई, जिनका उद्देश्य ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करना है।मुख्य अतिथि सुश्री अनीता उइके ने अपने संबोधन में कहा कि अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 के बारे में छात्र अधिक से अधिक जागरूक हों, क्योंकि सहकारिता वर्तमान में रोजगार का सशक्त माध्यम है, आत्मनिर्भर भारत और विकसित भारत 2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहकारिता महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।उन्होंने कहा कि सहकारिता केवल एक आर्थिक ढाँचा नहीं है, बल्कि यह सामाजिक समरसता, भागीदारी और साझा समृद्धि का माध्यम है।कार्यक्रम की अध्यक्ष श्रीमती अनुभा सूद ने कहा कि %सहकारिता से समृद्धि% के माध्यम से हम आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार कर सकते हैं।छात्र भारत के भविष्य है, इस कार्यक्रम का उद्देश्य सहकारिता को जानना है। सहकारिता एक विचार है जिसमे एक व्यक्ति के मस्तिष्क में आए विचार से कई लोग जुड़ जाते है तो वह विचार सफल हो जाता है, यही सहकारिता है।कार्यक्रम का संचालन प्रोफेसर श्री दिलीप कटारे ने किया। सहकारिता वर्ष 2025 पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों को निबंध थीम और उत्तरपुस्तिका प्रदान की।

मुरैना में बदमाशों का आतंक : दुकानदार पर हमला, फायरिंग और पथराव; CCTV में कैद वारदात

मुरैना,कांस। सिटी कोतवाली थाना क्षेत्र के कब्रिस्तान रोड पर बदमाशों का आतंक एक बार फिर देखने को मिला है। बीती रात एक परचून दुकानदार पर आधा दर्जन से अधिक बदमाशों ने जानलेवा हमला कर दिया। बदमाशों ने मुफ्त में सामान न देने पर दुकान पर पथराव किया, कांच की बोतलें फेंकी और दहशत फैलाने के लिए हवा में फायरिंग भी की। यह पूरी घटना दुकान में लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है। जानकारी के अनुसार, जब दुकानदार ने बदमाशों को मुफ्त में सामान देने से मना किया, तो वे आग बबूला हो गए। उन्होंने तत्काल दुकान पर पथराव शुरू कर दिया और तोड़फोड़ की। इस दौरान बदमाशों ने कई कांच की बोतलें भी दुकान के भीतर फेंकी, जिससे दुकान में अफरा-तफरी मच गई। अपनी धौंस जमाने और इलाके में दहशत फैलाने के उद्देश्य से बदमाशों ने हवा में फायरिंग भी की। इस वारदात से इलाके में भय का माहौल है। पीड़ित दुकानदार ने तत्काल सिटी कोतवाली थाने में घटना की शिकायत दर्ज कराई है। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और सीसीटीवी फुटेज के आधार पर आरोपियों की पहचान करने में जुट गई है। स्थानीय निवासियों ने इस घटना पर गहरी चिंता व्यक्त की है और पुलिस से इलाके में गश्त बढ़ाने व सुरक्षा व्यवस्था को और मजबूत करने की मांग की है, ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो।

PM-KISAN: छोटे किसान बाजारू उधार के सहारे किस्त न मिलने से बढ़ी चिंता

मुरैना,कांस। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (PM-KISAN) की जून 2025 की किस्त न मिलने से छोटे किसान परेशानी में हैं। डेढ़-दो एकड़ के किसान, जो पहले इस योजना से खाद-बीज खरीदते थे, अब बाजार से ऊंचे ब्याज पर उधार लेने को मजबूर हैं। किसानों का कहना है कि फसल की करीब 95त्न आय इस उधारी में ही चली जाती है। बड़े किसानों की तरह उनके पास उपज भंडारण की क्षमता नहीं है। किसानों में यह भी चर्चा है कि क्या योजना बंद हो गई है, हालांकि सरकार ने कोई घोषणा नहीं की है। किसान मांग कर रहे हैं कि बोवनी से 15 दिन पहले ही अगली किस्त जारी की जाए। इस मुद्दे पर उपसंचालक कृषि से प्रतिक्रिया ली जानी चाहिए।

अमानक उर्वरक स्कंध का जिले में क्रय, विक्रय, भंडारण एवं स्थानान्तरण पर प्रतिबंध

मुरैना,कांस। उर्वरक गुण नियंत्रण आदेश 1985 की धारा 26 के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए कलेक्टर श्री अंकित अस्थाना के निर्देश पर उप संचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास एवं उर्वरक पंजीयन अधिकारी श्री एबी सड़ैया ने डीएमओ गोदाम मुरैना पर गुणवत्ता परीक्षण में अमानक उर्वरक पाया गया। इस पर उन्होंने अमानक उर्वरक स्कंध का जिले में क्रय, विक्रय, भंडारण एवं स्थानान्तरण पर प्रतिबंध लगाया है।

घास काटते में सर्प के काटने से युवक की मृत्यु

जोरा। निकटवर्ती नरेला गांव के पास स्थित बाबू का पूरा में रहने वाले एक युवक को घर के पास घास काटते समय सर्प के काटने से मृत्यु हो गई सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार बाबू पुरा निवासी म ही प सिंह गुर्जर अपने घर में 16 जुलाई की सुबह 6:00 बजे के लगभग घास काट रहा था कि अचानक सर्प ने हाथ में युवक को काट लिया सर्प के काटने के बाद परिजन तत्काल इलाज के लिए अस्पताल भी ले गई परिजनों का कहना है कि सर्प कोई बेहद जहरीला था जिससे काटने की थोड़ी देर बाद ही युवक की मृत्यु हो गई युवक अपने पीछे चार लड़की एक लड़का छोड़ गया है।

उत्तराखंड के लौह स्तंभ पंडित विद्याराम उप्रेती का निधन

मुरैना,कांस। मध्य प्रदेश उत्तराखंड के कुमाऊनी उप्रेती ब्राह्मण समाज के एक प्रमुख व्यक्तित्व पंडित विद्याराम उप्रेती का 70 वर्ष की आयु में हृदय समस्या के कारण निधन हो गया। मुरैना में उनका अंतिम संस्कार किया गया। पंडित उप्रेती का परिवार उत्तराखंड से आकर मुरैना के कैथरी गांव में बसा था और उनके पूर्वज वैद्य थे। वे स्वयं एक निडर और साहसी व्यक्ति थे। चंबल में दस्यु समस्या के दौरान, तत्कालीन कलेक्टर श्री अरविंद जोशी ने उन्हें शस्त्र लाइसेंस दिए थे, और पुलिस अक्सर उन्हें अपनी जर्मन राइफल के साथ सर्चिंग के लिए साथ ले जाती थी। समाज हित में हमेशा तत्पर रहने वाले पंडित विद्याराम उप्रेती के निधन को कुमाऊनी ब्राह्मण समाज संगठन मध्यप्रदेश ने एक अपूरणीय क्षति बताया है।

आसान नदी में गिरा ट्रैक्टर, चालक सुरक्षित

मुरैना,कांस। मुरैना तहसील की विजौली पंचायत के अंतर्गत आने वाले ग्राम भटपुरा में उस समय एक बड़ा हादसा टल गया, जब आसान नदी पार करते समय एक ट्रैक्टर नदी में गिर गया। गनीमत रही कि ट्रैक्टर चालक इस दुर्घटना में बाल-बाल बच गया। ग्रामीणों ने बताया कि आसान नदी इस समय अपने पूरे उफान पर है और इसका जलस्तर लगभग 10 फीट ऊपर चल रहा है। नदी के इस तरह भर जाने से गांव में बाढ़ जैसी स्थिति उत्पन्न होने का खतरा बढ़ गया है। ग्रामीणों ने प्रशासन से तत्काल मदद की गुहार लगाई है ताकि संभावित बाढ़ से निपटा जा सके और किसी भी तरह के बड़े नुकसान से बचा जा सके।

शासकीय जीन फील्ड हायर सेकेंडरी स्कूल का एसडीएम ने किया औचक निरीक्षण

कक्षा में छात्र-छात्राओं की कम उपस्थिति पर जताई नाराजगी, पूरे विधालय परिषर में भरा है पानी, कक्ष भी क्षतिग्रस्त

सबलगढ़। 400 से अधिक विद्यार्थी और 20 से अधिक अध्यापकों वाले शासकीय जीन फील्ड हायर सेकेंडरी स्कूल का आज एसडीएम अरविंद माहौर ने करीब 12~00 बजे औचक निरीक्षण किया निरीक्षण के दौरान पूरे ग्राउंड में कीचड़ और पानी मिला कक्षा में उपस्थित छात्र-छात्राओं की उपस्थिति बहुत कम मिली किसी कक्षा में आठ छात्र, किसी कक्षा में 62 में से 16 छात्र, तो किसी कक्षा में 10 छात्र मिले, कक्षाओं का निरीक्षण करने के उपरांत एसडीएम प्राचार्य कक्ष में पहुंचे वहां प्रत्येक शिक्षक से उन्होंने बात की विषय के बारे में जानकारी ली कौन सी कक्षा में क्या पढ़ाते हैं पूछा गया, तीन लैब असिस्टेंट यह नहीं बता पाए की लैब में बे क्या पढ़ाते हैं क्योंकि इस समय किसी भी शासकीय विद्यालय में लैब खोली ही नहीं जाती है लैब में ना कोई उपकरण है ना ही कोई रसायन है ना ही कोई पढ़ाने का सिस्टम है शासकीय विद्यालयों में विज्ञान लैब पूरी तरह खत्म हो चुकी है।

ऐसे में लैब असिस्टेंट क्या जवाब देते

लेब असिस्टेंट में से कोई क्लास में गणित पढ़ा रहा है ,कोई विज्ञान पढा रहा है तो कोई ऐसे भी सब्जेक्ट पढ़ा रहा है जो खुद नहीं पड़े जांच उपरांत एसडीएम ने प्राचार्य पी एल कश्यप को निर्देश दिए के वे पालक शिक्षक संघ की प्रत्येक माह विशेष बैठक बुलाए और उनको बच्चों को विद्यालय भेजने के लिए प्रेरित करें एसडीएम ने यह भी बताया कि विद्यालयीन समय लगने वाली कोचिंग क्लासों के खिलाफ जांच उपरांत कार्रवाई की जाएगी ताकि विद्यालय में छात्र-छात्राओं की उपस्थिति बढ़ सके खास बात यह रही कि एसडीएम माहौर ने शिक्षकों के पहनावे को लेकर भी कहा कि शिक्षक भी आइडियल होते हैं बच्चे उनसे प्रेरणा लेते हैं जैसे वह परिधान पहनेंगे जैसी स्थिति में विद्यालय आएंगे वैसा ही प्रभाव बच्चों पर पड़ेगा इसलिए आप अच्छे कपड़े पहन कर आया करें शूज़ पहन के आया करें स्लीपर चप्पल में आओगे अगर ओपन शर्ट में रहेंगे तो बच्चों पर भी क्या प्रभाव पड़ेगा विद्यालय की जर्जर स्थित को देखते हुए प्राचार्य को निर्देश दिये कि विद्यालय का जो भवन खराब है जो कमरा खराब है उसके डिस्मेंटल के लिए भी पत्र बनाएं और लोक निर्माण विभाग से उसका एस्टीमेट भी बनबाएं यहां यह बताना जरूरी है कि शहर के बीचो-बीच यह प्राचीन विद्यालय भवन करीब 75 वर्षों से अधिक पुराना है यह भवन कई जगह से क्षतिग्रस्त है छतों से पानी आता है फर्श नीचे की ओर धसक चुके हैं दरवाजे पुराने होने के कारण भी खराब हो चुके हैं कई जगह से प्लास्टर उखड़ चुका है खिड़कियां टूट चुकी है सात कक्ष हैं जिनमें 400 से अधिक विद्यार्थी दर्ज है और 20 से अधिक शिक्षक पदस्थ हैं जबकि विद्यालय भवन में केवल 7 क्लास रूम ही हैं वंही विद्यालय में कोई बाबू भी नहीं है अध्यापक ही लिपिक का कार्य कर रहे हैं ऐसे में बच्चों को कौन पढ़ायेगा जबकि विद्यालय के प्राचार्य द्वारा और शिक्षकों द्वारा बताया गया था कि प्रत्येक व्यक्ति क्लास लेता है अब यह कैसे संभव है कि केवल 7 कक्ष पढ़ने वाले 400 विद्यार्थी और 20 से अधिक टीचर एसडीएम माहौर द्वारा प्राचार्य से कहा गया कि पिछ्ले सत्र में आपने क्या क्या कार्य विद्यालय में कराए हैं पूरी प्रमाणित जानकारी मेरे ऑफिस भिजवाएं एसडीएम अरविंद माहौर का कहना है कि विद्यालय में छात्रों की उपस्थिति बढ़ाने शैक्षणिक गुणवत्ता बढ़ाने और विद्यालय का ऐतिहासिक महत्व कायम रखने के लिए प्रयास किए जाएंगे भवन काफी पुराना है इसके बारे में उच्च स्तर पर चर्चा भी की जाएगी जरूरी कार्यों के लिए प्राचार्य को निर्देश दिए हैं।

महासुख का पुरा में युवक ने फांसी लगाकर जान दी, ग्वालियर से दिन में लौटा था नेपाल सिंह तोमर, रात में पेड़ पर लटका मिला शव

अम्बाह। नगर के पास स्थित महासुख का पुरा गांव में बुधवार रात एक युवक ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। मृतक की पहचान नेपाल सिंह तोमर के रूप में हुई है, जो बुधवार को ही ग्वालियर से वापस लौटा था। गांव की महिलाओं ने गुरुवार सुबह शौच के लिए जाते समय शव पेड़ से लटका देखा और शोर मचाया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने मौके का निरीक्षण कर शव को नीचे उतरवाया और मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। परिजनों के अनुसार नेपाल सिंह सामान्य रूप से व्यवहार कर रहा था, लेकिन आत्महत्या के कारणों का अभी तक पता नहीं चल सका है। पुलिस पोस्टमार्टम रिपोर्ट और मोबाइल कॉल डिटेल के आधार पर मामले की तहकीकात कर रही है।

तोमर की पहल पर बानमोर में रुकेगी लक्ष्मीबाई एक्सप्रेस, यात्रियों को मिलेगी बड़ी सुविधा

बानमोर। मुरैना-श्योपुर लोकसभा क्षेत्र के सांसद शिवमंगल सिंह तोमर की पहल पर अब लक्ष्मीबाई ॠषिकेश उज्जैन एक्सप्रेस (गाड़ी संख्या 14309/14318) का स्टॉपेज बानमोर रेलवे स्टेशन पर भी होगा। यह निर्णय रेल मंत्रालय द्वारा सांसद की मांग को स्वीकार करते हुए लिया गया है, जिससे क्षेत्र के हजारों यात्रियों को आवागमन में बड़ी सुविधा मिलेगी। सांसद शिवमंगल सिंह तोमर ने केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव को 23 जून 2025 को पत्र क्रमांक MP/MORENA/2025/659 के माध्यम से बानमोर रेलवे स्टेशन पर कुछ ट्रेनों के स्टॉपेज की मांग की थी, जिसमें लक्ष्मीबाई ॠषिकेश उज्जैन एक्सप्रेस भी शामिल थी। उन्होंने अपने पत्र में क्षेत्र के निवासियों की लंबे समय से चली आ रही इस मांग पर विचार करने का अनुरोध किया था। रेल मंत्रालय ने सांसद की इस मांग पर त्वरित कार्रवाई करते हुए पत्र क्रमांक No. Optg/Stoppage/Part-16A/NCR/2025 दिनांक 16 जुलाई 2025 को ट्रेन संख्या 14309/10 और 14317/18 के बानमोर में ठहराव को स्वीकृति प्रदान कर दी है। इस संबंध में सांसद शिवमंगल सिंह तोमर ने रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह कदम क्षेत्रवासियों के लिए आवागमन की दृष्टि से लाभकारी होगा। उन्होंने विश्वास जताया कि बानमोर में इस महत्वपूर्ण ट्रेन के ठहराव से स्थानीय लोगों, व्यापारियों और छात्रों को विशेष रूप से लाभ मिलेगा। इस निर्णय से बानमोर और आसपास के क्षेत्रों के लोगों को उज्जैन और ॠषिकेश जैसे महत्वपूर्ण धार्मिक एवं पर्यटन स्थलों तक पहुंचने में आसानी होगी, साथ ही स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी बढ़ावा मिलेगा।

म.प्र. में पीपीपी मोड पर फुटबाल एक्सीलेंस सेंटर, स्पोर्ट्स इन्फ्रास्ट्रक्चर और स्पेनिश कोचिंग आधारित प्रारंभ होंगे यूथ ट्रेनिंग प्रोग्राम : मुख्यमंत्री

मैड्रिड से मध्यप्रदेश तक खेल से खुली निवेश की नई राह

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने किया LaLiga मुख्यालय का भ्रमण

भोपाल कांस

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अपनी स्पेन यात्रा के पहले दिन की शुरूआत मैड्रिड स्थित विश्व प्रसिद्ध LaLiga मुख्यालय के भ्रमण से की और वरिष्ठ अधिकारियों से भेंट कर खेल, युवा सशक्तिकरण और निवेश सहयोग पर केंद्रित संवाद किया। उन्होंने कहा कि LaLiga की खेल विशेषज्ञता और वैश्विक पहुँच का लाभ मध्यप्रदेश के युवाओं तक पहुँचना चाहिए। यह यात्रा सिर्फ एक औपचारिक दौरा नहीं, बल्कि खेल के क्षेत्र में नवाचार, सामाजिक समावेशन और अंतरराष्ट्रीय साझेदारी की दिशा में प्रदेश के दृढ़ संकल्प का प्रतीक है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने LaLiga के पदाधिकारी और तकनीकी निदेशकों के समक्ष प्रस्ताव रखा कि मध्यप्रदेश में पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप (PPP) मॉडल पर फुटबॉल एक्सीलेंस सेंटर, स्पोर्ट्स इंफ्रास्ट्रक्चर अपग्रेडेशन और स्पेनिश कोचिंग आधारित यूथ ट्रेनिंग प्रोग्राम प्रारंभ किए जाएँ। उन्होंने यह भी कहा कि LaLiga के साथ यह साझेदारी केवल खेलों तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि यह प्रदेश में रोजगार सृजन, सामाजिक भागीदारी, अंतरराष्ट्रीय ब्रांडिंग और सांस्कृतिक पर्यटन को नई दिशा दे सकती है।

LaLiga मैचों में होगी म.प्र. की ब्राडिंग

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सुझाव दिया कि LaLiga मैचों के दौरान डिजिटल और ग्राउंड को-ब्रांडिंग अभियानों के माध्यम से मध्यप्रदेश की सांस्कृतिक विविधता, वन्यजीव, विरासत स्थलों और पर्यटन अवसरों का स्पेन और यूरोप के व्यापक दर्शकों के बीच प्रभावी प्रचार किया जा सकता है। इससे न केवल पर्यटन बल्कि स्पोर्ट्स टूरिज्म, फिटनेस, मीडिया ब्रॉडकास्टिंग और स्पोर्ट्स टेक जैसे सेक्टर्स में विदेशी निवेश आकर्षित करने की संभावनाएँ मजबूत होंगी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मध्यप्रदेश की 18 सेक्टर-विशिष्ट औद्योगिक नीतियों और 'स्टार्ट योर बिजनेस इन 30 डेज़' जैसी दूरदर्शी पहलों का उल्लेख करते हुए LaLiga के साथ जुड़े वैश्विक निवेशकों को प्रदेश में निवेश के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश अब भारत ही नहीं, बल्कि वैश्विक साझेदारियों के लिए एक भरोसेमंद और अनुकूल डेस्टिनेशन बनकर उभर रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने युवाओं के कौशल विकास, फुटबॉल अकैडमीज़ के ज़रिये प्रतिभा पहचान, और सामुदायिक भागीदारी जैसे क्षेत्रों में स्स्क्षद्दद्दु की दीर्घकालिक विशेषज्ञता और भारत में उसकी सक्रियता की सराहना करते हुए कहा कि मध्यप्रदेश इस सहयोग के माध्यम से खेल को सामाजिक विकास का सशक्त माध्यम बनाएगा।

LaLiga और मध्यप्रदेश: भविष्य के साझेदार

LaLiga, स्पेन की प्रमुख पेशेवर फुटबॉल लीग, न केवल स्पोर्टिंग उत्कृष्टता का प्रतीक है, बल्कि यह वैश्विक स्तर पर युवाओं के लिए प्रशिक्षण, तकनीकी सहयोग और ब्रांड विस्तार का भी एक प्रभावशाली मंच है। भारत में LaLiga की सक्रियता, विशेषकर LaLiga Football Schools जैसी पहल, यह दर्शाती हैं कि स्पेनिश फुटबॉल का भारतीय युवाओं से गहरा संबंध बन चुका है। अब यह संबंध मध्यप्रदेश जैसे संभावनाशील राज्य के लिए नए अवसरों का द्वार खोल सकता है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव से मैड्रिड में श्री बेनीतेज़ ने की सौजन्य भेंट

आपसी सहयोग और निवेश संभावनाओं पर हुई चर्चा

भोपाल कांस

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने चार दिवसीय आधिकारिक स्पेन प्रवास के पहले दिन मैड्रिड में स्पेन के विदेश मामलों, यूरोपीय संघ और सहयोग मंत्रालय के उप महानिदेशक (दक्षिण एशिया) श्री एमिलियो कोंत्रेरास बेनीतेज़ से सौजन्य भेंट की।

बैठक के दौरान भारत और स्पेन के मध्य आपसी सहयोग, निवेश संभावनाओं तथा विभिन्न क्षेत्रों में रणनीतिक भागीदारी पर विस्तृत चर्चा हुई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मध्यप्रदेश की औद्योगिक क्षमताओं, निवेश-अनुकूल वातावरण, पर्यटन, कृषि, फार्मा, टेक्सटाइल, खाद्य प्रसंस्करण जैसे क्षेत्रों में उपलब्ध अवसरों की जानकारी दी।

श्री बेनीतेज़ ने मध्यप्रदेश के साथ सहयोग को लेकर सकारात्मक रुख जताते हुए भविष्य में आपसी हित के क्षेत्रों में साझेदारी की संभावनाओं को आगे बढ़ाने पर सहमति व्यक्त की।

न्याय की भावना से ग्रामीण विकास की जिम्मेदारी उठाएं पंचायत प्रतिनिधि: श्री पटेल

भोपाल कांस

पंचायत एवं ग्रामीण विकास श्री मंत्री प्रहलाद सिंह पटेल ने कहा कि ग्रामीण विकास एक बड़ी जिम्मेदारी है, जिसे पंचायत प्रतिनिधियों को नियत और न्याय की भावना से स्वीकार करना होगा। मंत्री श्री पटेल धार में आयोजित पंचायत प्रतिनिधि सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। मंत्री श्री पटेल ने बताया कि सांसद रहते हुए उन्होंने सदैव कृषि और ग्रामीण विकास विषयक संसदीय समितियों में रहकर देश भर में इन विषयों को गहराई से समझने का प्रयास किया। प्रदेश में मंत्री के रूप में उन्हें इन नीतियों को लागू करने का अवसर मिला है। उन्होंने पंचायत प्रतिनिधियों से आग्रह किया कि अपने क्षेत्रों में चल रहे विकास कार्यों, वृक्षारोपण और योजनाओं का रिकॉर्ड पारदर्शिता से रखें।

एक पेड़ माँ के नाम अभियान का आह्वान

मंत्री श्री पटेल ने कहा कि मध्यप्रदेश नदियों का मायका है, लेकिन जल संकट की आहट को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। जल संरक्षण के लिये वृक्षारोपण ही सबसे स्थायी उपाय है। उन्होंने एक पेड़ माँ के नाम अभियान के तहत व्यापक पौधारोपण का आहवान किया और कहा कि जो पौधा आप लगाते हैं, उसकी देखभाल भी आपकी व्यक्तिगत जवाबदेही है। उन्होंने कहा कि वृक्षारोपण अभियान 2025 में महिला स्व-सहायता समूहों की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित की गई है, जिससे पर्यावरण संरक्षण के साथ महिला सशक्तिकरण और आजीविका संवर्धन को भी बल मिलेगा। पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री पटेल ने कहा कि पुराने, जीर्ण-शीर्ण पंचायत भवनों को तोड़कर 48 लाख और 37 लाख रुपये की लागत से नए भवनों की मंजूरी दी गई है। कोई भी पंचायत अब भवन विहीन नहीं रहेगी।

सेवानिवृत्ति के सातवें दिन पेंशन पेमेंट आदेश जारी

इन्दौर कांस

शासकीय सांदीपनि अहिल्याश्रम कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय क्रमांक- 2 से 30 जून 2025 को सेवानिवृत्त हुई शिक्षिका श्रीमती ज्योति मालवीय को सेवानिवृत्ति के सातवें दिन संभागीय पेंशन कार्यालय ने पेंशन अदायगी आदेश (पीपीओ) जारी कर दिया। विद्यालय के प्राचार्य श्री दीपक हलवे ने बताया कि श्रीमती मालवीय को उनके स्वत्वों क्रमशः जीपीएफ, बीमा, अर्जित अवकाश नगदीकरण सहित समस्त स्वत्वों का भुगतान उनके बैंक खाते में रिकार्ड अवधि में विद्यालय द्वारा जमा करवाया जा चुका है। विद्यालय से विगत एक वर्ष में सेवानिवृत्त श्री शशिभूषण शुक्ला, श्री विजय शर्मा, श्रीमती मीना जैन, श्री गंगाप्रसाद प्रजापति के समस्त स्वत्वों का भुगतान समय पर किया जाकर संकुल स्तर पर एक भी पेंशन प्रकरण लंबित नहीं है।

उद्योगों के विस्तार एवं कार्य पद्धति में सुधार के लिए हुई कार्यशाला उद्योग विस्तार और नीतिगत लाभों पर हुआ मंथन

इन्दौर कांस

इंदौर में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (एमएसएमई) विभाग द्वारा उद्योगों के विस्तार एवं कार्य पद्धति में सुधार को लेकर कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम राइजिंग एंड एक्सीलरेटिंग एमएसएमई परफॉर्मेंस (RAMP) योजना के अंतर्गत लघु उद्योग भारती के सहयोग से वल्लभ नगर स्थित राघवम कैफे रेस्टोरेंट में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में मुख्य रूप से सूक्ष्म, लघु, मध्यम उद्यम विभाग के संयुक्त निदेशक श्री एस.एस. मंडलोई और जिला व्यापार एवं उद्योग केंद्र के महाप्रबंधक श्री स्वप्निल गर्ग मौजूद रहे। इनके साथ लघु उद्योग भारती के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष श्री महेश गुप्ता, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य श्री शिवनारायण शर्मा, श्री विनीत जैन, एवं मालवांचल क्षेत्र के उपाध्यक्ष श्री कन्हैयालाल खत्री सहित बड़ी संख्या में लघु उद्योग भारती से जुड़े उद्यमी, पदाधिकारी एवं महिला प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

'नशे से दूरी - है जरूरी' अभियान के तहत जन-जागरूकता रैली तथा जन संवाद का आयोजन

स्कूलों, कॉलेजों तथा अन्य सार्वजनिक स्थानों पर किए गए आयोजन छात्र-छात्राओं तथा आमजनों के नशे के खिलाफ़ किया गया अवैयर

भोपाल कांस

पुलिस मुख्यालय के निर्देशानुसार नशे से दूरी- है जरूरी अभियान के तहत आज को नगरीय पुलिस भोपाल के समस्त थाना क्षेत्रों में ज़न जागरूकता रैली एवं जन संवाद का आयोजन किया गया, जिसमें छात्र छात्राएं, नगर रक्षा समिति तथा आमजन सम्मिलित रहे। संवाद के दौरान थाना प्रभारी एवं स्टॉफ द्वारा नशे से होने वाले दुष्परिणामों से अवगत कराया गया। नशे के खिलाफ अभियान में सहभागिता देने तथा नशे से अपने परिवार रिश्तेदारों को जागरूक करने हेतु आमजनों को समझाइए दी गई, नारे लगाए गए, साथ ही नशे के खिलाफ शपथ दिलाई गई। अभियान के तहत बुधवार को थाना शाहजहांनाबाद क्षेत्र अंतर्गत खालसा हायर सेकन्ड्री स्कूल रामनगर स्कूल की प्राचार्या कवलजीत सिंह कौर एवं स्कूल के शिक्षक की उपस्थिति में सहायक पुलिस आयुक्त अनुभाग शाहजहाँनाबाद, भोपाल श्री अनिल बाजपेई, थाना प्रभारी उमेश पाल सिंह चौहान, उनि0.बाना सिंह पवार, प्र.आर.3135 राजेश भारती द्वारा नशा मुक्त अभियान के अंतर्गत कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें करीब 300 छात्र/छात्राये उपस्थित रहे है, कार्यक्रम के दौरान छात्र/छात्राओ/अन्य लोगो को नशे से दूरी है जरूरी के बारे में बताया गया तथा नशे से होने वाली समस्याओं से अवगत कराया गया है। उक्त अलभयान को छात्र/छात्रायो एवं शिक्षको द्वारा अभियान की सराहना की गई।

जिला न्यायालय इंदौर में आधार कैंप आयोजित- 70 से अधिक पंजीयन पूर्ण

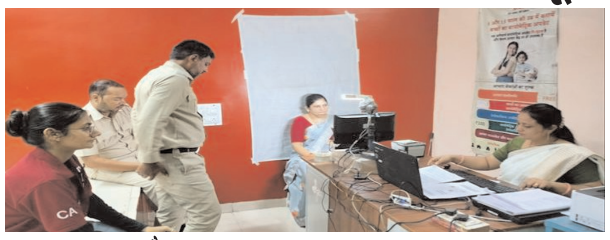

इन्दौर

प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री अजय श्रीवास्तव तथा कलेक्टर श्री आशीष सिंह के निर्देशानुसार जिला एवं सत्र न्यायालय एवं तहसील न्यायालयों में कार्यरत अधिकारियों/ कर्मचारियों की सुविधा हेतु दो दिवसीय आधार पंजीयन कैंप का आयोजन किया गया। यह शिविर जिला ई-गवर्नेंस सोसायटी द्वारा 15 एवं 16 जुलाई 2025 को जिला न्यायालय इंदौर (नई बिल्डिंग कॉन्फ्रेंस हॉल) में आयोजित किया गया। कैंप में आधार सुपरवाइजर श्रीमती सपना मावर एवं श्री नितिन द्वारा अधिकारियों व कर्मचारियों के 70 से अधिक आधार पंजीयन किए गए।

इस अवसर पर जिला ई-गवर्नेंस प्रबंधक श्री अतुल दुबे ने बताया कि शासकीय अधिकारियों व कर्मचारियों को डिजिटल सेवाओं का लाभ सरलता से दिलाने हेतु इस प्रकार के कैंप समय-समय पर आयोजित किए जाते हैं। भविष्य में भी ऐसे शिविर आयोजित कर अधिकारियों, कर्मचारियों एवं आम नागरिकों को आधार से जुड़ी सेवाएं प्रदान की जाएंगी।यह पहल डिजिटल इंडिया अभियान की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम है, जिससे शासकीय कार्यों में पारदर्शिता और सुलभता सुनिश्चित होगी।

रोजगार की पढ़ाई चले आईटीआई आईटीआई चले अभियान

विदिशा

विदिशा जिले की समस्त शासकीय आईटीआई में प्रवेश सत्र 2025-26 हेतु प्रवेश प्रक्रिया चालू है। तृतीय चरण के प्रवेश हेतु विभाग द्वारा मेरिट लिस्ट जारी कर दी गई है। प्रवेश कार्य 16 जुलाई से 19 जुलाई 2025 तक जारी रहेंगे। आईटीआई के प्रभारी प्राचार्य श्री मनोज दुबे ने बताया की जिले की समस्त शासकीय आईटीआई में 35 प्रतिशत सीटें महिलाओं के लिए अआरक्षित की गई है, जिससे बेटियों की आईटीआई के प्रति रुचि बढ़े एवं बेटियां भी कौशल प्रशिक्षण प्राप्त कर रोजगार प्राप्त कर सकें। इच्छुक आवेदक विभाग की वेबसाइट https://mpiticounseling.co.in पर जाकर पंजीयन एवं चॉइस फिलिंग कर सकते हैं। विदिशा जिले की सात शासकीय आईटीआई क्रमशः विदिशा, गंजबासौदा, सिरोंज, लटेरी, ग्यारसपुर, नटेरन, एवं कुरवाई में कुल ट्रेडों में 1204 सीटें उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी हेतु शासकीय आईटीआई विदिशा के हेल्पडेस्क पर संपर्क कर सकते हैं। व्यवसाय वेल्डर, कारपेंटर, एवं सुईंग टेक्नॉलजी हेतु योग्यता 8वीं उत्तीर्ण है एवं शेष अन्य व्यवसायों हेतु योग्यता 10वीं उत्तीर्ण है।

मुख्यमंत्री जी के कुरवाई में प्रस्तावित दौरा कार्यक्रम की व्यवस्थाओं और तैयारियों का जायजा

कलेक्टर ने कुरवाई पहुंचकर की बैठक, दिए दिशा निर्देश

विदिशा कांस

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का कुरवाई विधानसभा क्षेत्र में प्रस्तावित दौरा कार्यक्रम के मद्देनजर किए जाने वाले प्रबंधो के परिपेक्ष में की जा रही तैयारियों का जायजा कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने कुरवाई में समीक्षा बैठक के माध्यम से लिया है। उन्होंने विभागीय अधिकारियों से कहा कि हितग्राहीमूलक योजनाओं से लाभान्वित होने वाले हितग्राही उक्त कार्यक्रम में अनिवार रूप से उपस्थित हो के पुख्ता प्रबंध सुनिश्चित किये जाएं। कलेक्टर श्री गुप्ता ने कहा कि मुख्यमंत्री जी द्वारा कार्यक्रम स्थल पर जिन निर्माण कार्यों का लोकार्पण शिलान्यास किया जाना है उन कार्यों की सूची तैयार की जाए और कार्यक्रम स्तर पर हितग्राहियों को हित लाभ वितरण के लिए विभागवार हितग्राही का चयन किया जाए। कार्यक्रम सुव्यवस्थित रूप से संपन्न हो इसके लिए किए जाने वाले प्रमुख प्रबंध तथा वैकल्पिक व्यवस्थाओं पर चर्चा कर निर्णय लिए गए हैं।

ज्वाइंट कलेक्टर द्वारा दस्तक अभियान प्रशिक्षण कार्य का निरीक्षण

अभियान के दौरान एक लाख 70 हजार 921 बच्चों की जांच कर किया जाएगा उचित प्रबंधन

विदिशा कांस

संयुक्त कलेक्टर श्रीमती मोहिनी शर्मा ने आज विदिशा के होटल ग्रेंड अशोका में आयोजित दस्तक अभियान के प्रथम चरण सह स्टॉप डायरिया कैंपेन का निरीक्षण कर प्रशिक्षण संबंधी कार्यों को संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश दिए हैं। उन्होंने इस दौरान प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर मार्गदर्शन भी प्रदान किया है।

श्योपुर की उभरती खेल प्रतिभाएँ, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंच पर परचम लहरा रहे खिलाड़ी

भोपाल कांस

श्योपुर जिले की प्रतिभाएँ अब सीमित दायरे में नहीं, बल्कि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पटल पर अपना लोहा मनवा रही हैं। खेल के क्षेत्र में लगातार नई ऊँचाइयों को छूते हुए श्योपुर जिले के खिलाड़ी जिले का नाम रोशन कर रहे हैं। हाल ही में दो खिलाड़ियों मिक्स मार्शल आर्ट में मोहम्मद हुसैन और कुश्ती में सुखमन कौर ने अपनी उपलब्धियों से पूरे जिले को गौरवान्वित किया है।

गत 12 और 13 जुलाई को दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय मिक्स मार्शल आर्ट चैंपियनशिप में श्योपुर के मोहम्मद हुसैन ने 65 किलोग्राम भार वर्ग में शानदार प्रदर्शन करते हुए गोल्ड मैडल हासिल किया। देशभर के 18 राज्यों से आए प्रतिभागियों में हुसैन ने विभिन्न मुकाबलों में अपने प्रतिद्वंद्वियों को हराते हुए फाइनल में जगह बनाई और महाराष्ट्र के खिलाड़ी को पराजित कर स्वर्ण पदक जीता। मोहम्मद हुसैन ने बताया कि मिक्स मार्शल आर्ट एक तकनीक, ताकत और आंतरिक बल का खेल है और यह भारत में तेजी से लोकप्रिय हो रहा है।

श्योपुर की बेटी सुखमन कौर ने अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारत का परचम लहराया। किर्गिस्तान में आयोजित एशियन अंडर-15 कुश्ती चैम्पियनशिप में उन्होंने मंगोलिया और कजाकिस्तान की खिलाड़ियों को 10-0 के अंतर से हराकर काँस्य पदक हासिल किया।

सुखमन की इस जीत पर श्योपुर कलेक्टर श्री अर्पित वर्मा ने कलेक्ट्रेट कार्यालय में उनका स्वागत और सम्मान किया। साथ ही उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। कलेक्टर ने एकलव्य अवॉर्ड के लिए सुखमन कौर का नाम अनुशंसा करने के लिए खेल अधिकारी को निर्देशित किया। इसके अंतर्गत दो लाख रुपये की पुरस्कार राशि दी जाती है।

स्वत्वाधिकारी,मुद्रक,प्रकाशक रामविलास शर्मा द्वारा चम्बल प्रिंटिंग प्रेस इण्डस्ट्रीज एरिया बानमोर से मुद्रित व एस 12 द्वितीय तल रायल प्लाजा पुराने हाईकोर्ट के सामने ग्वालियर से प्रकाशित । प्रधान संपादक रामविलास शर्मा मोबा.- 9329077393
email-chambalsurkhi@yahoo.com आर.एन.आई. पंजीयन नं MPHIN/2007/20705 सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र मुरैना रहेगा। कानूनी सलाहकार युवराज कुलश्रेष्ठ एडवोकेट मो.9229842150 फोन- (07532)- 225779,9827679954